Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

एक नर पंडित प्रवीण,
एकण ने अखर ना चढ़े।

एक आदमी पण्डित और प्रवीण है। एक ऐसा है जो अक्षर भी याद नहीं कर पाता।
–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 49 • 07 सितम्बर - 13 सितम्बर 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 05-09-2026 • पेज 24 ₹ 10 रुपये

स्व को जानना ही है सच्चा स्वाध्याय, ज्ञानावरणीय कर्म क्षय का यही है उपाय : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

राजा, राणा, छत्रपति, हाथी के असवार... मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 24

Address Here

ज्ञानशाला से महके संस्कार, दीक्षा की घोषणा से हरषाया संसार!

भौतिकता से बढ़ेंगी समस्याएं, बच्चों को दें आध्यात्मिकता का संतुलन : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य आचार्यश्री ने मुमुक्षु जहान व मुमुक्षु दिव्या की दीक्षा तिथि (18 जनवरी 2027) की घोषणा कर संघ को किया विभोर

लाडनूं।
30 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, जन-जन की आस्था के केंद्र, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में सुधर्मा सभा में अत्यंत गौरवमयी, भक्तिमय और ऐतिहासिक रहा। एक ओर जहाँ ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर बच्चों की भावपूर्ण प्रस्तुतियों और दीक्षा की मंगल घोषणाओं से चतुर्विध धर्मसंघ भाव-विभोर हो उठा, वहीं पूज्य प्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'परिवर्तना से क्या मिलेगा' विषय पर आगमिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

कंठस्थ ज्ञान की महिमा और 'परिवर्तना' (चितारने) का महत्व :

१. कंठस्थ ज्ञान गृहस्थ के धन समान: पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि ज्ञान को कंठस्थ करना भी एक प्रकार की साधना व तपस्या है। जो ज्ञान याद हो जाता है, वह साधक की अपनी अमूल्य संपत्ति बन जाता है। जिस प्रकार गृहस्थ जेब में रखे धन का उपयोग बाज़ार में तुरंत कर सकता है, उसी प्रकार कंठस्थ ज्ञान का उपयोग साधु विहार व प्रवचनों में बिना किसी पुस्तक या डायरी के, घंटों धाराप्रवाह व्याख्यान देकर जन-कल्याण हेतु कर सकता है।

> ज्ञानशाला बच्चों में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक संस्कारों का विकास करने वाला सबसे उत्तम माध्यम है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

२. परिवर्तना से व्यंजन लब्धि और स्मृति की पुष्टि : याद किए गए ज्ञान की देखभाल और रखरखाव का सही तरीका है— 'परिवर्तना' (पुनरावृत्ति या चितारना)। शास्त्रों के अनुसार, परिवर्तना से व्यंजन लब्धि उत्पन्न होती है।

(शेष पेज 20 पर)

स्वाध्याय की राह : जब संकल्प ने नींद को हराया...

1. नींद पर विजय का उपाय : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जब भारमल जी मुनि अवस्था में थे, तब स्वाध्याय और चितारना करते समय उन्हें अक्सर नींद आ जाती थी। अपनी इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने अपने गुरु आचार्य श्री भिक्षु से मार्गदर्शन मांगा।

2. गुरु का अनूठा व व्यावहारिक मार्गदर्शन : आचार्य श्री भिक्षु ने उन्हें सुझाव दिया कि जब भी नींद का अनुभव हो, तो वे खड़े होकर चितारना (पाठ का अभ्यास) करें। इस पर भारमल जी ने शंका व्यक्त की—'यदि खड़े-खड़े नींद आ गई और मैं गिर पड़ा तो?' तब गुरुदेव ने अत्यंत व्यावहारिक उपाय बताते हुए कहा—'तुम दीवार के कोने (खूणे) में जाकर खड़े हो जाया करो।'

3. निष्कर्ष व सीख : दीवार के कोने में खड़े होने से शरीर को दो तरफ से सहारा मिल जाता है, जिससे गिरने का भय समाप्त हो जाता है और शारीरिक थकान भी कम लगती है। इस विधि का पालन करके उन्होंने अपनी निद्रा पर विजय प्राप्त की और एकाग्रता के साथ अपना अध्ययन जारी रखा।

4. प्रेरणा : यह प्रसंग हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों या साधना पथ में आने वाले विघ्नों के बीच यदि दृढ़ संकल्प और सद्गुरु का सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो किसी भी लक्ष्य को बिना रुके प्राप्त किया जा सकता है।

श्रुत की आराधना ही है जिनेश्वर की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री ने 'वाचना से क्या मिलेगा?' पर दिया बोध; दूसरों को ज्ञान देना और अध्यापन कराना महान निर्जरा

लाडनूं।
28 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में निर्धारित विषय 'वाचना से क्या मिलेगा?' पर आगम आधारित पावन देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को ज्ञान व साधना से आप्लावित किया।

वाचना का अर्थ, श्रुत आराधना और निर्जरा की महिमा :

> पाप कर्मों के बंधन और बुराइयों से अपनी आत्मा को बचाना ही संसार की सबसे बड़ी रक्षा है। रक्षाबंधन का यही सच्चा आध्यात्मिक संदेश है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. स्वाध्याय का मुख्य अंग वाचना : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि स्वाध्याय के प्रसिद्ध पांच प्रकारों में पहला प्रकार वाचना है। वाचना का अर्थ है शिष्यों को ज्ञान देना और अध्यापन कराना।

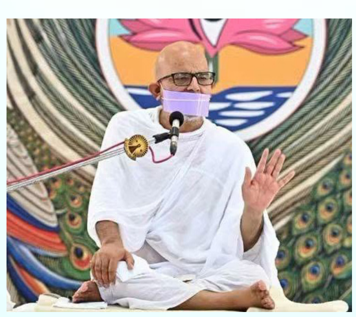

२. महान तप व निर्जरा का माध्यम : स्वाध्याय को सबसे बड़ा तप माना गया है, जिसके समान दूसरा कोई तप नहीं है। वाचना स्वाध्याय का ही अंग है। किसी को ज्ञान देने व पढ़ाने से साधक शुभ योग में रहता है, जिससे ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय और महान निर्जरा होती है।

३. श्रुत आराधना यानी जिनेश्वर की आराधना: वाचना करते समय साधक श्रुत की अनाशातना में रहता है, जो श्रुत का बहुत बड़ा सम्मान है। जो श्रुत की आराधना करते हैं, वे वस्तुतः जिनेश्वर भगवान की आराधना करते हैं।

(शेष पेज 20 पर)

संतों की उदारता: दो नहीं, हम पांच हैं...

1. समस्या और संकोच : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि एक बार मुनि श्री संगीत कुमार जी स्वामी के स्वास्थ्य में कुछ समस्या थी और उन्हें इलाज या ऑपरेशन की आवश्यकता थी। उस समय उनके समूह (सिंघाड़े) में केवल दो ही संत थे, इसलिए वे इलाज करवाने में संभवतः संकोच कर रहे थे और गुरुदेव को अर्ज करने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

2. उदारता और आत्मीय सम्बल : तब मुनि श्री डूंगरमल जी स्वामी ने अत्यंत उदारता दिखाते हुए उनसे कहा कि, 'दो ही क्यों हो? हम तीन हैं और आप दो हैं, हम सब मिलकर पांच हो जाएंगे। आप बिना किसी देरी के अपना इलाज करवाएं, हम आपका पूरा सहयोग और सेवा करेंगे।'

3. पावन प्रेरणा और संदेश : इस उदाहरण के माध्यम से आचार्य जी ने यह संदेश दिया कि हमें किसी औपचारिक नियुक्ति या आदेश की प्रतीक्षा किए बिना, जब भी हमारे संघ के साधु साध्वियों को सेवा की आवश्यकता हो, तो स्वयं आगे बढ़कर सहयोग और सेवा करनी चाहिए।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

स्व को जानना ही है सच्चा स्वाध्याय, ज्ञानावरणीय कर्म क्षय का यही है उपाय : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य आचार्यश्री का 'स्वाध्याय से क्या मिलेगा?' पर आगमिक बोध; आचार्य श्री तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी के साधना योगों का दिया प्रेरक उदाहरण

लाडनूं।
26 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती की सुधर्मा सभा में उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को 'स्वाध्याय से क्या मिलेगा?' विषय पर पावन अमृत देशना प्रदान की।

स्वाध्याय का अर्थ, मर्यादा और ज्ञान का क्षेत्र :

१. दो प्रकार से संधि-विच्छेद : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि स्वाध्याय का पहला अर्थ है 'स्व+अध्याय' यानी अपनी आत्मा के बारे में जानना। दूसरा अर्थ है 'सु+आ+अध्याय' अर्थात् भली-भांति, मर्यादापूर्वक और समग्र रूप से अध्ययन करना।

२. स्वाध्याय की मर्यादा : स्वाध्याय करते समय काल-अकाल की मर्यादा का ध्यान रखें। मन इधर-उधर न भटके, दृष्टि एकाग्र रहे और कक्षा में नियत समय पर पहुँचना चाहिए।

> अपनी आत्मा के बारे में जानना और मर्यादापूर्वक एकाग्र होकर अध्ययन करना ही सच्चा स्वाध्याय है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

३. श्रुत धर्म व उपाध्याय पद : आगमों का अध्ययन करना स्वाध्याय है, जो श्रुत धर्म और ज्ञान का क्षेत्र है। ज्ञान की दृष्टि से उपाध्याय महाराज स्वयं अध्ययन करने वाले और दूसरों को पढ़ाने वाले होते हैं तथा आचार्य श्री वाचना देते हैं। उपाध्याय जी को ज्ञान का प्रतीक माना जा सकता है।

ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय व बंधन के कारण :

१. कर्म क्षयोपशम और निर्जरा: स्वाध्याय से जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है। हर प्राणी में इसका न्यूनतम क्षयोपशम होता है, अन्यथा जीव अजीव बन जाए। क्षयोपशम की तरतमता के कारण ही किसी में तीक्ष्ण बुद्धि व स्मरण शक्ति होती है, तो किसी में ज्ञान का उतना

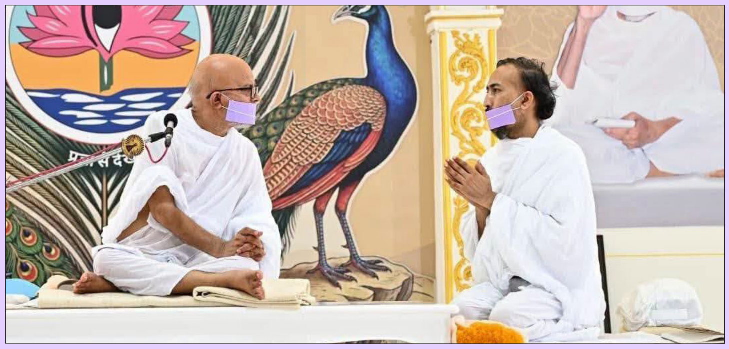

विकास नहीं हो पाता। स्वाध्याय से इस कर्म का निर्जरण होता है।

२. कर्म बंधन के ४ कारण : ज्ञानावरणीय कर्म बंधन से बचने हेतु सजगता जरूरी है। इसके ४ प्रमुख कारण हैं—

१. ज्ञान या ज्ञानियों की आशातना करना।
२. ज्ञान या ज्ञानी से द्वेष रखना।
३. ज्ञान प्राप्ति में बाधा (अंतराय) डालना।
४. उनसे प्रतिकूलता रखना। ज्ञान व ज्ञानी के प्रति सम्मान रखने से यह कर्म हल्का पड़ता है।

कर्म निर्जरा के ४ योग और गुरुदेवश्री के उदाहरण : निर्जरा के ४ योग:

साधु-साध्वियों व समणियों के लिए कर्म निर्जरा के चार मार्ग हैं—

१. स्वाध्याय योग : आगमों, ग्रंथों के स्वाध्याय, अध्यापन व चिंतन-मनन में समय लगाना।

२. सेवा योग : बीमार, वृद्ध व सेवा के अधिकारी संतों की सेवा और गोचरी-पानी का कार्य करना।

३. तपो योग : क्षमतानुसार अठाई, पखवाड़ा, मासखमण जैसी बड़ी तपस्याएं करना।

४. ध्यान-जप योग : लोगस्स, नवकार मंत्र जप व कायोत्सर्ग द्वारा निर्जरा करना।

योग का चयन व बदलाव : साधक अपनी क्षमता व रुचि के अनुसार एक योग को मुख्य और अन्य को गौण बनाकर साधना करें। उम्र या क्षमता के अनुसार इसमें बदलाव भी संभव है; जैसे युवावस्था में सेवा योग और बाद में जप-ध्यान योग अपनाया जा सकता है।

आचार्य प्रवर के प्रेरक उदाहरण : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन में 'स्वाध्याय योग' मुख्य था, जबकि आचार्य श्री तुलसी के जीवन में 'स्वाध्याय और सेवा योग' प्रधान था।

आचार्य श्री तुलसी का संघ-संचालन और आचार्य महाप्रज्ञजी की प्रज्ञा-साधना: पूज्य प्रवर के उद्बोधन से...

आचार्य श्री तुलसी: पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आचार्य श्री तुलसी का संस्कृत व्याकरण, साहित्य और तत्वज्ञान पर असाधारण अधिकार था। विशेष रूप से उल्लेख किया कि आचार्य तुलसी का राग-रागिनियों का ज्ञान और तेरापंथ के सिद्धांतों की व्याख्या करने की शैली अत्यंत विशिष्ट थी। उन्होंने हजारों गाथाएं कंठस्थ की थीं।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी : गुरुदेव ने फरमाया कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का ज्ञान के प्रति विशेष समर्पण था। उन्होंने मुनि जीवन में दशकों तक अध्ययन-अध्यापन और आगम के कार्यों में अपना समय नियोजित किया। उनकी प्रतिभा, प्रज्ञा और निरंतर परिश्रम के कारण उनका ज्ञान का विकास बहुत उच्च स्तर का था।

जीवन के योग और उदाहरण: पूज्य प्रवर ने फरमाया कि किस प्रकार आचार्य महाप्रज्ञ जी ने स्वाध्याय और प्रेक्षाध्यान को अपने जीवन का केंद्र बनाया, जबकि आचार्य तुलसी के जीवन में स्वाध्याय के साथ-साथ संघ संचालन और सेवा का भी अद्भुत समन्वय था।

मन सुमन रहे, संयम से जीवन सजे : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने दी पावन प्रेरणा: 'अशुभ से हटकर शुभ योग में रहे मन'

लाडनूं।
27 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में अपने श्रीमुख से आगम की ज्ञान गंगा प्रवाहित कर चतुर्विध धर्मसंघ को आप्लावित कर रहे हैं। जैन विश्व भारती की सुधर्मा सभा में निर्धारित विषय 'मन सुमन रहे' पर पावन देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि आज अनुशासन पर्व यानी चतुर्दशी की हाजरी का पावन दिन है।

साधु आचार में तीन गुप्तियाँ और मन की चंचलता :

१. तीन गुप्तियाँ व मन संरक्षण : साधु की आचार व्यवस्था में तीन गुप्तियों का विधान है— मनोगुप्ति, वाग्गुप्ति और कायगुप्ति। मनोगुप्ति का अर्थ है मन का संरक्षण रखना और मन को दुष्ट प्रवृत्ति में

> मन के वशीभूत न बनकर मन को अपने वश में रखना ही मनो गुप्ति की साधना है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

जाने से बचाना।

२. हिंसा का संकल्प व पाप दोष : यदि मन में कोई हिंसा आदि का संकल्प जग जाता है, तो वह भी पाप का हेतु है, वह हिंसा करना है। यदि हिंसा करने के लिए कुछ प्रयास भी कर लिया, तो यह भी हिंसा का दोष हो जाता है।

३. राग-द्वेष और मन का आवेग : मन में विभिन्न प्रकार के राग-द्वेषात्मक भाव, छलना, आवेश, अहंकार व लोभ के रूप में उभर सकते हैं। मन की चंचलता के पीछे भीतर का भाव जागृत होता है, जिससे राग-द्वेषयुक्त चंचलता पैदा होती है।

आगम में मन के ४ प्रकार, सावद्य-निरवद्य विवेक और मनो गुप्ति :

१. मन के ४ प्रकार : आगमकार ने मन को चार प्रकार का बताया है— १. सत्य मन, २. मृषा मन (अयथार्थ/गलत), ३. सत्य-मृषा मन (मिश्रित) और ४. असत्य-मृषा मन (व्यावहारिक)। मन में यथार्थ बात भी आ सकती है और अयथार्थ यानी गलत बात भी आ सकती है।

२. सावद्य से निरवद्य का विवेक: साधक को यह ध्यान देना चाहिए कि मन में सावद्य (पापयुक्त) क्या है और निरवद्य (पापरहित) क्या है। यदि मन की प्रवृत्ति सावद्य हो रही है, तो उसे रोकने की चेष्टा करनी चाहिए ताकि हमारा मन निरवद्य प्रवृत्ति में रहे।

३. मन से पार जाने की साधना : मन से पार चले जाना बहुत बड़ी साधना हो सकती है। हमारा यह प्रयास रहे कि मन अशुभ न रहे, मन सुमन रहे और मन शुभ योग में रहे।

४. मन को वशीभूत बनाना : हमें मन के वशीभूत नहीं बनना है, बल्कि मन को अपने वश में बनाना है। सामान्यतया मन को हमारे वश में रखने का प्रयास करना ही मनो गुप्ति की साधना है।

(शेष पेज 20 पर)

कष्टों से ऊपर गुरु आज्ञा: साध्वी मंगल प्रज्ञा जी का अनुशासन

साध्वी मंगल प्रज्ञा जी का प्रसंग : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने साध्वी मंगल प्रज्ञा जी के अनुशासन का उदाहरण दिया। अहमदाबाद में स्वास्थ्य संबंधी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, जब उन्होंने बालोतरा चतुर्मास के लिए विहार करने का निर्णय लिया और वहां पहुंच गईं, तो गुरुदेव ने इसे एक बहुत ही सराहनीय कार्य बताया।

पूज्य प्रवर ने इसे 'गुरु आज्ञा' और 'विवेक' का सुंदर उदाहरण माना, जहाँ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत कष्ट से ऊपर उठकर संघ की व्यवस्था को प्राथमिकता देता है।

'गुरु आज्ञा जहां बड़ी है,'
'बन पहरेदार खड़ी है'।
'आज्ञा बिना हिले क्यों पान,'
'मिला यह तेरापंथ महान'!!!!

शिक्षा: यह प्रसंग हमें सिखाता है कि अनुशासन और गुरु आज्ञा का पालन करने के लिए व्यक्ति को व्यक्तिगत कष्टों से ऊपर उठना पड़ता है। यह 'विवेक' का प्रतीक है कि व्यक्ति यह समझे कि कहां उसकी उपयोगिता अधिक है।

शेर की दृष्टि : समस्या की जड़ पर प्रहार

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने समस्या के मूल कारण को समझने का एक बहुत ही सुंदर दृष्टांत दिया है–

शेर और कुत्ते का उदाहरण : गुरुदेव ने समझाया कि यदि कोई व्यक्ति कुत्ते की तरफ एक ढेला (पत्थर) फेंकता है, तो कुत्ता उस पत्थर को ही देखने लगता है या उसे चाटने में उलझ जाता है। इसके विपरीत, यदि कोई शेर की तरफ बाण फेंकता है, तो शेर बाण की ओर ध्यान नहीं देता, बल्कि वह बाण फेंकने वाले व्यक्ति की ओर देखता है।

शिक्षा : यह दृष्टांत हमें यह सिखाता है कि अज्ञानी व्यक्ति केवल समस्या (ढेले) में ही उलझा रहता है, जबकि ज्ञानी पुरुष समस्या के मूल कारण या उसे पैदा करने वाले पर ध्यान केंद्रित करता है। जीवन में भी हमें छोटी-मोटी समस्याओं के बजाय उनके समाधान और मूल जड़ को समझने का प्रयास करना चाहिए।

युवाचार्यवर! चयन तुम्हारा, भाग्य खिला है आज हमारा।
महाश्रमण के अंतेवासी, बने संघ के शुभ्र सितारा॥

: श्रद्धाप्रणत :

खेमचंद-ललिता देवी
विदित-प्रीति
समकित-गीतिका
संवृति, जेनिका मुकीम

श्रीMATI GEMS & JEWELS
New Delhi

Vidit Jain & Co.
New Delhi

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

कोटि कोटि वंदन-अभिनंदन

अभिनंदन वंदन स्वीकारो
युवाचार्य 'महावीर'।
'महाश्रमण' करुणा से गण की,
चमक रही तकदीर।।

: श्रद्धाप्रणत :

'घुमक्कड़ संत' मुनिश्री पूनमचंदजी के संसारपक्षीय भ्राता
नेमचंदजी डागा परिवार
गंगाशहर-पंचकुला-चंडीगढ़

वंदन-अभिनंदन की घड़िया, पुलकित दशों दिशाएं।
युवाचार्य पद मनोनयन पर, जन-जन तुम्हें बधाएं।।

: श्रद्धाप्रणत :

'दृढ़ धर्मी' स्व. लाला झण्डू मल जी
'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' स्व. लाला तिलक राज जी
एवं स्व. गुणपाल जी जैन की पुण्य स्मृति में
ऊषा जैन
विशाल-संजोली, गौरव-सुरभि
तरुवी, हिती, सायेशा एवं तारुष जैन
पाटनी परिवार, जगराओं (पंजाब)

MAHAPRAGYA SCHOOL
Raikot Road, Jagraon-142026 PB

महाश्रमण प्रभु के पट्टधर तुम, गण की नव तकदीर हो।
युवाचार्य महावीर मुनि तुम, भिक्षु की तस्वीर हो।।

: श्रद्धाप्रणत :

'दृढ़ धर्मी' स्व. लाला झण्डू मल जी, स्व. लाला फूल चन्द जी
एवं स्व. रवि कुमार जी जैन की पुण्य स्मृति में
सिंधु जैन
रिपन-सांची, अंकुश-सुनैना
देवन्या, दिवांशी एवं देवांश जैन
पाटनी परिवार, जगराओं (पंजाब)

NEW MALERKOTLA SEED STORE
Nehru Market, Jagraon-142026 PB

आचार्य श्री ने दी पावन प्रेरणा: विद्यार्थी का परम धर्म है जिज्ञासा करना

जिज्ञासा से उपजेगा ज्ञान, प्रतिपृच्छना से मिटेगा अज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
29 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती की सुधर्मा सभा में निर्धारित विषय 'प्रतिपृच्छना से क्या मिलेगा?' पर आगम आधारित देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को ज्ञान व विवेक से आप्लावित किया।

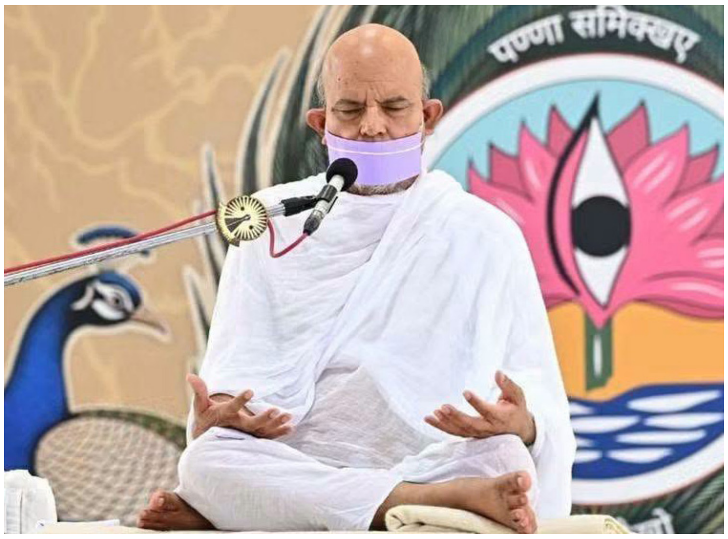

स्वाध्याय के अंग, विशुद्धि का अर्थ और कांक्षा मोहनीय कर्म का क्षय :

१. स्वाध्याय के अंग व विशुद्धि: पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि स्वाध्याय के पाँच प्रसिद्ध अंगों में पहला अंग 'वाचना' और दूसरा अंग 'पृच्छना' है। प्रतिप्रश्न (प्रतिपृच्छना) करने से सूत्र, अर्थ और तदुभय (दोनों) विशुद्ध बनते हैं। जब तक मन में शंका, संदेह और अस्पष्टता रहती है, तब तक विषय अशुद्ध रहता है। यहाँ विशुद्धि का सही अर्थ विषय की 'स्पष्टता' से है।

२. जिज्ञासा ही ज्ञान की जननी: प्रश्नकर्ता के प्रश्न करने और उत्तरदाता द्वारा योग्य उत्तर देने से संदेह दूर होता है। संस्कृत में जिज्ञासा को ज्ञान की जननी कहा गया है। जब व्यक्ति विषय पर ध्यान देता है और कुछ ग्रहण करता है, तभी मन में जिज्ञासा पैदा होती है। विद्यार्थी का परम धर्म ही जिज्ञासा करना है।

३. कर्म का विच्छेद व ज्ञान विशोधन : आगम में बताया गया है कि पूछने वाला प्रतिपृच्छना से कांक्षा मोहनीय कर्म का विच्छेद करता है। इससे ज्ञान का विशोधन होता है और ज्ञान पूरी तरह विशुद्ध व निर्मल बन जाता है।

दर्शनों की परीक्षा, आगमिक संवाद और राजा प्रदेशी का प्रसंग :

१. दर्शनों की परीक्षा व तर्क: दुनिया में अनेक दर्शन और संप्रदाय हैं। सामान्य व्यक्ति के मन में जिज्ञासा होती है कि कौन सा दर्शन सही है, किसे स्वीकार करें और किसे गुरु बनाएं? जैन शासन के विभिन्न मतों में भी व्यक्ति स्वयं अध्ययन और परीक्षा करता है। उत्तर देने वाला तर्क और हेतु से बात समझाने का प्रयास करता है।

> दूसरों के संदेहों का सही समाधान देकर निवारण करना ही सबसे बड़ा उपकार का कार्य है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

२. आगमों के महान उदाहरण: प्रतिपृच्छना अध्यापन का ही एक अंग है। उत्तरज्झयणाणि आगम के २३वें और २९वें अध्ययन में प्रश्नोत्तर के रूप में अनेक बातें बताई गई हैं, जहाँ गौतम स्वामी के प्रश्नों पर भगवान महावीर ने समाधान प्रदान किए।

३. राजप्रश्नीय आगम व नास्तिक से आस्तिक बनने का प्रसंग: 'राजप्रश्नीय आगम' में राजा प्रदेशी के प्रश्नों पर कुमार श्रमण केशी स्वामी ने अत्यंत सटीक और धारदार उत्तर दिए। जब प्रश्नकर्ता और उत्तरदाता दोनों विद्वान हों, तो सुनने वाली संपूर्ण परिषद् को महान लाभ मिलता है। कुमार श्रमण केशी के तर्कों से प्रभावित होकर पहले नास्तिक रहा राजा प्रदेशी भी धर्म का सच्चा अनुयायी बन गया।

स्वाध्याय योग और उत्तरदाता की योग्यता :

१. संदेह निवारण महान उपकार: पूज्य प्रवर ने प्रेरणा दी कि हम भी 'स्वाध्याय योग' द्वारा अपने आप को ज्ञान के क्षेत्र में इतना आगे बढ़ाने का प्रयास करें कि आवश्यकता पड़ने पर प्रश्नकर्ता को सही समाधान देकर उसके संदेह का निवारण कर सकें। यह बहुत बड़े उपकार का कार्य है।

२. सटीक व संतोषजनक उत्तर: उत्तरदाता को उत्तर देने से पहले स्वयं अपने उत्तर से संतुष्ट होना चाहिए; कभी भी गोल-मोल उत्तर नहीं देना चाहिए। जब प्रश्नकर्ता और उत्तरदाता दोनों योग्य होते हैं, तभी श्रेष्ठ समाधान प्राप्त होता है।

परिवार साथ रहने का नहीं, एक-दूसरे को समझने का नाम है

केसिंगा।

स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के पावन सान्निध्य में 'New Zen Sibling Workshop – साथ है तो बात है' का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी में भाई-बहन एवं भाई-भाई, बहन-बहन जैसे पारिवारिक रिश्तों में बढ़ती दूरियों के कारणों को समझना तथा आपसी संवाद, सहयोग और भावनात्मक जुड़ाव के माध्यम से रिश्तों को और अधिक मजबूत बनाने के उपायों पर चिंतन करना था।

> 'साथ है तो बात है' कार्यशाला

कार्यशाला में लगभग 35 भाई-बहन के जोड़ों सहित एवं तीन-तीन प्रतिभागियों के समूहों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यशाला का शुभारंभ मुनि हिमांशु कुमार जी के मंगल उद्बोधन से हुआ। उन्होंने रिश्तों में संवाद एवं आत्मीयता के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि एक-दूसरे को समझने, सुनने और साथ देने का भाव है। वर्तमान समय में तकनीक और व्यस्त जीवनशैली ने जहां जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं कहीं न कहीं अपनों के बीच प्रत्यक्ष संवाद को भी प्रभावित किया है। ऐसे में रिश्तों को जीवंत बनाए रखने के लिए समय देना और एक-दूसरे की भावनाओं को समझना अत्यंत आवश्यक है।

इसके पश्चात मुनि हेमंत कुमार जी ने पूरे वर्कशॉप का प्रभावी नेतृत्व करते हुए प्रतिभागियों को विभिन्न संवादात्मक गतिविधियों एवं रोचक अभ्यासों के माध्यम से विषय से जोड़ा। उन्होंने सहज और व्यावहारिक तरीके से यह समझाने का प्रयास किया कि आज की नई पीढ़ी में रिश्तों के बीच दूरी केवल भौतिक रूप से नहीं, बल्कि कम्युनिकेशन गैप, अपेक्षाओं, गलतफहमियों, व्यस्तता और एक-दूसरे को पर्याप्त समय न देने के कारण भी बढ़ रही है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में

'युवालोक' का भव्य उद्घाटन

उत्तर, अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में एवं तेरापंथ युवक परिषद्–अहमदाबाद उत्तर के तत्वावधान परिषद् के नवीन 'युवालोक' का भव्य उद्घाटन जैन संस्कार विधि से धार्मिक एवं संस्कारमय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुआ। परिषद् अध्यक्ष दिलीप भंसाली ने उपस्थित अतिथियों, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का स्वागत किया। संस्कारक अरुण बैद ने मंगल मंत्रोच्चार, मंगल भावना यंत्र की स्थापना एवं विधि-विधान के साथ जैन संस्कार विधि संपन्न कराई। उन्होंने 'युवालोक' के उज्ज्वल भविष्य, निरंतर प्रगति एवं संघीय गतिविधियों के लिए इसके मंगलमय उपयोग की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं तथा उपस्थित जनों को जैन संस्कार विधि की महत्ता एवं संस्कारमय जीवन की प्रेरणा दी। संस्कारक के रूप में आनंद बोथरा, जागृत दुगड़ एवं विशाल पींचा (प्रशिक्षु) ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, संगठन मंत्री रोहित कोठारी, CPS मुख्य ट्रेनर अरविंद मांडोत, शाखा प्रभारी अर्पित नाहर, मीडिया राष्ट्रीय प्रभारी अमित गन्ना एवं प्रबुद्ध विचारक अशोक लूणिया सहित अभातेयुप परिवार के सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने 'युवालोक' भवन के उद्घाटन पर परिषद को शुभकामनाएँ देते हुए इसे सेवा, संस्कार एवं संगठन के प्रकल्पों का सशक्त केंद्र बनाने की प्रेरणा दी। ATDC एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल सेंटर जैसे सेवा प्रकल्प प्रारंभ करने के लिए भी प्रेरित किया। वहीं, सार-संभाल यात्रा के उपलक्ष्य में पधारे अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी ने सेवा, संस्कार एवं संगठन के विभिन्न आयामों की जानकारी देते हुए चौका सत्कार सेवा में सहभागिता तथा आगामी पश्चिमांचल सम्मेलन में अधिकाधिक युवकों की भागीदारी के लिए प्रेरित किया। तेयुप अहमदाबाद उत्तर के अध्यक्ष दिलीप भंसाली, मंत्री विमल बाफना एवं समस्त पदाधिकारी व कार्यसमिति सदस्य, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा–उत्तर अहमदाबाद के अध्यक्ष महावीर ढेलड़िया उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

संक्षिप्त खबर

संस्कारों की जननी है ज्ञानशाला मंत्र दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न

सेलम। साध्वी संयमलताजी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में भौतिकता की चकाचौंध में हमारी संस्कृति के मूल संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। ऐसे संस्कार चाहिए जो बचपन से ही जीवन का मार्गदर्शन करें और उनका श्रेष्ठ माध्यम है णमोकार महामंत्र। जिसके द्वारा हमारी आत्मा धन्य होती है। इस अवसर पर उन्होंने आचार्य श्री तुलसी के इस प्रेरक कथन का उल्लेख करते हुए कहा— 'संस्कारों की जननी है ज्ञानशाला, सुखी जीवन की विधायिका है ज्ञानशाला।' उन्होंने बताया कि ज्ञानशाला बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करती है और मंत्र दीक्षा के माध्यम से उनके जीवन में नैतिकता, संयम एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है। साध्वीश्री ने बच्चों को नशामुक्त रहने, मांसाहार, अंडा आदि का त्याग करने की प्रेरणा देते हुए मंत्र दीक्षा का संकल्प कराया।

रक्षाबंधन कार्यशाला का सफल आयोजन

इचलकरंजी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, इचलकरंजी द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का भव्य एवं भक्तिमय आयोजन संस्कारक विकास सुराणा एवं पंकज जोगड़ के तत्त्वावधान में पूरे विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार के साथ संपन्न हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। तेयुप अध्यक्ष अंकुश बाफना ने पधारे हुए सभी महानुभावों का भावभीना स्वागत किया। जैन संस्कार विधि प्रभारी नितिन छाजेड़ ने अपने वक्तव्य में जैन संस्कार विधि के महत्व एवं उपयोगिता पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए सभी अतिथियों का अभिनंदन किया। तेयुप मंत्री शुभम आंचलिया ने किया। कार्यक्रम के संयोजक भंवर बालर ने किया।

मंत्र दीक्षा कार्यशाला

हनुमानगढ़ टाउन। मंत्र दीक्षा के आध्यात्मिक, नैतिक एवं व्यवहारिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए नियमित मंत्र-जाप एवं साधना से होने वाले लाभों की विस्तृत जानकारी दी तथा मंत्र दीक्षा नियमावली का वाचन किया। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अनुराग बाँठिया, महिला मंडल की अध्यक्षा संतोष बाँठिया सहित महिला मंडल की बहनों एवं अनेक श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

आरोहण' से संस्कारों की नई उड़ान

विजयनगर। तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा 'आरोहण' कार्यक्रम का सफल आयोजन।कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में आध्यात्मिक चेतना, व्यक्तित्व विकास, अनुशासन एवं संस्कारों का संवर्धन करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी (ठाणा-2) के पावन सान्निध्य में हुआ। तेरापंथ युवक परिषद, विजयनगर के अध्यक्ष पवन बैद ने कार्यक्रम की सफलता पर सभी सहयोगी संस्थाओं,ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं,कार्यकर्ताओं एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की सर्वांगीण विकास के लिए भविष्य में भी ऐसे प्रेरणादायी एवं संस्कारमूलक कार्यक्रमों का आयोजन करती रहेगी।

रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर। अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर द्वारा आयोजित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन मुनि आकाश कुमारजी, मुनि हितेंद्र कुमार जी के पावन सानिध्य में संस्कारक आशीष सिंघी एवं विनय पितलिया ने बहुत ही सुंदर और सरल तरीके से कार्यशाला को सम्पन्न करवाया। रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रक्रिया समझाई गई। रक्षा-सूत्र को भाई-बहन के प्रेम एवं विश्वास के साथ-साथ संयम, सद्भाव, संस्कार और परस्पर मंगलभावना का प्रतीक बताया गया। रक्षाबंधन के माध्यम से भगवान महावीर के अहिंसा एवं संयम के संदेश को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी गई। रक्षाबंधन कार्यशाला के संयोजक गौतम नाहटा रहे।

तप आत्मशुद्धि एवं कर्मनिर्जरा का श्रेष्ठ मार्ग है

बेंगलुरु।

तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर, बेंगलुरु में साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरहरंगी तप अनुष्ठान का भव्य आयोजन श्रद्धा,आध्यात्मिकता एवं तप अनुमोदना के वातावरण में संपन्न हुआ। सभा अध्यक्ष प्रकाशचंद बाबेल ने स्वागत एवं अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। युवक परिषद अध्यक्ष विनोद कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तपस्वियों के प्रति अनुमोदना एवं शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

इस अवसर पर 'ॐ अ.भि.रा.शि. को नमः' मंत्र का सवा लाख जप अनुष्ठान करवाया गया, जिसमें लगभग 525 व्यक्तियों ने सहभागिता की। साध्वी रम्यप्रभाजी की 13 की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके पिता सुंदरलाल बोथरा एवं माताश्री ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी पावनप्रभाजी एवं साध्वीवृंद ने भी तपस्या की अनुमोदना में गीतिका प्रस्तुत की—

'रिमझिम सावन का यह मौसम आया,
साध्वी रम्यप्रभाजी ने तप को महकाया।'

कार्यक्रम संयोजक जितेंद्र घोषल ने

तेरहरंगी तप अनुष्ठान का भव्य आयोजन

तेरहरंगी तप की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

साध्वी पावन प्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तप आत्मशुद्धि एवं कर्मनिर्जरा का श्रेष्ठ मार्ग है। जिस प्रकार सोना अग्नि में तपकर कुंदन बनता है, उसी प्रकार तपस्या के माध्यम से आत्मा कर्मों की निर्जरा कर अधिक निर्मल एवं उज्ज्वल बनती है। उन्होंने कहा कि आज तेरहरंगी तप अनुष्ठान का यह दिव्य एवं मनोहारी दृश्य अत्यंत प्रेरणादायी है। इससे तपस्या के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है तथा भैक्षव शासन एवं नंदनवन की प्रभावना होती है।

साध्वीवृंद के अथक श्रम एवं सहयोग की भी उन्होंने सराहना की। साध्वी आत्मयशाजी एवं साध्वी उन्नतयशाजी ने भी तपस्वियों की तपस्या के प्रति अनुमोदना व्यक्त की। साध्वी रम्यप्रभाजी ने भी तेरह की तपस्या के माध्यम से कर्मनिर्जरा की साधना की।

साथ ही मुनि विनीत कुमारजी, मुनि आकाश कुमारजी, साध्वी सिद्धप्रभाजी एवं साध्वी पुण्ययशाजी के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त की गई। कहा गया कि इस आयोजन की सफलता में अनेक व्यक्तियों का श्रम, आशीर्वाद एवं मंगलभाव जुड़ा हुआ है। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा मंत्री सुभाष पोखरणा ने किया।

दीक्षा का मूल उद्देश्य आत्म-सुरक्षा और आत्मकल्याण है

सिकंदराबाद।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में आगामी 20 सितंबर 2026 को लाडनूं में आचार्यश्री महाश्रमणजी से दीक्षा ग्रहण करने जा रही दीक्षार्थिनी बहनों—सुमन नाहटा एवं मुमुक्षु भावना नाहटा (मां-बेटी) का भावपूर्ण अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। मुनि श्री दीप कुमारजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में 'दीक्षा' शब्द कोई नया नहीं है। वैदिक, बौद्ध और जैन परंपराओं में दीक्षा की अपनी विशिष्ट महत्ता रही है। दीक्षा के विभिन्न रूप हो सकते हैं, लेकिन जैन धर्म में दीक्षा का मूल उद्देश्य आत्म-सुरक्षा और आत्मकल्याण है। उन्होंने कहा कि दीक्षा ग्रहण करने वाला व्यक्ति अभय की दिशा में आगे बढ़ता है। आज के भौतिकतापूर्ण युग में,जब चारों ओर भौतिक आकर्षण, राग-रंग और सुख-सुविधाओं की चकाचौंध दिखाई देती है, ऐसे समय में विराग और त्याग का मार्ग स्वीकार करना निश्चित रूप से असाधारण निर्णय है। मुनि श्री ने कहा कि दीक्षा का मार्ग सरल नहीं,

दीक्षार्थिनी बहनों का भाव पूर्ण अभिनंदन समारोह

बल्कि साधना, संयम और दृढ़ संकल्प का मार्ग है। इस मार्ग पर वही आगे बढ़ सकता है, जिसके भीतर दृढ़ मनोबल, धैर्य, सहिष्णुता और लक्ष्य के प्रति स्पष्टता हो। दीक्षार्थिनी बहनों के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए मुनि श्री ने कहा कि वे गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण रखते हुए उनकी आज्ञा एवं निर्देशों का पालन करें और संयममय जीवन के माध्यम से आत्मा के कल्याण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ें। मुनि काव्य कुमारजी ने दीक्षार्थिनी बहनों के त्याग, वैराग्य एवं दृढ़ संकल्प की सराहना करते हुए कहा कि दीक्षा केवल बाहरी जीवन-पद्धति में परिवर्तन नहीं, बल्कि भीतर की चेतना को जागृत करने वाली आध्यात्मिक यात्रा है। दीक्षार्थिनी बहन भावना ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि 'दीक्षा बाहर से भीतर की यात्रा है। मैं बाहर से भीतर की ओर गुरुवर की सन्निधि में प्रस्थान कर रही हूँ।' उन्होंने अपने जीवन में दीक्षा की भावना को साकार होने का सौभाग्य बताते हुए इसे आत्मिक शांति एवं आत्मकल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। दीक्षार्थिनी सुमन ने कहा कि उनके मन में बचपन से ही दीक्षा की भावना रही है और आज वह भावना साकार होने जा रही है। सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती ने सिकंदराबाद की समस्त संस्थाओं की ओर से दीक्षार्थिनी बहनों का अभिनंदन एवं मंगलकामना व्यक्त की।

तप से मन का कायाकल्प हो जाता है

रोहिणी, दिल्ली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में तपस्विनी बहिन सूंदर देवी मणोत एवं सोनम जैन का तप अनुमोदन समारोह मनाया गया। शासन श्री ने तपस्विनी सोनम जैन को नौ की तपस्या का प्रत्यारख्यान कराते हुए कहा कि तप बहुत छोटा सा शब्द है किन्तु इसमें बह बड़ी शक्तियां समाहित है। तप के द्वारा तन का शोधन होता है तो मन का कायाकल्प हो जाता है। इससे तेजस शरीर जाग जाता है ओर कार्मण शरीर क्षीण हो जाता है। इस रसनेन्द्रिय पर कंट्रोल रखना बहुत बड़ी साधना है जिसका संकल्प मजबूत होता है मन पर पूरा संयम होता है और साथ-साथ में परिवार का सहयोग रहता है। वो ही व्यक्ति तप के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। आज सोनम जैन का सपना पूरा हो रहा है इस उम्र में तप में शक्ति लगाना युवापीढ़ी और बहिनों के लिए एक प्रेरणा है सुन्दर देवी की भी तपस्या में रुचि है। साध्वी मधुर लता ने 'तप चैतना जगाये आओ मिल सारे' सुमधुर गीत से सबको प्रेरणा दी। रोहिणी सभा के महामन्त्री पराग जैन, तेरापन्थ युवक परिषद दिल्ली के अध्यक्ष मनीष महनोत उत्तरी महिला मण्डल अध्यक्ष इंद्रा सुराणा विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन पराग जैन ने किया।

जयाचार्य! अनुशासन प्रिय और दूरदर्शी आचार्य थे

● मुनि कमल कुमार ●

तेरापंथ धर्म संघ एक यशस्वी धर्म संघ है। इस धर्म संघ के प्रथम आचार्य आचार्य भिक्षु हुए जिन्होंने आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन कर शुद्ध साधना का क्रम बनाया और ज्यों ज्यों लोगों ने आचार्य भिक्षु के क्रांतिकारी विचारों को समझा त्यों त्यों वे भक्त बनते गये। इस संघ में सर्वेसर्वा आचार्य ही होते हैं।

आचार्य द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखकर संघ का समुचित मार्ग दर्शन करते रहते हैं जिससे संघका उत्तरोत्तर विकास होता रहे। इस धर्म संघ के चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी हुए जो प्रज्ञापुरुष जयाचार्य के नाम से विख्यात हुए। तेरापंथ धर्म संघ में सबसे छोटी उम्र में दीक्षित होने वाले आचार्य हैं।

आपका जन्म राजस्थान में जोधपुर के निकट रोयटगांव में हुआ आपके पिता आईदानजी, माता कल्लूजी ने आपको जन्म ही नहीं सुसंस्कार भी दिये आप अपने परिवार में सबसे छोटे थे बड़े भाई स्वरूपचन्दजी उसके बाद भीमराजजी तीसरे नंबर में आप थे। लघुवय में ही पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। तीनों भाइयों की इकतारी परिवार के उत्थान का मुख्य कारण समझना चाहिये। माँ की प्रेरणा से रोयट से किशनगढ आ गये वहां व्यापार भी प्रारंभ किया। वहीं आपको आचार्य श्री भारीमाल जी की प्रथम बार सेवा दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। तीनों भाइयों ने भारीमालजी स्वामी की सेवा उपासना का भरपूर लाभ लिया। तीनों का मन संसार से विरक्त हो गया। पुत्रों के साथ मां के मन में भी वैराग्य का अंकुर फूट गया। भारीमालजी स्वामी कल्प से अधिक किशनगढ़ विराजे संयोग से हेमराजजी स्वामी का अयाचित चौमासा हो गया अबतो चारों का मन मजीठ के समान पक्का होगया।

जयपुर चतुर्मास में चारों ने सेवा दर्शन का भरपूर लाभ लिया उसीका सुपरिणाम है कि चारों की मात्र डेढ़ महीने में दीक्षा होगई। दीक्षा के पश्चात बारह वर्षों तक मुनिश्री हेमराजजी स्वामी के साथ रहे। आपकी बुद्धि बड़ी ही तीक्ष्ण थी हेमराजजी स्वामी से विनयपूर्वक आपने जो ज्ञान प्राप्त किया उसी के कारण आप एक अच्छे उच्च कोटि के संत ही नहीं साधक और साहित्यकार बने आपके द्वारा लिखित साहित्य पढ़कर पाठक आपका दास बन जाता है।

राजस्थानी भाषा में इसप्रकार प्रचुर साहित्य लिखने वाले कई शताब्दियों में भी पढ़ने सुनने में नहीं आये। आप अनुशासन प्रिय और दूरदर्शी आचार्य थे आपनेही तेरापंथ धर्म संघ में उत्सव प्रारंभ किये वे तीन उत्सव पट्टोत्सव, चरोत्सव, मर्यादा महोत्सव जिसे धर्मसंघ युग युग तक मनाता रहेगा आपने धर्म संघ में अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं की साध्वी प्रमुखा का चयन हो या आचार्यों के कार्यों की व्यवस्था हो आपके १४६ वें निर्वाण दिवस पर यह मंगल कामना करते है कि आप द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का हम हृदय से अनुशरण करते रहे।

पर्युषण महापर्व कार्यक्रम

मंगलवार, 8 सितंबर 2026	खाद्य संयम दिवस
बुधवार, 9 सितंबर 2026	स्वाध्याय दिवस
गुरुवार, 10 सितंबर 2026	सामायिक दिवस
शुक्रवार, 11 सितंबर 2026	वाणी संयम दिवस
शनिवार, 12 सितंबर 2026	व्रत चेतना दिवस
रविवार, 13 सितंबर 2026	जप दिवस
सोमवार, 14 सितंबर 2026	ध्यान दिवस
मंगलवार, 15 सितंबर 2026	भगवती संवत्सरी महापर्व
बुधवार, 16 सितंबर 2026	क्षमापना दिवस

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मुनि महावीर : तेरापंथ के भावी कर्णधार

● साध्वी तरुणयशा ●

एक बच्चे ने गुब्बारे बेचने वाले से पूछा- 'अंकल, जिस तरह से आपके लाल, पीले, हरे और नीले रंग के गुब्बारे आसमान की ऊँचाइयों को छूते हैं, क्या उसी तरह से काले रंग के गुब्बारे भी आसमान का स्पर्श कर सकते हैं?' प्रश्न पूछने वाला लड़का काले रंग का था और उसके कपड़े भी मैले-कुचैले थे। गुब्बारे बेचने वाले ने बच्चे के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा- 'बेटा, जीवन में सदा याद रखना कि गुब्बारा अपने रंग के कारण नहीं, बल्कि उसमें भरी जाने वाली गैस और उसकी विशेषताओं के कारण ही आसमान की ऊँचाइयों को प्राप्त करता है। मुनि महावीर ने अपने जीवन-रूपी गुब्बारे में श्रेष्ठ सद्गुणों और सिद्धांतों का संचार किया। महान उद्देश्यों, महान विचारों और महान संस्कारों के कारण ही उन्होंने आज सफलता की ऊँचाइयों को स्पर्श किया है, फलतः गुरुदृष्टि उन पर टिकी।

–कौन जानता था - फलसुंड जैसे छोटे-से गाँव में जन्मा बालक संघ का भावी कर्णधार बनेगा।

–कौन जानता था - कोचर कुल का कुलदीपक तेरापंथ का ध्रुवतारा बनकर चमकेगा।

–कौन जानता था - सिवांची-मालाणी का गौरव गुरुवर के मन को भाएगा।

–कौन जानता था - माता छगनीबाई और पिता सवाईसिंहजी का लाल तेरापंथ का भावी गणपाल बनेगा।

–कौन जानता था - युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के मुख-कमल से बाल्यावस्था में जैन-भागवती दीक्षा स्वीकार कर नाम रोशन करेगा।

–कौन जानता था - मुनि महावीर तेरापंथ के सरताज द्वारा श्रेष्ठ 'श्रुत-आराधक' अलंकरण से अलंकृत होंगे।

–कौन जानता था - सहज, सरल एवं सादगीपूर्ण जीवन वाला 'बहुश्रुत-परिषद' का संयोजक बनेगा।

–कौन जानता था - डॉक्टर मुनि महावीर स्वाध्याय, सेवा और समर्पण में अग्रणी बनेंगे।

–कौन जानता था - मेरे सह-दीक्षित मुख्यमुनि महावीर, तेरापंथ के नवम् अधिशास्ता गुरुदेव श्री तुलसी की जन्मभूमि 'लाडनूँ' (चंदेरी) में नवम् युवाचार्य-पद को सुशोभित करेंगे।

– कौन जानता था – योगक्षेम वर्ष, तेरापंथ की राजधानी एवं आचार्य भिक्षु की त्रिजन्मशताब्दी सम्पन्नता समारोह में यह अद्भुत अनुपमेय एवं अनिर्वचनीय दृश्य निहारने का सुअवसर प्राप्त होगा।

– कौन जानता था – तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सक्षम उत्तराधिकारी मुनि महावीर बनेंगे। हमें नाज है ऐसे तेजस्वी, वर्चस्वी, मनस्वी, यशस्वी युवराज पर, आप निरामयता, चिरायुषता का वरण करें। गुरुदेव की छत्रछाया में संघ को निरंतर आसमानी ऊंचाइयाँ प्रदान करते रहें। वीर-गोयम-सी अनुपम-जोड़ी हम युग-युग निहारते रहें। उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना। **'शुभं भूयात्', 'कल्याणं भूयात्', 'शिवास्ते पन्थानः'**

सितम्बर 2026
सप्ताह के विशेष दिन

02 सितम्बर — भगवान शांतिनाथ च्यवन कल्याणक

03 सितम्बर — भगवान चन्द्रप्रभु निर्वाण कल्याणक

04 सितम्बर — भगवान सुपार्श्वनाथ च्यवन कल्याणक

05 सितम्बर — भगवान सुविधिनाथ निर्वाण कल्याणक

10 सितम्बर — पर्युषण पक्खी

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

"ऐसे है नयोड़ा युवाचार्यप्रवर"

● मुनि वर्धमान कुमार ●

> जिस प्रकार लाडनूँ के 'रसगुल्ले' को कहीं से भी चखने पर वह मीठा ही लगता है, उसी प्रकार नए युवाचार्य श्री को कहीं से भी देखें, उनमें सहजता और सरलता ही दिखती है।

कबीर दास जी ने कहा–

'जाके सिर गुरु ज्ञान है, सोई तरत भव मांहि।

गुरू बिन जानो जन्तु को, कबहुं मुक्ति सुख नांहि॥'

अर्थात जिसके सिर पर गुरू का ज्ञानोपदेश रूपी अनुग्रह है (उसका आचरण करते हुए) वही इस संसार में तरता है (मुक्त हो जाता है)। बिना गुरू तो समझो इस अज्ञानी जीव (मनुष्य) को कभी भी मुक्ति का सुख प्राप्त नहीं हो सकता (इसके लिए गुरु का आश्रय ही एकमात्र सहारा है)।

गुरु-कृपा और युवाचार्य पद का उपहार:

हमारा सौभाग्य है कि हम आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी गुरू की सन्निधि में साधना कर रहे हैं। आपश्री का चिंतन सूर्य की तरह दिव्य ओज, तेज, आरोग्य से भरा हुआ है, अतः आपका 1-1 वचन एक लाख पोटेन्सी की एक बूंद की तरह त्वरित आरोग्य एवं प्रसन्नता देता है। एक लाख पोटेन्सीवाली दवा भी साता वेदनीय कर्म का उदय न होने पर शायद काम न करें, मगर आपके वचन तो कर्मों को ही समाप्त कर हमें धन्य (सिद्ध, बुद्ध, मुक्त) बना देते हैं।

आचार्य श्री भिक्षु के Birthday के दिन वर्तमान भिक्षु (आचार्य श्री महाश्रमण) ने धर्मसंघ को Gift प्रदान किया नवम् युवाचार्य के रूप में। आचार्यप्रवर धवल सेना के साथ लाडनूँ में विराज रहे हैं।

लाडनूँ के 'रोसोगुल्ला' (रसगुल्ला) प्रसिद्ध हैं। जिस प्रकार 'रोसोगुल्ला' को कहीं से भी चखने पर वह मीठा ही लगता है, उसी प्रकार नयोड़ा (नए) युवाचार्य श्री को कही से भी देखे उसमें सहजता और सरलता ही दिखती है।

बचपन और अध्ययन के दिन : (जयपुर - 2008)

मैं महावीर कुमार जी स्वामी (युवाचार्य प्रवर) को बचपन से ही जानता हूँ। 2008 जयपुर का प्रसंग। महावीर स्वामी के Course Exam शुरू होने वाले थे। उस समय मैं सेवा में आया हुआ था। मुझे महाराज को कई Subjects (English Literature, English Grammar, Maths, etc.) पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं तो लगभग 16 साल के आसपास का था, लेकिन महाराज मुझे ऐसे सम्मान करते थे, जैसे मैं बहुत बड़ा Professor हूं। बहुत एकाग्रता के साथ अध्ययन किया। Time Punctuality गज़ब की थी। मैं आता उसके पहले ही किताबें आदि तैयार करके विराज जाते थे। मुझे उस समय लगा यह महाराज कितने 'Down to Earth' हैं। और जब भी मैं आता गुरुकुलवास में आपकी बहुत कृपा मुझे मिलती थी। आपश्री मुझे अच्छी सेवा कराते, पढ़ाते और नए-नए गीत सुनाते।

दीक्षा और स्नेह के संस्मरण :

दीक्षा के बाद मैं और युवाचार्यप्रवर एक ही वर्ग में थे। मुनिश्री ऋषभ कुमार जी स्वामी के वृहत्तर वर्ग में। महाराज की बहुत बहुत बहुत वत्सलता मुझे प्राप्त हुई।

मेरी दीक्षा वीरभूमि बीदासर में हुई। ठंड का समय। दीक्षा की पहली रात। महावीर मुनिश्री पधारे मुझे सुलाने के लिए। मुझे कहा सो जाओ। मैं सोया और फिर महाराज ने मुझे गर्म कपड़े उड़ाए (ऐलवान, तुस, आदि)। अगले दिन कोई दूसरे संत ने कपड़े उड़ाए। फिर मैंने महावीर स्वामी से कहा आप ही पधारा करो मुझे कपड़े उड़ाने के लिए, मुझे नींद अच्छी आती हैं। उसके बाद प्रायः महाराज ही पधारते और मुझे सुलादेते। कोमलता का प्रतिरूप ढूंढू तो आचार्य प्रवर 1st Rank पर और युवाचार्य प्रवर 2nd Rank पर। आपश्री कोमलता की सब उपमाओं से ऊपर उठ गए हैं। शत्रुत्व अथवा विरोधी भाव आपके जीवन में संभवतः रहा ही नहीं है, अतः आप अनन्त कोमलता के नवनीत हैं।

गोचरी और आहार-संयम :

मुनिश्री महावीर कुमार जी स्वामी वर्ग की पहली पोर की गोचरी पधारते थे और मैं उनके सहयोगी के रूप में जाता था। मेरा काम सिर्फ गोचरी जाना था। बाकी सारा काम जैसे - परोसना, ज्यादा हो तो उठाना, आदि आपश्री ही करवाते थे।

आपश्री का आहार-संयम अनुत्तर है :

एक दिन की घटना, मुझे महावीर मुनि ने घर परसने के लिए भेजा, वापिस लौटते वक्त मेरा Accident होते-होते बचा। एक Bike मेरे बहुत नज़दीक से स्पर्श करके निकल गई। मैं गिरते-गिरते बचा, और पातरियों को भी गिरने नहीं दिया, लेकिन पातरियों में जो आहार था, वो सब Mix-Masala हो गया। महाराज ने झोली देखी और कहा यह मुझे देदो, यह मैं खा लेता हूँ और तुम दूसरा आहार ग्रहण कर लो।

मुख्य मुनि बनने का प्रसंग :

बरपथार (असम) गुरूदेव पधारे। वो मेरी अंतिम गोचरी महावीर स्वामी के साथ थी। शाम को गुरूदेव ने आपको 'मुख्य मुनि' बना दिया। उस दिन मुझे महाराज की दो Duties प्राप्त हुई - एक तो अर्हत् वंदना का संगान करना और दूसरी वर्ग की पहली पोर की गोचरी का पूरा जिम्मा। फिर मुझे पता चल गया गोचरी करना कितना Tough काम हैं।

मेरा मुंह का लोच महावीर स्वामी ही करवाते थे। लोच के वक्त गीत गुनगुनाते रहते, ताकि मेरा ध्यान गीतों में लग जाए और दर्द का कम एहसास हो। बरपथार पहुँचने से कुछ दिन पहले मैंने महाराज से निवेदन किया - मेरा मुंह का लोच करना है। महाराज ने फरमाया अभी नहीं, नागालैण्ड जाकर करने का भाव है। फिर तो वो भाव ही रह गया, उसके पहले ही आप मुख्य मुनि बन गए। नागालैण्ड पधारने के बाद मैंने निवेदन किया - महाराज मुंह का लोच ??? महावीर स्वामी ने फरमाया - 'वर्धमान जी अब कियां करूं ?'

सहनशीलता और अनुशासन :

हमारे वर्ग में सामुहिक धोना होता था। मैं और महाराज भी उस क्रम में साथ थे। हम तो सब छोटे से पाटे पर बैठकर धोना करते थे पर महावीर मुनि श्री उकडु आसन में बैठे - बैठे ही सारा धोना करते थे। आहार के वक्त भी, परोसना करते वक्त भी उकडु आसन में ही बेठते थे। मैंने एक बार कहा - आपके पैर नहीं दुखते ऐसे बैठने से। महाराज ने कहा मुझे आदत हैं। जो महाराज एक छोटे से पाटे में भी नहीं बैठते थे, आज वो एक बड़े पाटे में विराजमान होते हैं।

महावीर स्वामी Soft-Hearted Person भी हैं और Strict Person भी हैं। मैं महाराज के पास अध्ययन करता था। विराटनगर का प्रसंग। मैंने महाराज से कहा गुरुदेव मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में रामायण शुरू करवाने वाले हैं। मेरी जाने की इच्छा है। महाराज ने कहा - 'आराम से जाओ पर....' यह पर, लेकिन, किन्तु, But बहुत खतरनाक होते है। महाराज ने कहा नाममाला के 10 श्लोक सिखो और पक्के सुनाओ, तो प्रवचन में जा सकते हो। मैं कई बार तो सिखलेता, और कई बार नहीं सिखपाता।

मैं जब नहीं सिखपाता, तो महाराज के सामने Emotionally कहता - मैंने सिखा तो नहीं, पर आप आज्ञा दो, तो क्या मैं जाऊं प्रवचन में ? Oh ! Oh ! फिर तो Band-Bajaa-Baaraat हो जाती। फिर तो मेरी जबरदस्त class लगती। आप लोग जानना चाहते होंगे, पर मैं क्यूं आपको बताऊँ मेरी Secret.... कुछ भी हो महाराज ने मुझपर बहुत श्रम किया। नाममाला सुन-सुनकर इतनी पक्की करवादी, कि मुझे Number-wise Shlok याद हो गए।

> जो महाराज एक छोटे से पाटे में भी नहीं बैठते थे, आज वो एक बड़े पाटे में विराजमान होते हैं।

सहज विनोद और अनमोल यादें :

मेरे दिमाग में सारे पल Picture की तरह चल रहे हैं। ऐसे तो मैं हंसी-मज़ाक कम ही करता था, लेकिन महावीर मुनिश्री के साथ मेरी tuning अच्छी थी। मैं महाराज के साथ विनोद करता, परेशान करता। मुझे महाराज को तंग करने में आनन्द आता था। एक दिन उन्होंने कहा चितारना सुनाओ, मैंने कहा अभी नहीं, मुझे निचे जाना है। महाराज Gate के आगे खड़े हो गए, ताकि मैं नहीं जा सकूं। महाराज हल्के-फुल्के से थे, मैंने महाराज को उठाया और side में रखकर रवाना हो गया।

अतीत और वर्तमान का चिंतन:

किसको पता था जिसके साथ मैं गोचरी जाता था, उसीको गोचरी कभी मालूम करनी पड़ेगी। किसको पता था जो मुझ पर अनुशासन करते थे, वो भविष्य में अनुशास्ता बनेंगे। किसको पता था जिनकी वाणी को सुनकर मैं 'गांवड़ा' (गांववाला) कहता था, उसकी वाणी को सुनने के लिए लाखो लोग लालायित होंगे। किसको पता था जिसके साथ मैं विनोद करता था, उसके सामने अब आंखे मिलाने में भी संकोच आएगा। किसको पता था कि जो कोमल हाथ मेरे मुंह का लोच करवाते थे, वही हाथ अब दिनभर जयकारा देने में लगेंगे। किसको पता था? किसको पता था?? किसको पता था ???

अंत में कहना चाहूँगा सचमुच पूरा धर्मसंघ 'महावीर स्वामी' जैसा सर्वगुण संपन्न कुशल युवाचार्य पाकर आश्वस्त है, विश्वस्त है। I really feel a sense of pride... आप दीर्घायु हो, चिरायु हो ! यही मेरी मंगलकामना है !!!

स्वास्थ जांच शिविर का सफल आयोजन

सूरत।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, सूरत द्वारा सेलिब्रिटी ग्रीन सोसाइटी, सूरत के सहयोग से एक स्वास्थ जांच शिविर का सफल आयोजन किया। यह शिविर उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। मानव सेवा एवं जनकल्याण के इस महाअभियान में 88 मरीजों की जांच की गई। जिसमें दांत की जांच, आंख नाक गले की जांच, पेट के संबंधित जांच, जनरल जांच तथा खून की जांच की गई।

इस कार्यक्रम में Zone 6 DCP राजेश परमार ने अपनी उपस्थिति दर्ज के साथ रक्तदान भी किया और सभी को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में ABTYP महामंत्री सौरभजी पटावरी, तेरापंथ युवक परिषद सूरत अध्यक्ष अमित सुराणा, मंत्री गणेश बम्ब, उपस्थित रही ।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

संघ के भावी राम को वंदन–अभिनंदन

● साध्वी जयंतप्रभा ●

'अभिनंदन उजले प्रभात का, नूतन युग के सूत्रपात का।
पौरुष, मंगल प्रभात का, नंदनवन के नवयुवराज का।।'

तेरापंथ धर्मसंघ एक कालजयी धर्मसंघ है। इसकी एकरूपता ही इस संघ का सुरक्षाकवच, सुरक्षाद्वार है। इस संघ में नित्य नवीनता के इतिहास लिखे जाते हैं। आचार की निर्मलता, पवित्रता इस धर्मसंघ की बुनियाद है। एक-एक परंपरा, एक गुरु-नेतृत्व इस संघ का प्राण है, त्राण है। ऐसे प्राणवान धर्मसंघ की रीति-नीति, परंपरा और संस्कार भविष्य को उज्ज्वल बनाये रखने के लिए अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। आचार्य भिक्षु की सूझ-बूझ व मेधा का ही परिणाम है कि यह धर्मसंघ उन परंपराओं, मर्यादाओं का पालन करता हुआ नित नये-नये कीर्तिमान बनाने में सतत गतिमान है।

इस संघ के यशस्वी आचार्यों ने अपनी तपस्या, साधना एवं श्रम की बूंदों से इसे सींचकर आगे बढ़ाया। इसमें आचार्य का स्थान तो सर्वोपरि है ही, उन्हीं के द्वारा चयनित युवाचार्य का स्थान भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए वर्तमान में महातपस्वी, संतशिरोमणि जैन जगत् के उज्ज्वल नक्षत्र, युगप्रधान आचार्य महाश्रमण जी ने आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को शुभवार, शुभनक्षत्र, शुभयोग, शुभघड़ी, शुभमुहूर्त के साथ युवाचार्य प्रवर की घोषणा करके सम्पूर्ण धर्मसंघ को आह्लादित कर दिया। चारों तरफ खुशियों का सैलाब उमड़ने लगा। वह मनमोहक दृश्य अविस्मरणीय बन गया। धर्मसंघ को निश्चिंत बना दिया।

'ओ गण के भावी कर्णधार को वंदन।
छगणी के लाल का करते अभिनंदन।।'

सचमुच! इस भैक्षव शासन का सितारा इतना बुलंद है कि इस शासन को एक के बाद एक सक्षम सम्राट का कुशल नेतृत्व प्राप्त हो रहा है। इस आचार्य नामावली की परंपरा में आचार्य माणकगणी के युग को छोड़कर सभी पूर्व आचार्यों ने संघ के हाथों में एक दिव्य मणि, एक दिव्य ताज संघ के मुकुट में लगाया। जिसकी तेजोमय, तपोमय, शक्तिमय रश्मियों से यह संघ-चमन सदा आलोकित हो रहा है।

वर्तमान में गण-गगनांगन के ग्यारहवें सूर्य के रूप में आचार्य महाश्रमण की सूक्ष्म दृष्टि पड़ी—मुनि महावीर पर।

१. सन 2010 में संघ की अंतरंग व्यवस्था कार्य अपने पत्र-संवाद सेवा में मुनि महावीर को नियुक्त किया।
२. सन् 2012 में धर्मसंघ की शिरोमणि बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में आपको नियुक्त किया।
३. सन् 2015 में नवदीक्षित व बालमुनियों के संस्कार निर्माण प्रभारी के रूप में संघनायक ने आपकी नियुक्ति की।
४. सन् 2016 में असम राज्य के गोलाघाट का बरपथार नगर! किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि वह नगर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में अंकित हो जायेगा। उस धरा पर संघनेता, संघसम्राट ने 'मुख्यमुनि' पद का सृजन कर धर्मसंघ को मजबूत बनाने का कीर्तिमान स्थापित किया।

मुख्यमुनि पद की लगभग इस एक दशक की यात्रा में सेवा, साधना व अनुभव का सृजन किया। लाडनूं की तपोभूमि, पावनभूमि पर युवाचार्य पद पर युगपुरुष ने आपको प्रतिष्ठित किया। जिससे सम्पूर्ण चतुर्विध धर्मसंघ में जय-नंदीघोष की स्वर-लहरियाँ मुखरित हो उठीं।

मुख्यमुनि प्रवर पहले आचार्य महाप्रज्ञ की शारीरिक सेवा में नियुक्त थे। फिर वर्तमान में आचार्य महाश्रमण को सुदीर्घ यात्रा के दौरान हाथ का सहारा देते रहे, दे रहे हैं और सुदीर्घ काल तक देते रहेंगे—यही शुभभावना भाते हैं। सहारा किसने किसको दिया, इसका भी गूढ़ रहस्य है। शिष्य प्रसन्न था कि मैं गुरु को समाधि में, साता पहुँचाने में सहभागी बन रहा हूँ और गुरु को भी आत्मसंतोष था कि मैं हस्तावलंबन के जरिये शिष्य में शक्ति प्रेषित कर रहा हूँ। जो आज मेरा आलंबन बन रहा है, उसे भविष्य में सम्पूर्ण धर्मसंघ का आलंबन बनना है। तो उन्होंने अपनी शक्ति संप्रेषित करके शिष्य को इतना सबल बनाया कि इस भैक्षव शासन में युवाचार्य पद पर मनोनीत करके, पूरा धर्मसंघ अपने भावी नेता को पाकर मालामाल हो गया।

यह सब वही शिष्य प्राप्त कर सकता है जिस पर गुरु का वरदहस्त होता है। वह शिष्य कंकर से शंकर, बिंदु से सिंधु, भक्त से भगवान बन जाता है। मुनि महावीर को भी आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण जैसे महान् गुरुद्वय का वरदहस्त प्राप्त हुआ। आचार्य द्वय ने अपनी कुशल छेनी से तराशा, सजाया, संवारा और संघ का युवराज बना दिया। ऐसे दीप्तिमान कोहिनूर को पाकर सम्पूर्ण धर्मसंघ निहाल हो गया।

तो मैं पुनः संघ के भावी राम की अर्थना, अभिवंदना करती हूँ।

'आचार्य महाश्रमण व युवाचार्य प्रवर की कुशल अनुशासना इस चतुर्विध धर्मसंघ को युगों-युगों तक मिलती रहे। इसी शुभभावना-मंगलकामना के साथ—

अभी तो पर खुले हैं, लंबी उड़ान बाकी है।
अभी तो चांद-सितारों को मापा है,
अनंत आसमान बाकी है।।

युवाचार्य का पद देकर के गण में भर दी पुलकन

● मुनि हिमांशु कुमार ●

गुरु महाश्रमण को वंदन
युवाचार्य का पद देकर के गण में भर दी पुलकन

१.महावीर के शासन में यह महावीर अलबेला
भिक्षु शासन शिखर चढ़े यह आई मंगल वेला
महाश्रमण-महावीर की जोड़ी धर्मसंघ की धड़कन॥

२.धोरों की धरती में देखो कैसा फूल खिला है
जैसलमेर जिला फलसुंड गांव में हमें मिला है
सवाईचंद जी छगणी देवी का है प्यारा नंदन॥

३.महाप्रज्ञ के करकमलों से संयम धन है पाया
दो-दो गुरुओं की सन्निधि पा जीवन शिखर चढ़ाया
बन गए श्रेष्ठ श्रुताराधक अब मेटो जग का क्रंदन॥

४.मुख्य मुनि पद देकर के गुरु ने संकेत दिया था
सेवा समता क्षमता से गुरु का दिल जीत लिया था
नव चिंतन नव ऊर्जा द्वारा गण में भर दो स्पंदन॥

५.नव युवराजा का हम सब मिल वर्धापन करते हैं
महाश्रमण के महावीर का हम सुमरण करते हैं
गण का हर सदस्य करता है श्रद्धा से अभिनंदन॥

(लयः जहाँ डाल-डाल पर सोने...)

अध्यात्म मंत्र शक्ति से ग्रह-दशा पर विजय पा सकते हैं

बीकानेर।

तुलसी साधना केन्द्र में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञानुवर्ती शासनश्री साध्वी मंजुप्रभाजी के सान्निध्य में ‘नवग्रह शांति अनुष्ठान’ करवाया गया।

साध्वी मंजुप्रभाजी ने कहा- संसार के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ग्रह-महाग्रह की दशा- महादशा का आक्रमण होता है, इस आक्रमण पर हम अध्यात्म मंत्र शक्ति के द्वारा विजय प्राप्त कर सकते है। हमारी जैन साधना पद्धति में आत्मा की उपासना, आत्म शक्ति जागरण के अनेक आयाम, प्रयोग है। उनमें एक है‘ 24 तीर्थंकर अनुष्ठान’ इस महान् अनुष्ठान का प्रयोग करके प्रत्येक व्यक्ति ग्रह-महाग्रह की दशा को शांत कर आनंदमय जीवन जी सकता है।

साध्वी गुरुयशाजी ने ज्योतिष शास्त्र विज्ञान के आधार पर बताया कि शास्त्रों में 12 राशि बताई गई है।

नवग्रह शांति अनुष्ठान का आयोजन

और 9 ग्रह बताये गए हैं , लेकिन मुख्य सात ग्रह होते है दो छाया ग्रह होते है। ये नवग्रह मानव जीवन पर अपना-२ प्रभाव दिखाते है। शुभ घरों में जाने वाले ग्रहों का फल शुभ मिलता है और अशुभ स्थानों पर जाने वाले ग्रहों का फल अशुभ होता है। लेकिन हम ज्योतिष आदि के चक्कर में न जाकर हमारे धर्मगुरुओं द्वारा, धर्माचार्यों द्वार जो मंत्र दिये गए हैं उनकी साधना, ध्यान,जाप करके बाह्य समस्याओं से निजात पा सकते है। जब ये मंत्र सामुहिक अनुष्ठान का रूप ले लेते है तो हमारी शक्ति शत गुणित हो जाती है। और उस शक्ति का स्वरूप हमारे जीवन का कायाकल्प करदेता है।

तीर्थंकर स्तुति जप, पंचपरमेष्ठी जप, ऊर्जा का अक्षय स्रोत है। इनकी आराधना साधना से हम शक्ति के महापुंज बन सकते हैं। ये ऐसे महान् यज्ञ, अनुष्ठान है जो हमारे जीवन में खुशहाली की बहार, रिश्तों में मधुरता, समरसता भर देते हैं व नकारात्मक शक्तियों से हमारी सुरक्षा करते है।

युवाचार्यश्री की गुरु-निष्ठा ने जीता आचार्यश्री का हृदय

सिंकदराबाद।

डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के नव मनोनीत युवाचार्यश्री महावीरजी का वर्धापना समारोह अत्यंत श्रद्धा, उल्लास एवं गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। प्रेरणादायी उद्बोधन में मुनिश्री दीप कुमारजी ने कहा कि 'युवाचार्यश्री महावीर शम, सम और श्रम के त्रिवेणी संगम हैं।' उन्होंने उपशम की गहन साधना की है, समता उनके जीवन का अभिन्न गुण है तथा वे श्रम और पुरुषार्थ के कठोर साधक हैं। उनके व्यक्तित्व में शील और श्रुत का मणिकांचन संयोग विद्यमान है। वे जितने श्रेष्ठ श्रुताराधक हैं, उतने ही उत्कृष्ट मुमुक्षु भी हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि युवाचार्यश्री की वाणी ओजस्वी, प्रेरणाप्रद एवं मधुर है। उनके आचरण में वैराग्य की गहराई और संयम की मधुरता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी वे समता बनाए रखते हैं। उनके शांत, प्रसन्न और सदैव मुस्कुराते व्यक्तित्व से प्रत्येक साधक प्रेरणा ग्रहण कर सकता है। युवाचार्यश्री की विनम्रता, समर्पण भावना और गुरु-निष्ठा ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का हृदय जीत लिया है। आचार्यप्रवर द्वारा उन्हें युवाचार्य पद पर मनोनीत किया जाना धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन है। आचार्य–युवाचार्य की यह गौरवशाली जोड़ी दीर्घकाल तक धर्मसंघ का सफल नेतृत्व करती रहे। इस अवसर पर मुनि काव्य कुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक गुरु, एक अनुशासन और एक आज्ञा की परम्परा में निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। धर्मसंघ की पुण्य परम्परा अखंड एवं प्रेरणादायी है। संचालन खुशहाल भंसाली ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

संक्षिप्त खबर

आज की अदालत- एक संदेशपूर्ण नाटिका

तिरुपुर। तेरापंथ भवन में साध्वी सिद्ध प्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में युवती विभाग, तिरुपुर द्वारा 'आज की अदालत' नामक रोचक एवं संदेशपूर्ण नाटिका प्रस्तुत की गई। वर्तमान समय में दाम्पत्य जीवन में बढ़ते तनाव, आपसी मतभेद एवं तलाक जैसी संवेदनशील समस्या को उजागर करते हुए रिश्तों में संवाद, समझ और समन्वय का सुंदर संदेश दिया। नाटिका में सभी बहनों ने पूरे उत्साह, लगन एवं समर्पण के साथ अपनी भूमिकाओं को जीवंत किया। इस सुंदर प्रस्तुति को आकार देने में साध्वी सिद्ध प्रभा जी का विशेष मार्गदर्शन एवं प्रेरणा रही। उन्होंने छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर प्रस्तुति को प्रभावशाली रूप प्रदान किया। इस पूरी प्रस्तुति के पीछे साध्वी आस्था प्रभा जी एवं साध्वी दीक्षा प्रभा जी की सक्रिय सहभागिता अथक परिश्रम ,समय एवं मार्गदर्शन मिला। नाटिका में भाग लेने वाली सभी बहनों का अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अनीता बरडिया द्वारा उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रीति भंडारी ने किया।

80वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह

उधना। तेरापंथ भवन, उधना में 80वें स्वतंत्रता दिवस का पावन एवं उत्साहपूर्ण आयोजन संपन्न हुआ। वरिष्ठजन शांतीलाल चोरडिया, प्रकाश कच्छारा, सोहनलाल भलावत ध्वजारोहण कर राष्ट्रध्वज को नमन किया। इस दौरान किशोर मंडल द्वारा दी गई सलामी ने कार्यक्रम की शोभा को और बढ़ाया। इस आयोजन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल एवं अन्य सभी सभा-संस्थाओं की गरिमामय उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष मनीष कावड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा चोरड़िया एवं ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका ऊषा डांगी ने अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानशाला सह-प्रशिक्षिका सीमा डांगी द्वारा किया गया।

REAL VICTORY मंत्र अनुष्ठान एवं रक्षाबंधन कार्यशाला का सफल आयोजन

सेलम। 'REAL VICTORY – जयाचार्य द्वारा सिद्ध शांतिक संवर्धक मंत्र अनुष्ठान' तथा 'रक्षाबंधन कार्यशाला 2026' का आयोजन अपने मंगल उद्बोधन में साध्वी संयमलताजी ने दोनों कार्यशालाओं के उद्देश्य एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आत्मसंयम, सदाचार, संस्कार, सेवा तथा आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि वास्तविक विजय स्वयं के मन एवं विकारों पर विजय प्राप्त करने में है तथा रक्षाबंधन पर्व जैन परंपरा में आत्मरक्षा, संयम और संस्कारों का प्रेरणादायी संदेश देता है। इसके उपरांत साध्वी मार्दव श्री जी ने श्रद्धालुओं को शांतिक संवर्धक मंत्र का सामूहिक मंत्रोच्चार करवाया, जिसमें सभी ने श्रद्धा एवं एकाग्रता के साथ सहभागिता की। रक्षाबंधन कार्यशाला में 15 भाई-बहनों के जोड़ों ने जैन संस्कार विधि के अनुसार रक्षाबंधन अनुष्ठान सम्पन्न किया।

क्या है तेरापंथ दर्शनः क्विज़ प्रतियोगिता–कार्यक्रम

उधना। तेरापंथ युवक परिषद् – उधना द्वारा आयोजित 'क्या है तेरापंथ दर्शन?' विषय पर आधारित कम्प्यूटरीकृत क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन, उधना में अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी आदि ठाणा – 4 के मंगल सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। इस क्विज़ प्रतियोगिता में कुल 7 ग्रुप बनाए गए, जिनमें प्रत्येक ग्रुप में 4-4 सदस्य सम्मिलित थे। कार्यक्रम में क्विज़ के जज के रूप में तेरापंथ टाइम्स के संपादक जयेश मेहता एवं समण संस्कृति संकाय के साउथ गुजरात के प्रभारी गौतम आँचलिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। क्विज़ प्रतियोगिता को सफल बनाने में वैभव ढीलीवाल का विशेष एवं सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम का सफल एवं प्रभावशाली संचालन अनिल सिंघवी एवं स्मित चोरड़िया द्वारा किया गया।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

अभिनन्दन, अभिनन्दन, अभिवन्दन, अभिवन्दन

● **शासनश्री साध्वी मंजुरेखा** ●

अभिनन्दन, अभिनन्दन, अभिवन्दन, अभिवन्दन
गणमाली के चरणों में, झुक-झुक करते हम वंदन॥

शक्तिधर हो तुम गुरुवर, शक्ति सभी में भरते हो।
गण मन्दिर की मीनारों पर, आलेख नया नित लिखते हो।
झेलो-झेलो अभिनन्दन, चरणों में शत-शत वंदन॥

सूरत तेरी अति सुन्दर, मूरत भी मन हारी है।
सरल विवेचन से भरते, गुरु गुण निष्ठा एकतारी है।
रहो निरामय बढ़ते चरण, कण-कण में अभिनव पुलकन॥

महाश्रमण जी गुरुवर ने, हीरे का मूल्य बढ़ाया है।
खरी कसौटी कर-कर के, गण का ताज पहनाया है।
संकल्प सदा शुभ-शुभ हो, बन गए तुम गण की धड़कन॥

तुलसी महाप्रज्ञ आशीर्वर फलित-फलित है सब सपने।
हम सब मिल आनन्द मनाते, सचमुच भाग्य खिले अपने।
युवाचार्यवर के चरणों में, आत्म रमण के खिले सुमन॥

तर्ज – तुम दिल की धड़कन में

गुणगान करें

● **प्रदीप छाजेड़, बोरावड़** ●

महाश्रमण महावीर का गुणगान करें
मिल जायें भवोदधि पीर गुणगान करें

तीर्थंकर तुल्य अधिनेता का गुणगान करें-
हम सबके तारणहारा का गुणगान करें

प्रातः स्मरणीय वंदनीय का गुणगान करें
जन- जन के भाग्य विधाता का गुणगान करें

संतता के धनी का हम सब सदा गुणगान करें
चार तीर्थ की छटा बिखरने वाले का गुणगान करें

वर्तमान भिक्षु का गुणगान करें
युवाचार्य प्रवर का गुणगान करें

अथक पुरुषार्थ के धनी का गुणगान करें
गुण ज्ञान में श्रेष्ठ युवाचार्य का गुणगान करें

धर्मसंघ को निश्चिंतता देने का गुणगान करें
युवाचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि का गुणगान करें

भैक्षव शासन की गजब निराली छटा का गुणगान करें
ग्यारहवें, बारहवें आचार्य की सन्निधि का गुणगान करें

श्वेत सेना के गणमाली का गुणगान करें
धवल सेना के गणमाली का गुणगान करें

महाश्रमण महावीर का गुणगान करें -2
मिल जायें भवोदधि पीर गुणगान करें -2

धागों में बंधे जैन संस्कारः देश भर में गूंजा जैन विधि से रक्षाबंधन का शंखनाद

धार्मिक परंपराओं के अनुरूप मनाया रक्षाबंधन

वडोदरा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद वडोदरा द्वारा तेरापंथ भवन में "जैन संस्कार विधि से मनाएं रक्षाबंधन" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार एवं धार्मिक परंपराओं के अनुरूप मनाने तथा परिवारों में संस्कारों को सुदृढ़ करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कारक दीपक श्रीमाल, महावीर हिरण एवं हितेश महनौत द्वारा जैन संस्कार विधि के अनुसार किया गया।

रक्षाबंधन जैसे पारंपरिक पर्वों को केवल सामाजिक उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावनाओं के साथ मनाने की प्रेरणा दी। जैन संस्कारकों द्वारा रक्षाबंधन से जुड़े धार्मिक प्रसंगों एवं जैन संस्कार विधि के माध्यम से इस पर्व को मनाने की प्रक्रिया को सरल एवं प्रभावी ढंग से समझाया गया। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए जैन संस्कार विधि को अपने जीवन एवं पारिवारिक आयोजनों में अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि चार पीढ़ियाँ एक साथ बैठकर रक्षाबंधन के इस धार्मिक एवं पारिवारिक आयोजन में सहभागी बनीं।

रक्षाबंधन का अनमोल धागा

● **मोहन भन्साली** ●

रेशम का मुलायम धागा,
मात्र धागा नहीं, बल्कि ....
यह तो भाई बहन के प्यार का अटूट बंधन है।

भाई की कलाई को सुशोभित करता धागा,
मात्र धागा नहीं, बल्कि ....
यह तो बहनों की सुरक्षा का अटल वचन है।।

हीरे-जवाहरात सा अनमोल धागा,
मात्र धागा नहीं बल्कि ....
यह तो सुखमय जीवन का रक्षा-कवच है।

सतरंगी, रंग बिरंगा मनमोहक धागा,
मात्र धागा नहीं, बल्कि ....
यह तो मधुर रिश्तों का अकल्पनीय आधार है।।

रक्षाबंधन का अनुपम धागा,
मात्र धागा नहीं, बल्कि ....
यह तो वीरांगनाओं का रक्षात्मक संदेश है।

कुंकुम, अक्षत और रोली का कच्चा धागा,
मात्र धागा नहीं, बल्कि ....
यह तो विजय सूत्र चमकाता धरती और आसमान है।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
– आचार्य श्री महाश्रमण

वीर ही महापथ की ओर चरणन्यास करते हैं

बालोतरा।

तेरापंथ भवन के आध्यात्मिक साधना हॉल में प्रोफेसर डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में दीक्षार्थिनी मुमुक्षु बहन सुमन नाहटा एवं उनकी पुत्री दीक्षार्थिनी मुमुक्षु भावना नाहटा का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपस्थित बालोतरा के विशाल जनसमाज को सम्बोधित करते हुए साध्वी श्रीजी ने कहा- भगवान महावीर ने कहा है - 'पणहा वीरा महावीहिं' यानि जो की वीर होते हैं, वे महापथ की और चरणन्यास करते हैं।.. संचय के महान पंथ 'शूरवीर, साहसी पुरुषार्थी ही दृढ़ संकल्पों की मशाल लेकर बढ़ते हैं आने वाली परिस्थितियों से घबराते नहीं, विघ्नों का सामने करते हुए आगे बढ़ते हैं और लक्ष्य का वरण कर लेते हैं। त्यागी के लिए पगडंडी भी राजमार्ग बन जाता है। इस अवसर पर साध्वी मंगल प्रज्ञा जी ने कहा-तेरापंथ धर्मसंघ में गृहस्थ जीवन से संयमी बनने वाले अनेक व्यक्तियों का विशिष्ट इतिहास है। सुमन और भावना दोनों माँ बेटियों ने संयम के कठिन मार्ग पर चलने का प्रबल संकल्प संजोया है, यह सबके लिए प्रेरणा है। पूर्व संचित पुण्याई और पौरुष से व्यक्ति शाश्वत सुख वाले संयम जीवन प्राप्ति का निर्णय लेता है। परिषद को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- वैराग्य दीप जलाने में स्नेह रुपी निमित्त भी प्रशंसनीय है। हर अभिभावक अपनी संतान को जीवन की असलियत से वाकिफ कराए और वैराग्य भाव में निमित्त बने। गुरु चरणों में अपनी संतान को सुपुर्द करें। महिला मंडल की बहनों ने शुभकामना गीत प्रस्तुत किया। दीक्षार्थिनी सुमन नाहटा एवं भावना नाहटा ने आत्मोद्गार में कहा- हमें सौभाग्य से महाश्रमण जैसे महागुरु और भैक्षव शासन में साधना करने का सुअवसर मिल रहा है। साध्वी मंगला प्रज्ञा जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन हमारे मार्ग को प्रशस्त करेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ.साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया।

दीक्षार्थी माँ-बेटी का मंगल भावना समारोह

विद्यार्थियों का निःशुल्क दंत-जाँच

उधना।

विद्यार्थियों में दंत स्वास्थ्य एवं मौखिक स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से सूरत नेशनल प्राथमिक शाला, उधना में निःशुल्क दंत-जाँच एवं मौखिक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, उधना के सहयोग से आयोजित इस शिविर में 328 से अधिक विद्यार्थियों ने निःशुल्क दंत-जाँच एवं आवश्यक चिकित्सकीय मार्गदर्शन का लाभ लिया। शिविर के दौरान विद्यार्थियों के दाँतों एवं मसूड़ों की जाँच की गई तथा दंत स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की पहचान कर उचित देखभाल के संबंध में मार्गदर्शन दिया गया। चिकित्सकों ने विद्यार्थियों को सही तरीके से ब्रश करने की विधि, नियमित दंत-जाँच एवं मौखिक स्वच्छता के महत्व के बारे में समझाया। बच्चों में दंत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए ATDC टीम द्वारा Dental Cartoon Video भी प्रदर्शित किया गया। साथ ही विद्यालय के स्टाफ के लिए भी निःशुल्क दंत-जाँच की सुविधा उपलब्ध कराई गई। डॉ. दीपेश मेहता, डॉ. नैंसी जैन, डॉ. पार्श्व शाह, डॉ. दिशा दधाणिया, डॉ. खुशी डागा, डॉ. चेतना मालू, डॉ. जील जरीवाला परिषद् अध्यक्ष मनीष कावड़िया ने समाजसेवा का अवसर प्रदान करने के लिए विद्यालय प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य परेश पटेल ने तेरापंथ युवक परिषद्–उधना की पूरी टीम के समर्पण, सेवाभाव एवं सुव्यवस्थित आयोजन के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 का सफल आयोजन

पुणे। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति पुणे द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 – 'हमारी ताकत, हमारा परिवार' का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता के साथ-साथ अणुव्रत के जीवन-मूल्यों एवं नैतिक संस्कारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। प्रतियोगिता में लगभग 400 विद्यार्थियों ने भाग लिया। रोशन चोरड़िया (अध्यक्ष) आदि का श्रम रहा।

बचपन के संस्कार पचपन तक काम करेंगे

नई दिल्ली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी सुमनश्रीजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला-दिवस का कार्यक्रम उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। दिल्ली ज्ञानशाला की सहसंयोजिका प्रतिभा चोरडिया ने दिल्ली में चल रही 13 ज्ञानशालाओं की जानकारी दी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा रोहिणी, दिल्ली के अध्यक्ष संजीव जैन ने सभी पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए अपने विचारों की प्रस्तुति दी। इसके साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के महामंत्री प्रदीप संचेती ने तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्त्वाधान में चल रही ज्ञानशालाओं के बारे में बोलते हुए प्रशिक्षिकाओं के श्रम की सराहना की और बताया कि हमारी प्रशिक्षिकाएं कितना श्रम कर रही है व्यस्तता में भी अपना समय दे रही है और साध्वी श्री जी की अथक प्रेरणा रहती है। अतः सभी परिवार अपने अपने बच्चों को ज्ञानशाला में आने के लिए प्रेरित करें और ज्ञानार्थियों की संख्या बढ़ायें। 'शासनश्री' साध्वी सुमन श्री जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन के दौरान कहा कि बच्चे राष्ट्र समाज के उज्ज्वल भविष्य हैं। परिवार के कुलदीपक है दीपक से तभी प्रकाश मिलेगा जब उसे वात्सल्य का स्नेह और अनुशासन की बाती मिलेगी तबी दीया जलेगा बच्चों का जीवन कोरा कागज है जैसा चित्र उकेरा जायेगा सद्संस्कारों का रंग भरा जायेगा वैसा ही सुन्दर चित्र उभरेगा। बचपन के संस्कार पचपन तक काम करेंगे। मुहर लगे सिक्के का महत्व है बिना मुहर-छाप लगा सिक्का बेकार है। सद्संस्कारों की मुहर ज्ञानशाला है यहाँ से निकले बच्चों की अलग पहचान होती है। आचार्य श्री तुलसी का यह अवदान समाज के लिए भावी पीढी के निर्माण के लिए वरदान है संस्कारशाला है। ज्ञानशाला में ज्ञानार्थीयों की संख्या बढ़े इसके लिए अभिभावक भी सजग रहे अपना दायित्व निभाएं। साध्वी मधुर लताजी ने 'संस्कार फलते हैं ये, दीप जलते हैं' मधुर गीत से सबको प्रेरणा दी। ज्ञानशाला संरक्षक उपासक रत्नलाल जैन, दिल्ली तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली के अध्यक्ष मनीष महणोत ने सामयिक विचारों की प्रस्तुति दी। संचालन रोहिणी ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका सोनम जैन ने किया।

बच्चों के संस्कारों की जननी : ज्ञानशाला

गांधीनगर।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्दिष्ट ज्ञानशाला दिवस का आयोजन साध्वी पावन प्रभाजी ठाणा– 4 के सान्निध्य में गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आयोजित किया गया । साध्वीश्रीजी ने कहा ज्ञानशाला संस्कारों की जननी एवं बच्चों में संस्कारों को पुष्ट करने का एक सशक्त माध्यम है।

साध्वी आत्मयशा जी, साध्वी उन्नतयशा जी, साध्वी रम्यप्रभाजी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भिक्षु अष्टकम पर नाट्य रूप में सुंदर प्रस्तुति दी। भिक्षु स्वामी संबंधित विविध घटनाओं को नाटक के द्वारा प्रस्तुत किया गया।

साध्वीश्रीजी ने कहा इस प्रकार की प्रस्तुति से बच्चों का ज्ञान भी बढ़ता है बच्चों का विकास होता है एवं उनको इतिहास संबंधित जानकारी भी प्राप्त होती है । साध्वीश्री जी ने बच्चों को भिक्षु अष्टकम कंठस्थ करने की प्रेरणा भी दी । दूसरे चरण में संस्कारों की पुष्टि हेतु ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा अनुशासन रैली का आयोजन हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया, महासभा उपाध्यक्ष प्रकाश लोढा आंचलिक ज्ञानशाला संयोजक विनोद कोठारी एवं सुरेश बरडिया ने ज्ञानशाला के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस कार्यक्रम में महासभा से नवनीत मुथा,अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित बाबेल, युवक परिषद अध्यक्ष विनोद कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी बोहरा के साथ लगभग 28 ज्ञानशालाओं से 300 ज्ञानार्थी एवं 60 प्रशिक्षिकाए इस कार्यक्रम में उपस्थित थें।

सभा मंत्री सुभाष पोखरणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन नीता गादिया ने किया।

जैन सिद्धांतों से सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण संभव

जयपुर।

समण संस्कृति संकाय - जैन विश्व भारती लाडनूं और श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा जयपुर के तत्त्वाधान में अणुविभा केन्द्र मालवीय नगर, जयपुर में 'जैन विद्या कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित गरीमामय कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुनि तत्त्व रूचि जी 'तरुण' ने कहा - आज अशांत विश्व को शांति की जरूरत है। जैन विद्या के विस्तार से विश्व में अहिंसा और शांति की स्थापना संभव है। उन्होने अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्तवाद, सम्यग् दर्शन, कर्मवाद आदि जैन सिद्धान्तों की चर्चा भी की। मुनि संभव कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र पर आधारित गीत का संगान कर उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा- मंत्र की सिद्धि श्रद्धा-आस्था से होती है। राष्ट्रीय मीडिया सहप्रभारी सुमित नाहर ने बताया की कार्यक्रम में समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष मालचन्द बेगानी ने कार्यक्रम की विधिवत आरम्भ की घोषणा की एवं सभी का स्वागत करते हुए समण संस्कृति संकाय द्वारा करणीय कार्यों की जानकारी दी व ज्यादा से ज्यादा इसके आयोजनों को समाज तक पहुंचाने एवं सभी कार्यक्रम मे ज्यादा से ज्यादा सहभागिता हेतु आह्वान किया। सह विभागाध्यक्ष हनुमानमल लूंकड़ ने अपने उद्बोधन मे कहा की आज की नई पीढ़ी को और किशोरो को ज्यादा से ज्यादा इससे जोड़े एवं आज का जो माहौल हम देश मे देख रहे है उस हिसाब से युवाओं मे संस्कार और सकारात्मक हेतु जैन विद्या जैसे आयामों से जोड़ने की अति आवशकता है जिससे सौहार्द पूर्ण वातावरण का निर्माण किया जा सके एवं genG मे संस्कारो का संचार हो और समाज के प्रति उनका जुड़ाव और जागरूकता बनी रहे। चेन्नई से समागत राकेश खटेड़ ने सभी आयामों के फायदे और किस तरह से अपने जीवन का विकास कर सके उसके बारे मे जानकारी दी।

जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

धागों में बंधे जैन संस्कारः देश भर में गूंजा जैन विधि से रक्षाबंधन का शंखनाद

आत्मरक्षा ही सच्चा रक्षाबंधन

चेंबूर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्रीजी ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, चेंबूर के तत्वावधान में 'रक्षाबंधन कार्यशाला' का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, चेंबूर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार विधि के माध्यम से आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ मनाने की प्रेरणा देना था। संस्कारक मालचंद भंसाली ने जैन संस्कार विधि के अनुसार रक्षाबंधन संस्कार का प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बताया कि किस प्रकार व्यवस्थित विधि-विधान, मंगल मंत्रोच्चार एवं आध्यात्मिक भावनाओं के साथ राखी बांधी जानी चाहिए। साध्वी निर्वाणश्रीजी ने कहा कि रक्षाबंधन का पर्व भले ही लौकिक हो, किंतु आत्मरक्षा का चिंतन पूर्णतः आध्यात्मिक है। आत्मा की रक्षा, पुष्टि एवं तुष्टि के लिए हमें नए दृष्टिकोण से राखी बांधनी चाहिए। ज्ञान का प्रकाश, अज्ञान का समूल नाश तथा राग-द्वेष के क्षय के पश्चात ही आत्मा अपने अविचल स्वरूप को प्राप्त करती है। रक्षाबंधन हमें बाह्य सुरक्षा के साथ-साथ आत्मिक सुरक्षा की भी प्रेरणा देता है। साध्वीश्री ने सर्वेन्द्रिय संयम का विशेष प्रयोग भी करवाया। प्रबुद्ध साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभाजी ने अपने विशेष वक्तव्य में आत्मरक्षा के विविध आध्यात्मिक उपायों की सारगर्भित प्रस्तुति दी तथा आत्मरक्षा एवं गृह-रक्षा कवच से संबंधित विशेष मंत्र-जाप के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम की विशेष आकर्षक प्रस्तुति में साध्वी योगक्षेमप्रभाजी, साध्वी लावण्यप्रभाजी, साध्वी कुंदनयशाजी,साध्वी मुदितप्रभाजी एवं साध्वी मधुरप्रभाजी ने रक्षाबंधन विषयक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद द्वारा तैयार की गई मनमोहक नौ प्रकार की राखियाँ सभी भाई-बहनों को भेंट की गईं, साध्वीश्रीजी की प्रेरणा से उपस्थित सभी श्रद्धालुओं ने रक्षाबंधन के अवसर पर 'त्याग की राखी' बांधते हुए आध्यात्मिक भेंट अर्पित की। लगभग 150 से अधिक भाई-बहनों ने त्याग का संकल्प लेकर त्याग की राखी बांधी, जो कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण रहा। तेयुप चेंबूर के अध्यक्ष हिमांशु गन्ना एवं मंत्री कपिल मेहता ने कार्यक्रम के सफल संचालन में सक्रिय भूमिका निभाई।

रक्षाबंधन कार्यशाला

रक्षा बंधन कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ ।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन ज्ञानशाला लिलुआ में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभआरम्भ नमस्कार महामंत्र के संगान से किया गया संस्कारक मनीष डागा ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का त्योहार कैसे मनाए यह सरल शब्दों में समझाया। नमस्कार महामंत्र,लोगस्स का पाठ और मंगल पाठ के उच्चारण के साथ राखी बांधते समय ये मंत्र बोलना चाहिए। सर्व मंगल मांगलयम, सर्व कल्याण कारणम। प्रधान सर्व धर्माणं, जैनम जयतु शासनम। लिलुआ की सहमंत्री स्वीटी विनायकीया, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका वंदना बड़रिया, समता बागरेचा समेत 9 महिलाएं/बहनें, 6 भाईयो और 11 बच्चों ने सहभागिता दर्ज कराई।

जन जन की विधि जैन संस्कार विधि

कांदिवली, मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला कार्यक्रम आयोजित किया गया।

साध्वी प्रीयंवदा जी ने कहा इस कार्यशाला के द्वारा हर एक व्यक्ति त्याग की भावना को जागृत करने का प्रयास करे, त्याग की चेतना को जगाने का प्रयास करें और अपने संस्कारों को सुरक्षित रखने हेतु हमेशा तत्पर रहे। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने फाउण्डेशन की ओर से स्वागत किया। मंत्री जगदीश परमार ने सभी से जैन संस्कार विधि अपनाने का आह्वान किया। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष आशीष श्री श्रीमाल ने दिया। संस्कारक शांतिलाल कोठारी ने विधिवत मंगल भावना यंत्र को स्थापित किया व परिषद में उपस्थित सभी भाई-बहनों को जैन संस्कार विधि से किस तरह रक्षाबंधन मनायें उसकी पूरी विधिवत् जानकारी दी। जैन संस्कारक ने सभी को आध्यात्मिक रक्षा कवच का अनुष्ठान करवाया कांदिवली ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सेजल चोरड़िया एवं मोनिका जैन की उपस्थिति रही। सम्मान अध्यक्ष आशीष श्रीमाल, मंत्री विमल धाकड़, उपाध्यक्ष भावेश चोरड़िया, कोषाध्यक्ष हर्षल चोपड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन तेयुप मंत्री विमल धाकड़ ने किया।

स्नेहिल–पुलकित : रक्षा बंधन

पूर्वांचल कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल, कोलकाता द्वारा जैन संस्कार विधि के माध्यम से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्कारक पुष्पराज सुराणा, मुकेश सेठिया एवं परिषद के मंत्री व संस्कारक पंकज आंचलिया ने ज्ञानशाला के बच्चों एवं उपस्थित परिवारजनों को जैन संस्कार विधि के अनुरूप रक्षाबंधन पर्व मनाने की परंपरा, भावना एवं महत्व के बारे में सरल एवं सारगर्भित जानकारी प्रदान की। कार्यशाला के माध्यम से बच्चों को रक्षाबंधन के अवसर पर आडम्बर एवं प्रदर्शन से दूर रहते हुए जैन संस्कार, सादगी एवं पारिवारिक मूल्यों के साथ पर्व मनाने की प्रेरणा दी गई।

धागा पतला, भावना गहरी

कटिहार।

मुनि प्रशांत कुमार जी मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षा बंधन कार्यशाला तेरापंथ युवक परिषद कटिहार द्वारा आयोजित हुई। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा - रक्षा बंधन भाई बहन के आपसी सदभाव प्रेम का त्यौहार होता है। रक्षा बंधन का धागा पतला होता है लेकिन भावना गहरी जुड़ी हुई होती है। इस त्यौहार में भावना का ही महत्व होता है। राखी बांधने के बाद भाई बहन को उपहार स्वरूप कुछ देता है। बहन भी भाई से अपेक्षा रखती है। वर्तमान में अपेक्षा बहुत ज्यादा बढ़ गई है।धन के प्रति अपेक्षा भाव आने से इसका महत्व कम हो जाता है।यह भावना का त्यौहार है। एक दूसरे के मन में अपनत्व का भाव होना चाहिए। सभी त्यौहार मांगलिक होते है। त्यौहार के साथ मंगल भावना जुड़ी होती है। सबसे बड़ा मंगल अहिंसा धर्म है।

मंगल का अर्थ होता है मंगल आचरण।हम एक दूसरे के प्रति मंगलभाव रखें। हम प्रत्येक कार्य को जैन विधि से करेंगे तो अहिंसक तरीके से होगा एवं जीवन का मंगल होगा। जैन मंत्र अपने आप में प्रभावशाली है। हमें जैन विधि का पालन करना चाहिए। हमें अपनी संस्कृति संस्कार के अनुरूप सारे कार्य करने चाहिए। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा - भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार के त्यौहार मनाए जाते है। रक्षा बंधन का संबंध भारतीय संस्कृति में भाई बहन के साथ जुड़ा हुआ है।हम अपने पारिवारिक, सामाजिक रीति-रिवाजों को जैन संस्कृति के अनुरूप मनाएं तो परम्परा का पालन होने के साथ पाप से हल्के होते है।भाई बहन एक दूसरे के प्रति सत्पथ पर चलने की कामना भावना करते हुए सदभाव का वचन दे। जैन विधि से रक्षा बंधन में मंगलभावना एवं लोगस्स पाठ स्वयं के प्रति मंगलकारी कार्य करता है। हनुमान नाहटा ने बताया कि- आदित्य मांडोत ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। संस्कारक विरेंद्र संचेती एवं आदित्य मांडोत ने संयुक्त रूप से सम्मवेत स्वरों से जैन विधि द्वारा रक्षा बंधन को प्रायोगिक रूप से पूर्ण किया। कार्यशाला में संयोजक निशांत संचेती एवं महिला मंडल की अहम् भूमिका रही।सात भाई-बहन ने प्रायोगिक रुप से रक्षा बंधन की प्रस्तुति दी।कार्यशाला का संचालन एवं आभार तेरापंथ युवक परिषद मंत्री श्रेयांस खटेड़ ने किया।

रक्षाबंधन कार्यशाला

तपोमय राखी बंधाइये–रक्षाबंधन मनाइये

उधना।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सानिध्य में 'रिश्ते नहीं हैं सस्ते (रक्षा-बंधन कार्यशाला)' का समायोजन हुआ। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में कई पर्व-त्यौहार आते हैं। रक्षाबंधन राखी का उत्सव है। जीवन एक भव्य राजमहल की तरह है जिसमें कई किरदार एक साथ हंसी-खुशी, आमोद-प्रमोद से रहते हैं। M.B.B.S (मां, बहू, बेटी, सास) की Degree के साथ परिवार में खुशहाली रहे। Five T का Good secret जिंदगी की Dictionary में Add करें। Talk, Trust, Target, Tolerance, Thanks को हमेशा साथ रखें। रिश्ते जूते-चप्पल ज्यों न बदलें, पुराने कपड़े ज्यों भी न बदलें। जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन का माधुर्य, गांभीर्य होना जरूरी है। जीवन CALENDER ज्यों कभी न हो जिसे हर साल change किया जा सके। रिश्ते मिलते हैं मुकद्दर से – बस उसे खूबसूरती से निभाना सीखो। सोच को बदलो, सितारे बदल जाएंगे। गुनगुनाते हुए जीएं, मुरझाते हुए न जीएं। वाह क्या कमाल! के साथ आगे बढ़ें, आह! ओह! कभी न करें। रिश्तों में 36 का आंकड़ा कभी न आए, प्रत्युत 63 का अंक अपनाएं। तर्क-वितर्क और तकरार को दूर भगाएं। रिश्तों में Caring, Sharing, Healing, Nature रहे। बात को Let Go करना सीखें। किसी बात को प्रतिष्ठा का सवाल न बनाएं। Oxygen ग्रहण की क्षमता बढ़ाएं। डॉ. साध्वी परमयशाजी, साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी ने 'स्नेहिल स्पंदन, पुलकित जीवन है रक्षाबंधन है॥'

रक्षाबंधन कार्यशाला का भव्य आयोजन

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित "जैन संस्कार विधि से कैसे मनाए रक्षाबंधन" कार्यशाला का भव्य आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन, राजाजीनगर में अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा की अध्यक्षता में किया गया। तेयुप अध्यक्ष राजेश देरासरिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी का स्वागत किया। कार्यशाला का शुभारंभ पंच परमेष्ठी नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। संस्कारक राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़ एवं रनीत कोठारी ने जैन संस्कार विधि का विश्लेषण करते हुए विभिन्न मंगल मंत्रों के उच्चारण तथा रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार विधि से मनाने की सरल एवं प्रायोगिक डेमो द्वारा जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तेयुप राजाजीनगर प्रत्येक कार्य को अलग एवं अभिनव रूप में करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है, जिसका उदाहरण आज की यह रक्षाबंधन कार्यशाला है। सभा अध्यक्ष मदनलाल बोराणा, तेयुप संस्थापक अध्यक्ष सुनील बाफना एवं महिला मंडल अध्यक्षा सुनीता कोठारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री जयंतीलाल गांधी ने किया।

तप कर्मों की निर्जरा का प्रभावी माध्यम है

विले पार्ले।

साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में पचरंगी तप की अनुमोदना का कार्यक्रम श्रद्धा एवं उत्साह के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से हुई। तत्पश्चात साध्वी श्री राकेश कुमारी जी ने उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रेरणादायी प्रवचन प्रदान किया।इसके बाद अनुमोदना कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विले पार्ले महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी विपुलयशा जी ने सभी तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए गुरुदेव के आशीर्वाद एवं साध्वीश्री जी की प्रेरणा से चल रही इस तपस्या की सराहना की। ठाणे से विनोद कोठारी एवं विले पार्ले से रेखा कोठारी ने तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए उनके तप के प्रति श्रद्धा एवं शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। इसी क्रम में सभी साध्वीयों ने स्वरचित अत्यंत सुमधुर एवं भावपूर्ण गीत का संगान तपस्वियों की अनुमोदना के लिए किया,जिसने पूरे वातावरण को श्रद्धा एवं भक्ति के भावों से भर दिया।

पचरंगी तप की अनुमोदना

साध्वी राकेश कुमारी जी ने प्रेरणा देते हुए तपस्या के आध्यात्मिक महत्व को बताया। तप कर्मों की निर्जरा का प्रभावी माध्यम है। तप से आत्मा की उज्ज्वलता बढ़ती है, कर्मों का क्षय होता है और भावों की शुद्धि होती है। विले पार्ले के जैन संस्कारक गंभीरमल डागलिया एवं जैन संस्कारक जसराज राठौड़ ने कार्यशाला का संयोजन किया।

सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन मे सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। अध्यक्षा महिमा पटावरी ने सभी का स्वागत किया। जैन धर्म में आयंबिल को विशिष्ट तप के रूप में माना गया है। इसमें साधक दिन में एक बार केवल सदा उबला हुआ और नीरस भोजन करता है, इसमें सभी प्रकार के रस युक्त और गरिष्ट पदार्थों का त्याग किया जाता है। इस तप का उद्देश्य शरीर को कष्ट देना नहीं बल्कि भोजन और स्वाद के प्रति आसक्ति को समाप्त कर आत्मिक शुद्धि प्राप्त करना है। महिला मंडल द्वारा आयोजित इस अनुष्ठान में 72 भाई- बहनों ने सामूहिक रूप से आयंबिल तप लिया। तप अनुष्ठान के सफल आयोजन में संयोजिका निवर्तमान अध्यक्ष मंजू गदिया एवं अनीता पटावरी का श्रम विशेष रूप से योगभूत बना।

सामाजिक कार्य

उत्तर कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आज 'रोटी ऑन व्हील्स' सेवा के अंतर्गत जरूरतमंद एवं असहाय भाई-बहनों को प्रेम, करुणा एवं मानवता की भावना से भोजन वितरित किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **कटक।** मनीष सेठिया, वैभव सेठिया एवं मुदित सेठिया गंगाशहर निवासी एवं कटक प्रवासी के नवीन प्रतिष्ठान 'सेठिया सेल्स एंड सर्विस प्राइवेट लिमिटेड', भुवनेश्वर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेंद्र लूनिया ने निर्दिष्ट विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार संपन्न करवाया।

■ **गांधीनगर दिल्ली।** भरत भूषण जी सिंघल के SHARPER IMAGE FLOORS PVT. LTD. के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व राकेश पुगलिया ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **गुवाहाटी।** चाड़वास निवासी गुवाहाटी प्रवासी डालमचंद - पुखराज देवी संचेती के सुपौत्र एवं अमित-पूजा संचेती के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से उनके शांतिपुर स्थित निज निवास में हुआ। संस्कारक आनंद सुराणा, बजरंग लाल डोसी, छतर सिंह चौरड़िया एवं मनोज महनोत ने मंत्रोच्चार से नामकरण संपादित करवाया।

■ **गांधीनगर, दिल्ली।** चूरू निवासी Auckland New Zealand प्रवासी स्व. प्रताप सुराणा व कमला देवी सुराणा की पड़पौत्री अरुण प्रवीणा देवी सुराणा की सुपौत्री व राजेंद्र सुनीता डागा की दोहिती हर्ष-रिद्धि सुराणा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से Google Meet Online के माध्यम से संस्कारक प्रकाश सुराणा ने पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **इरोड।** सरदारशहर निवासी इरोड प्रवासी (महासभा न्यासी) नरेन्द्र-रेणु देवी नखत के सुपुत्र एवं पुत्र वधु प्रवीण- प्राची नखत के सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुरेन्द्र भंडारी एवं राजेश बोथरा ने मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** चूरू निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी बाबूलाल - सूरज देवी बांठिया के सुपौत्र एवं नवीन - मिलन बांठिया के सुपुत्र का जैन संस्कार विधि द्वारा नामकरण संस्कार संस्कारक संजय पारख एवं गगन दीप बैद ने जैन मंत्रोच्चार के साथ सम्पूर्ण संस्कार विधि को गरिमामय ढंग से संपादित करवाया।

युवा राष्ट्र की अमर संपदा और क्रांति के संवाहक हैं

उत्तर हावड़ा।

युवा योगक्षेम शिविर का समायोजन

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में युवा योगक्षेम शिविर का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर हावड़ा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित हुआ। शिविर में तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, पूर्वांचल, साऊथ कोलकाता, कोलकत्ता मेन, उत्तर कोलकत्ता,टॉलीगंज, बेहाला, लिलुआ, हिन्दमोटर से लगभग 80 शिविरार्थियों ने हिस्सा लिया। शिविर में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, मुख्य वक्ता के रूप में 'दि देव प्लास्टिक इंडस्ट्रीज' के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर नरेन्द्र सुराणा, महानगर मीडिया के संपादक प्रकाश चिंडालिया, प्रेक्षा इंटरनेशनल के फाउंडर मैनेजिंग ट्रस्टी रंजीत दुगड़ थे। शिविर के प्रथम सत्र में ₹कैसे हो युवाओं का योगक्षेम₹ विषय पर संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — युवा धर्मसंघ व देश की विशिष्ट शक्ति है। जिस समाज व देश का युवा जागृत होता है वह देश व समाज बहुत आगे बढ़ता है, विकास करता है। जिसमें धन का मोह नहीं होता और जिजीविषा का मोह नहीं होता वह होता है युवक। युवक वह होता है जो मौत को हथेली में लेकर चलता है। युवक शक्ति का और शक्ति की अभिव्यक्ति का स्रोत होता है। आज युवा योगक्षेम शिविर में युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। योगक्षेम का अर्थ अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त का संरक्षण है। अर्थात विरासत और विकास दोनों को साथ लेकर चलना है। हमारी विरासत हमारे समृद्ध संस्कार हैं जो हमें पीढ़ियों से मिलते आए हैं उनका संरक्षण करना हमारा परम दायित्व है। दूसरा है विकास। विकास आध्यात्मिक होना चाहिए न कि भौतिक। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल ने कहा — मूल्यों का संरक्षण करें और रोज कुछ नया सीखें। मुख्य वक्ता उद्योगपति नरेन्द्र सुराणा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा — जीवन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है इसलिए अपने आप पर व चरित्र निर्माण पर अधिक ध्यान दें। सत्र के मुख्य वक्ता प्रेक्षा साधक रंजीत दुगड़ ने कुछ ध्यान के प्रयोगों के साथ युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम के अंत में शिविर के संयोजक दिनेश लुनिया ने आभार व्यक्त किया।

रवि हस्त नक्षत्र अमृत सिद्धि योग का आयोजन

सेलम।

तेरापंथ भवन, सेलम में साध्वी संयमलता जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में "रवि हस्त नक्षत्र अमृत सिद्धि योग" विषय पर आध्यात्मिक अनुष्ठान का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। पूरे आयोजन की थीम नीला रंग रही। सभागार को आकर्षक नीली सजावट से सजाया गया तथा सभी प्रतिभागियों ने भी नीले रंग की वेशभूषा धारण कर कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया। अनुष्ठान में नवकार महामंत्र, मंगल भावना, भगवान पार्श्वनाथ का ध्यान एवं विभिन्न संकटमोचक मंत्रों का सामूहिक उच्चारण किया गया।प्रतिभागियों ने जोड़ों के रूप में सहभागिता कर पारिवारिक समरसता, प्रेम आध्यात्मिक उन्नति का संदेश दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

TPF है Target to Top का चैनल

उधना।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 'T.P.F. शपथ ग्रहण समारोह' के कार्यक्रम का समायोजन हुआ।। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि Target to Top का शानदार Channel है T.P.F.! Peace to Power का शानदार Junction है T.P.F.! fastwork to future का मंदार दीदार है T.P.F.! अगर, मगर, किंतु, परंतु को Dictionary से निकाल दें। I will को Aceept करें। Loving, Laughing, Lighting and Learning nature के साथ जीएं।। A.C. ज्यों Cool Cool रहना, Impressive life का स्वर्णिम सूत्र है। आक्रोश उत्तेजना हार का प्रमाणपत्र है। आक्रोश नहीं अनावेश का आलोक असली पूंजी है।। Peace Power है तो सब कुछ है हमारे पास। सब कुछ हो मन की शांति न हो तो कुछ नहीं है। जीवन की वर्णमाला का आदि मध्य और आखिरी आयाम है P.M. बनना Peace of mind बनना।Hardwork + vision + time management = Success. T.P.F. वाले 'गुलाब की तरह महकते रहिए, चिराग की तरह प्रकाश करते रहिए।। डॉ. साध्वी परमयशाजी, साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी ने 'T.P.F. सुहाना है शासन में' गीत का संगान किया।वर्तमान T.P.F. अध्यक्ष धीरज आंचलिया ने सबका स्वागत किया, श्रीपाल सकलचा ने शपथ ग्रहण करवाई। शपथ ग्रहण समारोह में निर्वतमान अध्यक्ष हिमांशु चपलोत, तेरापंथ सभाध्यक्ष नेमीचंद पोरवाड़, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा चोरड़िया आदि की उपस्थिति रही।

TPF शपथ ग्रहण समारोह

आभार ज्ञापन नैन्सी चोरड़िया ने किया। संयोजन T.P.F. मंत्री भरत गंग ने किया।

पालनहार जीवन के सबसे बड़े आधार

सिकंदराबाद।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी के सान्निध्य में 'पालनहार' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनि दीप कुमारजी ने कहा— 'पालनहार—जीवन के सबसे बड़े आधार होते हैं।' माँ-पिता का रिश्ता दुनिया का सबसे बड़ा रिश्ता होता है। क्योंकि वह रिश्ता जन्म से पहले ही शुरू हो जाता है।' माता-पिता का प्रेम ऐसा होता है, जिसमें अपेक्षा कम और समर्पण अधिक होता है। वे अपने बच्चों के सुख में अपना सुख और बच्चों की सफलता में अपनी सफलता देखते हैं।उन्होंने कहा कि वे लोग किस्मत वाले होते हैं जिनके सिर पर माँ-बाप का साया होता है। जीवन में अनेक रिश्ते समय के साथ बनते और बदलते हैं, लेकिन माता-पिता का रिश्ता जीवन के आरंभ से ही व्यक्ति के साथ जुड़ा होता है। इसलिए इस रिश्ते की महत्ता को समझना और माता-पिता के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता का भाव रखना आवश्यक है।मुनि श्री ने सुंदर उदाहरण देते हुए कहा— 'याद रखें माता-पिता वे पेड़ की तरह होते हैं जो फल भले न दे, पर छाया जरूर देते हैं।' जिस प्रकार पेड़ स्वयं धूप सहकर दूसरों को छाया देता है,

कार्यशाला आयोजन

उसी प्रकार माता-पिता अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों को सहन करके बच्चों के जीवन को सुख, सुरक्षा और सुविधा देने का प्रयास करते हैं।उन्होंने कहा कि संसार में पृथ्वी बहुत विशाल है, आकाश बहुत विशाल है और ब्रह्मांड अनंत होता है, लेकिन माँ-पिता की विशालता इससे भी अधिक है। माता-पिता के त्याग, प्रेम और वात्सल्य को किसी सीमा या माप में नहीं बांधा जा सकता। उनका जीवन अपने बच्चों के भविष्य को संवारने में निरंतर समर्पित रहता है। मुनि श्री ने माँ शब्द की महत्ता बताते हुए कहा— 'माँ विश्व भर की लाखों शब्द संपदा वाले शब्द भंडार का सबसे छोटा किंतु अपने आप में परिपूर्ण वात्सल्य भावना से सिक्त और रहस्य गर्भित शब्द है।' माँ केवल एक शब्द नहीं, बल्कि प्रेम, ममता, करुणा, त्याग, वात्सल्य और सुरक्षा की संपूर्ण अनुभूति है। बच्चे के जीवन में माँ की भूमिका उसके भावनात्मक और संस्कारात्मक विकास की पहली पाठशाला के रूप में होती है।मुनि श्री ने वर्तमान परिवेश पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा— 'वर्तमान परिवेश में माता-पिता अपने मूल स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। बच्चों को समय, संस्कार, संरक्षण नहीं दे पा रहे हैं। बहुत बड़ी विडंबना दिखाई दे रही है।'इस अवसर पर मुनि काव्य कुमारजी ने भी माता-पिता के रिश्ते की विशेषता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने माता-पिता पर विश्वास रखने की प्रेरणा देते हुए कहा— 'अपने माँ-बाप पर इतना विश्वास करो, जितना दवाइयों पर करते हो। वह भले ही कड़वी होगी, पर फायदेमंद होती है।'

व्रत स्वयं को बांधना नहीं, निखारना है

चेम्बूर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्रीजी ठाणा-६ के पावन सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा बारह व्रत कार्यशाला आयोजित हुई। तेरापंथ भवन में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने कहा- भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्मो का प्रणयन किया।

बारहव्रत कार्यशाला

उन्होंने आदर्श मनुष्य जीवन की आचार संहिता प्रदान की। व्रत स्वयं को बांधना नहीं निखारना है। मुख्य प्रशिक्षक साध्वी डा. योगक्षेमप्रभाजी ने प्रशिक्षण के क्रम में त्रसजीवों की हिंसा से बचने के उपायों की चर्चा की। उन्होंने कहा- ये व्रत दिखने में बहुत छोटे हैं, पर उनमें अपार शक्ति है। एक श्रावक अपने जीवन में पूर्ण व्रती तो नहीं बन सकता, किंत कुछ ऐसे नियम-उपनियम लेकर जीवन में सीमांकन कर सकता है।

मोटिवेशनल स्पीकर दिलीप सरावगी ने अपने वक्तव्य में कहा - बारह व्रत अव्रत आश्रव के महासागर से चुल्लु या प्याले जितनी सीमा का नाम है। एक सम्यक्त्वी श्रावक अव्रत के अथाह जल से स्वयं को सुरक्षित कर देता है। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल से ममता कच्छारा विद्या कोठारी एवं ने किया।

तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष हिमांशु गन्ना ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला संयोजक मुकेश डूंगरवाल ने आभार ज्ञापन किया। इस कार्यशाला में करीब 65 भाई-बहनो ने बारहव्रती बनने की दिशा में कदम बढ़ाए।

श्रमणत्व के विलक्षण कीर्तिधर - आचार्य श्री महाश्रमण

● शासनश्री साध्वी मंजुरेखा ●

महापुरुषों का जन्म हमेशा इतिहास का दुर्लभतम दस्तावेज माना जाता है। ऐसे तो संसार में न जाने कितने लोग जन्म लेते हैं, मगर कुछ जन्म ऐसे होते हैं जो अपनी सृजनधर्मिता और महान कर्मों से इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों की धरोहर बन जाते हैं। लगन, लक्ष्य, परिश्रम और आत्मविश्वास उनके कदमों का राज बता देता है। उनके चिंतन की गहराई से निकलती आवाज स्वतः प्रेरणा बन जाती है और आत्म आरोहण की ऊंचाई, वैराग्य की खाद पाकर निर्णायक शक्ति में जान भर देती है। हौसलों की बुलंदियों पर उठनेवाला हर कदम साहस का सेतु होता है।

नये अध्याय का शुभारंभ :

पुरुषार्थ की तूलिका से जीवन के पृष्ठों में रंग भरा, प्रज्ञा और पुरुषार्थ से नई मंजिलें तय करने में सफल रहे। आपके जीवन का हर पल सृजनात्मक शक्ति का प्रतीक है। आपने विषम परिस्थितियों में भी शिखर तक आरोहण कर लिया। आपके जीवन के ऊंचे और सहज आदर्श कथनी-करनी की समानता दर्शाते हैं।

उल्लेखनीय सच्चाई :

आचार्य श्री महाश्रमणजी की साधना, तपस्या, क्षमता, योग्यता, विनम्रता हर दिल को अपनी ओर खींच रही है। आचार्यश्री महाश्रमण समयज्ञ हैं, आगमज्ञ हैं, प्राप्त विद्याओं के मर्मज्ञ हैं। आपका विनय-समर्पण कलियुग में सतयुग का दर्शन करवाता है। आपके पास आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति दर्शन कर एक बार में ही आपका हो जाता है। यह है आपकी अद्वितीय साधना और तपस्या की पुण्यों की कमाई है।

नव वैभव देता है योगक्षेम वर्ष :

योगक्षेम वर्ष का अर्थ है—अप्राप्त को प्राप्त करना और प्राप्त की सुरक्षा करना। योगक्षेम वर्ष हमारे धर्मसंघ का अनुभव सिद्ध नव वैभव है। तेरापंथ संघ की राजधानी लाडनूं में परम पूज्य गुरुदेव तथा युवाचार्य प्रवर के सानिध्य में ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप गंगा में जो अध्यात्म चेतना का जागरण हुआ, यह विश्व रिकॉर्ड में तथा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित हो गया।

तपस्या के साथ-साथ जो मासखमण करने वाले साधु-साध्वियों ने कीर्तिमान बनाए, यह इस महाश्रमण युग की तप क्रांति का उपहार या दस्तावेज है। मासखमण करने वाले तपस्वी धन्य-धन्य हो गए। लगभग 500 साधु-साध्वियों के बीच यह तप सिद्धि अपने आप में तेरापंथ धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य के साथ बहुत बड़ी उपलब्धि है।

आगम, स्वाध्याय तथा तत्त्वज्ञान :

आचार्यश्री महाश्रमण जी के नेतृत्व की पहचान है। पधारे हुए सभी साधु-साध्वियों को तत्त्वपरक क्लासेस देकर गण का अक्षुण्ण भंडार भरा है।

योगक्षेम वर्ष अपने आप में अलौकिक क्षमता का चमत्कार है। योगक्षेम वर्ष के चलते-चलते युवाचार्य प्रवर का मनोनयन व नयनाभिराम दृश्य देखने वाले लाखों-लाखों जन अपने आप में धन्यता का अनुभव करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति अनन्त-अनन्त कृतज्ञता के साथ श्रद्धासिक्त भावों के स्वस्तिक उकेरने लगे। नव-संवत् का यह 'माधव शासन' जहाँ महाविदेह सी भव्य रचना तीर्थंकर सा, समवसरण का भव्य नजारा देखने को मिल रहा है।

तेरापंथ युवक परिषद का सम्मान

रायपुर।

तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर द्वारा समाजहित एवं जनसेवा के क्षेत्र में किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों — Mega Blood Donation Drive (MBDD), Eye Donation Drive एवं Acharya Tulsi Diagnostic Centre (ATDC) — के लिए प्रभा फाउंडेशन द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में TYP रायपुर को गरिमामयी सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. रमन सिंह(अध्यक्ष – छत्तीसगढ़ विधानसभा), बृजमोहन अग्रवाल (सांसद), राजेश मूणत (विधायक), पुरंदर मिश्रा (विधायक), मोतीलाल साहू (विधायक) एवं महापौर मीनल चौबे के द्वारा तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर का सम्मान किया गया। इस गौरवपूर्ण अवसर पर TYP रायपुर की ओर से अध्यक्ष आकाश बैद आदि उपस्थित रहे। यह सम्मान TYP रायपुर के सभी सदस्यों के लिए गर्व एवं प्रेरणा का विषय है।

संक्षिप्त खबर

'मधुरम – मिठास अपनत्व की' कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में CPS Academy for Leadership & Excellence द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'मधुरम – मिठास अपनत्व की' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा तेरापंथ भवन, ट्रिप्लीकेन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ. पुलकित कुमारजी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन युवा गौरव भरत मरलेचा द्वारा किया गया। तेयुप चेन्नई के अध्यक्ष कोमल डागा ने पधारे हुए सभी अतिथि एवं श्रावक समाज का स्वागत किया। कार्यक्रम के अध्यक्षता करने पधारे अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा CPS Academy की विकास यात्रा का उल्लेख करते हुए कार्यशाला के लिए शुभकामनाएँ संप्रेषित कीं l कार्यशाला के प्रशिक्षकों का परिचय कार्यशाला संयोजक एवं तेयुप चेन्नई के उपाध्यक्ष प्रथम दिनेश भंसाली ने किया । राष्ट्रीय प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया एवं दिनेश बुरड़ ने अपने प्रभावशाली एवं संवादात्मक प्रशिक्षण के माध्यम से रिश्तों में प्रेम, विश्वास, संवाद एवं अपनत्व के महत्व को सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। संचालन तेयुप चेन्नई के मंत्री श्रीकांत चोरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन कार्यशाला संयोजक एवं सहमंत्री प्रथम तरुण बैद ने दिया l

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट प्रतियोगिता

इचलकरंजी। अणुव्रत के तत्वाधान में अणुव्रत समिति इचलकरंजी द्वारा आयोजित ACC 2026 की जिला स्तरीय प्रतियोगिता का सफल आयोजन तेरापंथ भवन इचलकरंजी में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम अणुव्रत गीत के साथ हुआ। अणुव्रत समिति की अध्यक्षा सीमा डागा ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में बच्चों का उत्साहवर्धन कर पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट २०२६ की संयोजिक रश्मि संकलेचा ने ACC 2026 के स्कूल स्तर से जिला स्तर की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद पूर्व। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद पूर्व द्वारा तेरापंथ भवन, कांकरिया मणिनगर में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में हुआ। साध्वी आत्मप्रभा जी ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में बारह व्रतों के स्वरूप, महत्व एवं आध्यात्मिक उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए श्रावक जीवन में व्रतों की भूमिका को समझाया। कांकरिया मणिनगर सभा के अध्यक्ष चंपालाल गांधी, कार्यशाला में उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नवलखा, अहमदाबाद पूर्व के संगठन मंत्री गौरव भंसाली सहित बड़ी संख्या में श्रावक - श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन परिषद् के सहमंत्री संदीप बरडिया ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026 का आयोजन

विराटनगर। अनुविभा के तत्वावधान में एवं अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के मार्गदर्शन में आयोजित 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026' के अंतर्गत DAV Rukmani Banarasi Kedia School में विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 180 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रतियोगिता के अंतर्गत Drawing (चित्रकला) में 180 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में जोनल कोऑर्डिनेटर समता भूतोरिया की सहभागिता रही।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
– आचार्य श्री महाश्रमण

परस्पर मेल है तो जीवन एक खेल है, दिल में भेद है तो जीवन जेल है

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में रविवारिय मुख्य प्रवचन कार्यक्रम 'घर को कैसे बनाएं हैप्पी होम' विषय पर उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — घर का प्रत्येक सदस्य घर को खुशहाल रखना चाहता है। घर को खुशहाल रखने के अनेक सूत्र हैं। उनमें एक सूत्र है - सामंजस्य। परस्पर मेल है तो जीवन एक खेल है, अगर दिल में भेद है तो जीवन जेल है। जीवन एक पुष्प है तो सामंजस्य सुवास है। सामंजस्य के बिना घर समृद्ध नहीं हो सकता। जहां खींचतान है, कलह है वहां असमाधि है। एक दूसरे के विचारों को समझने की कोशिश करनी चाहिए। सामुदायिक जीवन में कभी मनमुटाव हो सकता है, मतभेद हो सकते हैं लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। सहिष्णुता, स्नेह, विनय, वात्सल्य, संतुलन, संयम, सकारात्मक भाव व नेतृत्व के प्रति आस्था रखने से घर में खुशहाली हो सकती है।

घर को कैसे बनाएं हैप्पी होम कार्यक्रम सम्पन्न

व्यक्ति जितना सदाचारी होगा उतना ही उसका मूल्य बढ़ जायेगा। चरणों की नहीं आचरण की पूजा होनी चाहिए। और चरित्र की भी पूजा होनी चाहिए। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा — मकान बनाया जाता है, घर बसाया जाता है। परिवार के सदस्य में स्नेह, सौहार्द होता है तो घर हैप्पी होम बन जाता है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर इचलकरंजी से समागत जवाहर लाल भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन उत्तर हावड़ा सभा के मंत्री विनीत कोठारी ने किया।

स्वतंत्र वह है जिसका स्वयं पर आत्म-नियंत्रण है, स्वच्छंद नहीं

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां' के सान्निध्य एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी की उपस्थिति में भारत का 80 वां स्वतंत्रता दिवस हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ में संस्थान के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल द्वारा झंडारोहण किया गया। तत्पश्चात् सामूहिक राष्ट्रगान का संगान किया गया। इस अवसर पर उपस्थित मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने पदाधिकारियों एवं कर्मचारीगण को सम्बोधित करते हुए कहा- आज भारत का स्वतंत्रता दिवस पूरे भारतवासी बड़े हर्ष उल्लास के साथ मना रहे। पर एक जटिल प्रश्न है क्या भारतवासी वास्तव में स्वतंत्र है। वास्तव में स्वतंत्र वह होता है जिसका स्वयं पर आत्म नियंत्रण होता है। लगता है आज का नागरिक स्वतंत्र नहीं बल्कि स्वच्छंद है अर्थात् अपनी मनमर्जी करने वाला है। मुनि अमन ने कहा-प्रत्येक नागरिक के मन में राष्ट्र प्रेम, संविधान का व तिरंगे के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। हमारे दिलों में स्वार्थ नहीं परार्थ व परमार्थ का भाव हो। तभी स्वतंत्रता दिवस को मनाना सार्थक होगा। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने उद्बोधन में कहा- संविधान के नियमों की पालना, अनुशासन की राह पर चलना ही वास्तव में स्वतंत्रता है। स्वच्छंद वृत्तियों का त्याग कर तथा कुरूतियों-रूढियों को छोड़कर ही वास्तव में स्वतंत्र बना जा सकता है। अणुव्रत व्यक्ति को सही मायने में स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा देता है। नियम बंधन नहीं बल्कि बंधन मुक्ति की ले जाने वाला है। संविधान का पालन तन-मन से करें। इस अवसर पर मुनि सुधांशु कमारजी, मुनि अनुशासन कुमारजी कार्यक्रम का संचालन संस्थान के व्यवस्थापक महावीरसिंह ने किया।

Trust– Time–Talk–Thanks and Tolerance सुखी जीवन के आधार

हैदराबाद।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा 2 के पावन सानिध्य में तथा तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में ' हैप्पी कपल - खुशियां डबल' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन डी वी कोलोनी सिकंदराबाद में किया गया। इस कार्यक्रम के स्पीकर फ़िल्म पर्सनलैटी व इंटरनेशनल सोफ्ट स्कील ट्रेनर मि. के वी प्रदीप थे। सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विनोद दूगड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, महिला मंडल अध्यक्षा नमिता सिंघी एवं अन्य पदाधिकारी मौजूद थे। मुनि दीप कुमार जी ने अपने उद्बोधन में फ़रमाया कि भारतीय संस्कृति में दांपत्य जीवन एक आदर्श परंपरा रही है।आज दाम्पत्य जीवन में खटास,दरार व टूटन की

दम्पति कार्यशाला का आयोजन

स्थितियां बढ़ रही है। उन्होंने फ़रमाया कि विश्वास रिश्ते का आधार स्तम्भ है। गर विश्वास नहीं तो सात फेरों का संबंध टूटने में सात मिनिट भी नहीं लगती। कपल 5 T के द्वारा हैप्पी रह सकते हैं ,वो 5 T है -Trust, Time, Talk, Thanks and Tolerance. मुनि काव्य कुमार जी ने अपने प्रभावी वक्तव्य में एक कहानी के माध्यम से सफल दापंत्य जीवन के चार सुत्र बताए- सहना, समझना, सम्मान देना व साथ निभाना। स्पीकर के वी प्रदीप कुमार जी ने पी पी टी के माध्यम से कैसे हर कपल हैप्पी रह सकते हैं,के नुस्खे बताए। मुख्य वक्ता के वी प्रदीप जी ने कहा - कि दाम्पत्य जीवन में खुशियां अपने आप नहीं आतीं, बल्कि उन्हें प्रेम, समझ और छोटे-छोटे प्रयासों से निर्मित करना पड़ता है। पति-पत्नी एक-दूसरे को बदलने की अपेक्षा रखने के बजाय एक-दूसरे को समझने और स्वीकार करने का प्रयास करें।

उन्होंने कहा कि परिवार में छोटी-छोटी खुशियों को सेलिब्रेट करना, साथ समय बिताना और एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना दाम्पत्य कार्यक्रम का संचालन मीनाक्षी सुराणा ने तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री निशा सेठिया ने दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

आचार्य भिक्षु :सत्य, संयम, त्याग और दृढ़ संकल्प की अनुपम मिशाल

नई दिल्ली।

अणुव्रत भवन में आचार्य भिक्षु के 301वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में भिक्षु जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समागत जनसमुदाय को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमें आचार्य भिक्षु द्वारा संचालित प्राणवान तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। इस संघ में शालीन परंपराएं, सुदृढ़ मर्यादाएं एवं सुव्यवस्थित व्यवस्थाएं विद्यमान हैं।

उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के पक्षधर और दृढ़ संकल्प के धनी थे। विरोध की आंधी और तूफानों के बीच भी वे दृढ़ता से खड़े रहने वाले महापुरुष थे। वे जन्म से ही अनेक विशेषताओं को अपने साथ लेकर आए थे। उनके जन्म के समय शुभ शकुन हुए। उनके बाएं पैर में ऊर्ध्वरेखा, दाएं हाथ में मत्स्य रेखा एवं मणिबंध रेखाएं थीं। ललाट पर तीन आड़ी रेखाएं, नाभि पर स्वस्तिक रेखा तथा वक्षस्थल पर छत्राकृति का चिह्न था। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन ज्योतिर्मय था। शुद्धाचार के पालन के लिए उन्होंने गुरु का साया छोड़ा। आहार, पानी, स्थान और पथ की अनेक समस्याओं को उन्होंने हंसते-हंसते सहन किया। अपने सिद्धांतों को लोगों को समझाने के लिए उन्होंने पूरी-पूरी रात भ्रमण किया। उनका जीवन सत्य, संयम, त्याग और दृढ़ संकल्प का प्रेरणास्रोत रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ 'सुगुरु को वंदन वारंबार' आचार्य प्रवर द्वारा रचित गीत के संगान के साथ हुआ।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभाजी एवं साध्वी चिन्तनप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए उनके जीवन से जुड़ी प्रेरक घटनाओं का वर्णन किया और श्रद्धासुमन अर्पित किए। साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने सुमधुर स्वर में संगान प्रस्तुत करते हुए आचार्य भिक्षु के चरणों में श्रद्धासिक्त अभिवंदना अर्पित की। कार्यक्रम में विकास परिषद के संयोजक मांगीलाल सेठिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बैंगाणी, मध्य दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चोपड़ा तथा मांगीलाल भडला सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबर

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में बच्चों को दिए गए संस्कार एवं जीवन-मूल्यों के संदेश

सिलचर। तेरापंथ युवक परिषद एवं ज्ञानशाला के संयुक्त तत्वावधान में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान करने के साथ धार्मिक संस्कारों एवं श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ कुसुम मालू द्वारा प्रस्तुत त्रिपदी वंदना से हुआ। इसके पश्चात ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने मंत्र दीक्षा से संबंधित मधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। पूजा मरोठी ने नमस्कार महामंत्र की महत्ता पर आधारित प्रेरणादायक कहानी के माध्यम से बच्चों को मंत्र की शक्ति एवं नियमित जप का महत्व समझाया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका मनीषा गुलगुलिया ने बच्चों के माध्यम से पंच परमेष्ठी से संबंधित सुंदर एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुति प्रदान कराकर सभी का मन मोह लिया। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम सुराणा ने ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा दिलाई। कुशल संचालन तेरापंथ युवक परिषद, सिलचर के सहमंत्री लोकेश गुलगुलिया ने किया।

रक्तदान कर्तव्यम् के अंतर्गत रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में आयोजित राष्ट्रव्यापी 'रक्तदान कर्तव्यम्'अभियान के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, सूरत द्वारा सेलिब्रिटी ग्रीन परिसर, सूरत में एक विशाल रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया। इस शिविर ब्लड बैंक के रूप में सरदार वल्लभभाई पटेल ब्लड सेंटर का सहयोग रहा। शिविर के दौरान कुल 55 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। कार्यक्रम में ABTYP महामंत्री सौरभ पटावरी, तेरापंथ युवक परिषद सूरत अध्यक्ष अमितज सुराणा, मंत्री गणेश बम्ब, आदि उपस्थित रहे।

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह

उधना।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी, शिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 'दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह' के कार्यक्रम का समायोजन (आयोजन) हुआ। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि दीक्षा वीतरागता की मंजिल है, शाश्वत सत्य का सौरभ है और शिवत्व की सर्वोत्तम संपदा है। अनुत्तर धर्म की आराधना है।

आप All Rounder बनना। 'जत्ता मे जवणिज्जं च मे' का रहस्य सूत्र हमेशा साथ रहे। हर मोड़ जागरूकता से शुरू हो। हर शाम उपलब्धियमय हो। हर पल रचनात्मक आत्मक (आलोक) लिए आए हो। अद्भुत है इष्ट आराध्य दीक्षार्थी बहनों के, जो आश्वास और विश्वास दीप हैं। इनकी जन्मकुंडली के शानदार हैं नक्षत्र, जो उच्च ग्रहों का योग बनाते हैं। दोनों दीक्षार्थी बहनें श्रद्धा सितार बजाते रहें, शासन की शान बढ़ाते रहें। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ सभा परामर्शक बसंतीलाल नाहर, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा महिमा चौड़िया, तेरापंथ युवक परिषद् मनीष कावाड़िया, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका उषा डांगी, उपासक अर्जुन मेड़तवाल इन सभी ने दीक्षार्थी बहनों के प्रति अपनी मंगलभावनाएं प्रेषित कीं। दीक्षार्थी बहनों के पारिवारिकजनों में अंजू बैद, ललिता सेठिया आदि सभी ने अपनी भावों (भावों) की प्रस्तुति दी। साध्वी विनम्रयशा जी ने भी कविता के माध्यम से दीक्षार्थी बहनों के प्रति अपने भावों की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल की संयोजिका सिमरन पोखराना ने मुमुक्षु सुमन और भावना नाहटा का परिचय दिया। मुमुक्षु सुमन ने कहा कि मेरे संस्कारों की नींव लगाने वाले मेरे माता-पिता के प्रति अब मैं अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मैं गुरु के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जो मुझे भवसागर से तार रहे हैं। ये मेरे पूर्व जन्म के संस्कार जो मैं इस पथ पर अग्रसर हो रही हूँ। अनुव्रत समिति ग्रेटर सूरत (Greater Surat) के अध्यक्ष रतनलाल भलावत ने बहुत ही सुंदर भावों की प्रस्तुति दी। मुमुक्षु भावना नाहटा ने कहा कि मुझे सब कुछ बनना limited से unlimited बनना है। गुरुदेव के प्रति अनन्त-अनन्त कृतज्ञता और माता-पिता के प्रति भी अनन्त-अनन्त कृतज्ञता। निर्मल चपलोत ने दीक्षार्थी अभिनंदन पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संयोजन तेरापंथ सभा मंत्री पुखराज हिरण ने किया।

जीवन को आनंदमय बनाने के लिए प्रेक्षाध्यान जरूरी

अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर समापन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के प्रेक्षाहॉल में अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया। प्रेक्षागीत के संगान के पश्चात् मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा- चैतन्य जागरण जितेन्द्रिय बनने से ही संभव है। इन्द्रिय विजय से ही साधना सिद्धत्व को प्राप्त हो सकती है। हर व्यक्ति अपनी सक्षमता और योग्यता का विकास करे। ध्यान साधना व्यक्ति को सक्षमता प्रदान करती है। व्यक्ति जल (पानी) की तरह निर्मल, गतिशील और उपयोगिता सिद्ध करे। मुनि अमन ने कहा- साधना के लिए साधन की अपेक्षा रहती है। शुद्ध साधन से ही शुद्ध साधना है। अतः निरन्तर अभ्यास करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास करे। और अपनी लक्ष्य भी आगे बढ़ते रहेंगें। तभी कामयाबी हो सकेगी। इस अवसर पर मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने विशेष रूप में अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा आपने जिन सुखद पलों को जीया है। मुनि जितेन्द्र ने बताया- आप ध्यान के केवल प्रयोग दीर्घश्वास प्रेक्षा अथवा अनुप्रेक्षा के प्रयोगों को निरन्तर करेंगे तो निश्चय ही आपका निरन्तर प्रयास सार्थकता को लिए होगा। कार्यक्रम में प्रेक्षासाधिका साश्री बैद चन्द्रा जैन, स्वाति बड़ौला, निर्मल दूगड़, चेतन दूगड़, सुमित मणोत, तुलसी जैन ने अपने अनुभवों को शेयर किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षासाधक विनोद जैन तथा आभार उषा धाड़ेवा ने व्यक्त किया। संस्थान की ओर से व्यवस्थापक महावीर सिंह, बी.के. कल्याण सिंह, श्याम सुन्दर का विशेष सहयोग रहा।

संकल्प शक्ति के जागरण का आधार नमस्कार महामंत्र है

मंत्र दीक्षा व किशोर दिवस का समायोजन

कटक।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, कटक द्वारा मंत्र दीक्षोत्सव कार्यक्रम का समायोजन मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। ज्ञानार्थियों को ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए मुनि मोहजीत कुमार ने कहा- ज्ञानशाला का अभिनव उपक्रम आचार्य तुलसी ने अपनी दूर दृष्टि से किया। जो आज तक प्रवर्धमान है।

ज्ञानशाला के माध्यम से भावी पीढ़ी में संस्कारों का निर्माण किया जाता है। यह प्रकल्प संस्कारों के जागरण का महत्वपूर्ण उपाय है। इससे बालक-बालिकाएं धर्म के प्रति जागरूक बनते हैं। उनके भीतर सद्भावों सत्क्रिया का विकास होता है।

मुनिश्री ने पात्र बच्चों को मंत्र दीक्षा के संकल्प ग्रहण करवाये। मुनि जयेश कुमार ने अपने युग में चलने वाली ज्ञानशाला के अनुभवों प्रकट करते हुए कहा कि प्रत्येक ज्ञानार्थी को देव गुरु धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा का विकास होना चाहिए। इसके लिए संकल्प शक्ति का जागरण करें।

संकल्प बल से व्यक्ति महान बन सकता है। संकल्प शक्ति के जागरण का आधार नमस्कार महामंत्र है। इसका नित प्रति स्मरण भाव शुद्धि, कर्म शुद्धि, आत्म शुद्धि का महान आधार है। आज के दिन से जुड़े एक और उपक्रम किशोर दिवस के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल, कटक के सदस्यों द्वारा भिक्षु दर्शन पर आधारित नाटिका की प्रस्तुति की गयी।

किशोर हर्ष डूंगरवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मंडल, कटक ने राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत की गयी। सत्य का पथ–तेरापंथ नामक झांकी का समाज जनों के मध्य प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के अंत मे तेयुप सदस्यों द्वारा मन्त्र दीक्षा प्राप्त ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

संक्षिप्त खबर

उपासक प्रशिक्षण एवं प्रेरणा कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली। कार्यशाला में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने अपनी प्रभावी एवं प्रेरणात्मक शैली में उपासक बनने की प्रक्रिया तथा उपासक की अर्हताओं के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। मुनि उदितकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि उपासक बनना एक नितांत आध्यात्मिक प्रवृत्ति है। यह आत्मकल्याण के साथ-साथ संघ सेवा में समर्पित भाव से स्वयं को नियोजित करने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि सभी को अपनी रुचि एवं ज्ञान को इस दिशा में अग्रसर करने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुखराज सेठिया, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष विमल कुमार बेंगानी की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा से विकास बोथरा ने किया, जबकि आभार ज्ञापन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रदीप संचेती ने किया।

तत्वज्ञान तेरापंथ दर्शन एवं तत्व विज्ञ परीक्षार्थियों का सम्मान

विजयनगर , बैंगलोर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तुलसी शिक्षा परियोजना के तहत तत्व ज्ञान, तेरापंथ दर्शन, तत्व विज्ञ एवं जैन स्कॉलर की परीक्षा देने वाले परीक्षार्थियों का तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी के पावन सानिध्य में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें सभी परीक्षार्थियों को गत वर्ष हुई परीक्षाओं के प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर विजयनगर केंद्र संयोजिका बरखा पुगलिया ने कहा अभिलाषा डांगी ने राष्ट्रीय स्तर पर पंचम स्थान प्राप्त किया तथा अरविंद मांडोत एवं सुमन कोठारी 6 वर्षों के तत्व ज्ञान पाठ्यक्रम को पूर्ण कर तत्व प्रचेता बने।

वॉइस ऑफ तेरापंथ' फाइनल में गूंजे भक्ति सुर

गांधीनगर बैंगलोर। साध्वी पावनप्रभा जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन गांधीनगर में आयोजित ज्ञानशाला की बहुप्रतीक्षित 'वॉइस ऑफ तेरापंथ' (गायन प्रतियोगिता) का भव्य फाइनल श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर के तत्वावधान में ज्ञानशाला के कुशल नेतृत्व में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 200 श्रद्धालुओं एवं अभिभावकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अपने मंगल उद्बोधन में साध्वी पावनप्रभाजी ने ज्ञानार्थियों की निर्भीक एवं प्रभावशाली प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि ज्ञानशाला बच्चों के व्यक्तित्व एवं संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम है। उन्होंने प्रशिक्षकों के समर्पित प्रयासों तथा अभिभावकों द्वारा बच्चों के उत्साहवर्धन की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में धृति सिंघी प्रथम, मन्नत महेर द्वितीय एवं रिद्धि पितलिया तृतीय स्थान पर रहे।

301वें जन्मोत्सव एवं 269वें बोधि दिवस पर धम्मजागरण का आयोजन

अहमदाबाद। तेरापंथ के आद्य अधिशास्ता महामना आचार्य भिक्षु के 301वें जन्मोत्सव एवं 269वें बोधि दिवस के पावन उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद, अहमदाबाद द्वारा पूज्य साध्वी अणिमा श्री जी ठाणा-5 की पावन सन्निधि में भव्य धम्मजागरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ युवक परिषद, अहमदाबाद के मंत्री हैप्पी भरसारिया ने स्वागत एवं अभिनंदन के साथ किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में आचार्य भिक्षु के आदर्शों, त्याग, अनुशासन एवं समता के संदेश को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा देते हुए आज के इस स्वर्णिम दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। धम्मजागरण में सुप्रसिद्ध भजन गायकों दीपक संचेती, आनंद बोथरा, अरिहंत बाफना एवं जिज्ञासा पींचा ने भावपूर्ण भजनों की सुमधुर प्रस्तुतियों के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी श्रद्धा एवं भक्ति अर्पित की।

युवक भौतिकता के साथ अध्यात्म के संस्कारों से संपन्न हो

बीदासर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की सुशिष्या साध्वी मंजूयशा जी के पावन सान्निध्य में बीदासर तेरापंथ युवक परिषद के नव निर्वाचित अध्यक्ष चिराग बैंगानी और उनकी पूरी नवीन टीम ने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के द्वारा निर्धारित नियमों को बड़े उत्साह पूर्वक स्वीकार किया। शपथ ग्रहण कराने वाले अभातेयुप के सदस्य पारस बैद एवं तेयुप के संरक्षक नवदीप बैंगानी ने पूरी टीम को शपथ ग्रहण करवाई।

साध्वीश्री जी ने पूरी युवा टीम को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा- जीवन की तीन अवस्थाएं है बाल्यावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था । इन तीनों में युवावस्था सबसे शक्तिशाली होती है। यही युवा अवस्था में ही व्यक्ति नए नए सृजन का कार्य कर सकता है। उन्होंने आगे कहा- हर युवक भौतिकता के साथ अध्यात्म के संस्कारों से संपन्न हो । धार्मिकता एवं सदसरकारो के बिना हमारा जीवन अधुरा रह जाता है। वर्तमान की युवापीढ़ी जो दिशा हीन बन रही है, व्यसनों को प्रभाव उनपर ज्यादा पड़ रहा है बीड़ी सिगरेट शराब, ड्रग्स आदि नशीले पदार्थों का जो प्रयोग हो रहा है। इन सबसे सभी युवक मुक्त रहने का संकल्प निभाएं। पूरी युवा टीम पूर्ण व्यसन मुक्त बने और अपनी उर्जा व शक्ति को सद्कार्यों में लगाएं। सबके प्रति अध्यात्म विकास की मंगल कामना।

तेयुप का शपथ ग्रहण एवं मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम

सेवा, संस्कार और संगठन के आयामों को सदा बढ़ाते रहे। इस अवसर पर तेयुप के पूर्व मंत्री रितिक बौथरा ने 2 वर्षीय कार्यकाल में संपादित कार्यों का बड़े व्यवस्थित रूप से प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी रमावती, साध्वी नय श्रीजी एवं साध्वी चिन्मयप्रभा ने युवा शक्ति का महत्व बताते हुए पूरी टीम के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना दी। कार्यकम का संयोजन रितिक बोथरा ने बड़ी कुशलता पूर्वक किया। मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम तेयुप द्वारा -मंत्र दीक्षा समारोह कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी इंदुप्रभा साध्वी तीर्थप्रभा एवं साध्वी मानसप्रभा के नमस्कार महामंत्र के मंगल गीत से हुआ।

साध्वी श्री जी ने मंत्र दीक्षा का महत्व बताते हुए कहा- सभी धर्मो में अलग अलग मंत्र होते हैं जैन धर्म का मंत्र है नमस्कार महामंत्र। इसका जप हर जवान,वृद्ध एवं बच्चों को करना चाहिए। इससे हमारे भीतर में शान्ति, समाधि व पवित्र भावों का संचार होता है।

करीब 31 बच्चे इसमें संभागी रहे जो प्रति रविवार ज्ञानशाला में प्रशिक्षिकाओं द्वारा अच्छे संस्कार एवं जैन दर्शन तत्व दर्शन, व्यवहारिक ज्ञान का भी प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने भावी जीवन का निर्माण कर रहे है। मुख्य प्रशिक्षिका भावना दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने किया।

तपस्या से होती है आत्मोन्नति,आत्मशुद्धि

सिकंदराबाद।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी के पावन सान्निध्य में आयोजित प्रातःकालीन प्रवचन के दौरान तीन श्राविकाओं ने श्रद्धा, संकल्प और आत्मबल के साथ ग्यारह उपवास (निराहार तप) का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। प्रवचन में मुनि दीप कुमारजी ने कहा कि श्रावण केवल वर्षा का मौसम नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम और तप का भी श्रेष्ठ काल है। जैन संस्कृति में तप का स्थान अत्यंत ऊँचा है। इतिहास साक्षी है कि असंख्य महापुरुषों ने तप के माध्यम से कर्मों का क्षय कर आत्मोन्नति

तप की अनुपम साधना

की दिशा में महान उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।' उन्होंने आगे कहा, तपस्या वही कर सकता है जिसके भीतर अटूट मनोबल, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास हो।

आज के युग में, जहाँ चारों ओर भोग-विलास और स्वाद के आकर्षण सहज उपलब्ध हैं, ऐसे वातावरण में लगातार ग्यारह दिन तक निराहार रहकर तप करना साधारण बात नहीं, बल्कि आत्मशक्ति, संयम और साधना का अद्वितीय उदाहरण है।

मुनिश्री ने स्पष्ट किया कि तप कभी प्रदर्शन, परम्परा निभाने या किसी दबाव का विषय नहीं है। यह पूर्णतः स्वेच्छा से, आत्मशुद्धि और कर्मनिर्जरा की पवित्र भावना से किया जाने वाला आध्यात्मिक अनुष्ठान है।

गुरु कृपा से सिकंदराबाद की तप परंपरा निरंतर समृद्ध हो रही है। यह प्रेरणा आने वाले समय में और अधिक साधकों को तप के पथ पर अग्रसर करेगी। प्रवचन के समापन पर मुनि दीप कुमारजी ने तप की महिमा पर आधारित अपनी स्वरचित तप-कविता की अत्यंत भावपूर्ण प्रस्तुति दी। इस अवसर पर मुनि काव्य कुमारजी ने भी तप की महत्ता पर प्रेरणास्पद विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तप आत्मबल को जागृत करने और जीवन को आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।

मासखमण तप अभिनन्दन कार्यक्रम

बालोतरा।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष राणमल फोला मेहता की पुत्रवधू मीना मेहता ने मासखमण तप किया। तप अभिनन्दन के अवसर पर आयोजित समारोह में उद्बोधन प्रदान करते हुए साध्वी श्री जी ने कहा — तपस्या आत्म विशुद्धि की पवित्र साधना है। 'आत्मबल और संकल्प बल के बिना इस साधना में सफलता हासिल नहीं होती है।' मीना ने अपने हौंसले को बुलंद रखा। आज वह अपने निर्धारित लक्ष्य के निकट है।साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा — तप के साथ जप - स्वाध्याय, प्रवचन आदि से सदैव मीना ने खुद को नियोजित किए रखा है। निरंतर आगे बढ़ती रही। है। तपस्या व्यक्ति के तन-मन को स्वस्थ बनाती है। आत्मिक आनंद की अनुभूति करवाती है। चातुर्मास का समय तप साधना का विशेष अवसर है। साध्वी सुदर्शन प्रभा, साध्वी डॉ. राजुल प्रभा, साध्वी डॉ. चैतन्य प्रभा, साध्वी डॉ. शौर्य प्रभा जी ने संगान कर तप अनुमोदना की। संचालन सहमंत्री राजेश बाफ़ना ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 सितम्बर-13 सितम्बर 2026

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का सफल आयोजन

उत्तर कोलकाता। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (एटीडीसी) के सहयोग एवं तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल के समर्थन से बिनायक एन्क्लेव, कोलकाता में निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष दिलीप मारोठी जी द्वारा नवकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ। शिविर में रक्तचाप, मधुमेह सहित विभिन्न स्वास्थ्य जाँच सेवाएँ उपलब्ध कराई गईं, जिसमें कुल 65 लाभार्थियों ने स्वास्थ्य परीक्षण का लाभ प्राप्त किया। स्थानीय नागरिकों ने इस जनकल्याणकारी एवं मानव सेवा के कार्य की सराहना करते हुए परिषद परिवार के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। तेरापंथ युवक परिषद, उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष अभिषेक नाहटा एवं आदि उपस्थित रहे

भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन

नालासोपारा, मुंबई। तेरापंथ सभा नालासोपारा के तत्वावधान में आचार्य श्री भिक्षु स्वामी के त्रिशताब्दी समापन वर्ष के उपलक्ष्य में भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन श्रद्धा एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ णमोकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष भरत भलावत ने पधारे हुए सभी अतिथियों एवं श्रद्धालुओं का भावपूर्ण स्वागत अभिनंदन किया। भक्ति संध्या में सुप्रसिद्ध गायिकाओं स्वीटी मेहता एवं रिंकल लोढ़ा ने अपनी मधुर एवं भावपूर्ण प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। सभा अध्यक्ष भरत भलावत,, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री उमेश कोठारी तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सीमा कोठारी की उपस्थिति रही

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026 का आयोजन

भिलाई। अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026' के अंतर्गत सरस्वती शिशु मंदिर, कुरुद भिलाई में विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के कुल 06 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में ज़ोनल/स्टेट कोऑर्डिनेटर मामोल कोटेचा की सहभागिता रही।

267 वां स्थापना दिवस

नागपुर। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नागपुर के तत्वावधान में तेरापंथ धर्मसंघ का 267 वां स्थापना दिवस तेरापंथ भवन नागपुर में उपासिका सरिता सामसुखा एवं शीला नाहटा के सम्माननीय उपस्थिति में अतिहर्ष,उल्लास एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। प्रवचन में तेरापंथ धर्म संघ की मान्यताओं,आदर्शों एवं आचार्य परंपरा का प्रेरणादायी विवेचन किया गया। श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए धर्म लाभ अर्जित किया। आषाढ़ी तेरस एवं आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के समापन समारोह में परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करते हुए मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किए जाने का शुभ समाचार प्राप्त होते ही नागपुर सहित समूचे जैन समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई।

मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन

हासन। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई। उसके पश्चात ज्ञान शाला के सभी बच्चों को नवकार मंत्र की महिमा नियमित जप एवं जैन विद्या के नियमों का संकल्प तेरापंथ की प्रशिक्षिकाओ ने बताया एवं युवक परिषद ने बच्चों को प्रोत्साहन हेतु उपहार वितरण किये। इस अवसर पर सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ जयंतीलाल कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष विनीता सुराणा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विकाश कोठारी आदि की उपस्थिति रही।

जनता की अदालत एवं शिखर संगम में संवाद

नई दिल्ली।

'जनता की अदालत एवं शिखर संगम' ने संवाद, साहस, नेतृत्व और नेटवर्किंग का एक यादगार मंच प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और आयोजन की सकारात्मक ऊर्जा ने सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम के पहले चरण 'जनता की अदालत' में सवालों को बेबाकी से रखने और स्पष्ट उत्तर देने का अवसर मिला। के.एल. जैन समूह के के.एल. जैन के सहयोग एवं उनके सहज, स्पष्ट और निडर जवाबों ने इस सत्र को विशेष बनाया। कार्यक्रम के न्यायाधीश आलोक कुमार, वीएचपी के इंटरनेशनल प्रेसिडेंट एवं वरिष्ठ अधिवक्ता, ने अपनी कानूनी विशेषज्ञता और प्रभावशाली संचालन से जनता की अदालत को प्रभावी स्वरूप दिया। अधिवक्ता मनीषा अग्रवाल नारायण, स्थायी अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालय, की गरिमामयी उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही। वहीं संजीव चिंडालिया ने जनता की अदालत के कॉन्सेप्ट एवं सेटअप को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का दूसरा प्रमुख आकर्षण 'शिखर संगम' रहा, जिसमें संवाद, नेटवर्किंग और आपसी जुड़ाव को केंद्र में रखा गया। स्वाति एवं प्रीति द्वारा आयोजित खेल एवं नेटवर्किंग सत्र ने प्रतिभागियों में उत्साह और सहभागिता बढ़ाई। इस दौरान यह संदेश भी उभरा कि नेटवर्किंग केवल परिचय या संपर्क साझा करने तक सीमित नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, रिश्तों के निर्माण और नई संभावनाओं के सृजन का माध्यम है। टीपीएफ नेतृत्व टीम की सक्रिय भागीदारी ने आयोजन को मजबूती प्रदान की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय नाहटा, टीपीएफ गौरव संपत नाहटा, एन.जेड. अध्यक्ष राजेश, राष्ट्रीय संयोजक प्रशांत सुराणा सहित विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही। संयोजक विकास मालू आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। राज सिंघवी के सहयोग एवं प्रोत्साहन के लिए भी आभार व्यक्त किया गया।

साहस और नेटवर्किंग का अनूठा संगम

लोगस्स सूत्र अनुष्ठान का भव्य आयोजन

गाँधीनगर- दिल्ली। तेरापंथ भवन, कृष्णानगर, दिल्ली में 'युगप्रधान' आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृतकुमार जी के पावन सान्निध्य में 'लोगस्स सूत्र के अनुष्ठान' का भव्य आयोजन किया गया। श्रावक समाज ने भी उमंग एवं जोश के साथ मुनिश्री के साथ एकाग्रता से अनुष्ठान का भरपूर लाभ लिया। सभा द्वारा आयोजित अनुष्ठान में अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंघवी, मंत्री महेन्द्र श्यामसुखा, विकास मंच के मुख्य ट्रस्टी बिमल कुमार पुगलिया आदि अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की सहभागिता रही। संचालन संयोजक बजरंग रांका ने किया।

'विवेगे धम्म माहिये' ज्ञानवर्धक क्विज़ का आयोजन

चेंबूर।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी निर्वाणश्री जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, चेंबूर द्वारा 'विवेगे धम्म माहिये' विषय पर एक ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन अत्यंत उत्साहपूर्वक किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा ममता कच्छारा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। इस क्वीज़ में कुल 21 बहनों ने भाग लिया। प्रतिभागियों के 4 ग्रुप बनाए गए - मैत्री ग्रुप, प्रमोद ग्रुप, करुणा ग्रुप एवं मध्यस्थ ग्रुप। विभिन्न राउंड के साथ यह क्विज़ संपन्न हुई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित इस कार्यशाला की सराहना करते हुए कहा कि अखिल भारतीय महिला मंडल नए-नए आयाम लेकर प्रस्तुत होती है। यह कार्यशाला बहनों को संयम के प्रति जागरूक करेगी तथा अहिंसा की ओर अग्रसर करेगी। साध्वी डॉ.योगक्षेमप्रभाजी ने भी अखिल भारतीय महिला मंडल के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य केवल जीव हिंसा से बचना ही नहीं है, बल्कि आत्मा को भी जीव हिंसा से बचाना है। दैनिक जीवन में छोटे-छोटे कार्यों से होने वाली हिंसा से बचना चाहिए, जैसे - नल खुला छोड़ना, शावर के नीचे नहाना, जहाँ पानी का अपव्यय होता है। चातुर्मास काल में इन बातों का विशेष ध्यान रखें। कम पानी से भी कार्य चल सकता है। भोजन बनाते समय भी कम से कम जीव हिंसा हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए तो स्वयं का संयम भी होगा।

असीम शक्तियों की कुंजी है - नमस्कार महामंत्र

गदग।

दुनिया में अनेक प्रकार के मंत्र है लेकिन नमस्कार महामंत्र अदभुत, अनुपम एवं असीम शक्तियों की कुंजी है। नमस्कार महामंत्र में प्रोटेक्शन पॉवर यानी सुरक्षा शक्ति है तो सोल्यूशन पावर भी है, समाधान की शक्ति भी है ये उद्गारा गदग तेरापंथ भवन में आयोजित मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में मुनि आलोक कुमारजी ने कहे। इस अवसर पर मुनि हिमकुमारजी ने कहा कि यदि अच्छे भावों के साथ एवं एकाग्रता के साथ हम नमस्कार महामंत्र का जाप करते है तो गति सुधरती है ,आत्मा निर्मल, विशुद्ध होती है। मंत्र दीक्षा के आयोजन मे खासकर गदग, हुब्बल्ली एवं हिरियर के ज्ञानशाला के बालक - बालिकाओं ने पूरे उत्साह से भाग लिया। गदग तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ गदग ज्ञानशाला के द्वारा हुआ। गदग ज्ञानशाला के बालक - बालिकाओं ने नवकार महामंत्र पर अपनी प्रस्तुति ही फिर हुबल्ली से आए हुए बच्चों ने नशामुक्ति का संदेश देने वाली बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति की हिरियर से आए हुए बालक - बालिकाओं एकेन्द्रिय से पचन्द्रिय तक के जीवों का बहुत ही रोचक उदाहरण दिया। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका विमला कोठारी ने बाहर से समागत अतिथियों का सत्कार किया। गदग ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका ने गीत के द्वारा समा बांधा। हुब्बल्ली से समागत प्रशिक्षिकाओं ने शब्द चित्र के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन गदग ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका एवं महिला की अध्यक्ष शोभा संकलेचा ने किया। आभार ज्ञापन सुनीता सालेचा ने किया। इस कार्यक्रम के पश्चात मुनि हिमकुमार जी द्वारा आध्यात्मिक फुटबॉल प्रतियोगिता का भी बहुत ही सफलतापूर्वक आयोजन हुआ।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

भुवनेश्वर। तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर, मारवाड़ी युवा मंच एवं मारवाड़ी सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में आज तेरापंथ भवन, भुवनेश्वर में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं निःशुल्क आयुष्मान भारत कार्ड पंजीकरण शिविर का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। CARE Hospital के सहयोग से आयोजित इस स्वास्थ्य जांच शिविर में Cardiology (हृदय रोग), General Medicine (सामान्य चिकित्सा), Gastroenterology (पाचन रोग), Dental (दंत चिकित्सा) एवं Orthopedics (हड्डी एवं जोड़ रोग) विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परामर्श एवं स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। शिविर के दौरान Height, Weight, BMI, Blood Pressure (BP), Pulse Rate, Random Blood Sugar (RBS), ECG, Eye Screening तथा Fibro Scan जैसी जांचों की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। शिविर में कुल 101 लोगों की निःशुल्क स्वास्थ्य जांच की गई। वहीं आयुष्मान भारत कार्ड पंजीकरण अभियान के अंतर्गत मारवाड़ी सोसायटी एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के 40 सदस्यों का सफल पंजीकरण किया गया। कार्यक्रम में मारवाड़ी सोसायटी एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के अनेक वरिष्ठजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इनमें मनसुख सेठिया, मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष विनीत अग्रवाल एवं तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर के अध्यक्ष जितेन्द्र बैद ने शिविर में सेवाएं प्रदान करने वाले CARE Hospital के चिकित्सकों एवं फैकल्टी सदस्यों का अंगवस्त्र एवं स्मृति-स्वरूप पौधा भेंट कर सम्मान किया।

'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026' का आयोजन

बोईसर। अनुविभा के तत्वावधान में तथा अणुव्रत समिति मुम्बई के निर्देशन में अणुव्रत समिति बोईसर क्षेत्र द्वारा 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026' के अंतर्गत विद्यालय स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता यू. एस. ओस्तवाल इंग्लिश अकादमी एवं बोईसर ज्ञानशाला में आयोजित की गई, जिसमें कुल 25 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में जोन को ऑर्डिनेटर कंचन सोनी आदि का श्रम रहा।

मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन

नोहर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न हुआ। सुशीला बाई बांठिया ने मंत्र दीक्षा के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मंत्र आत्मशुद्धि, आत्मबल एवं आत्मकल्याण का सशक्त माध्यम है। नियमित मंत्र-जाप एवं साधना से जीवन में शांति, सकारात्मकता एवं आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। तेरापंथ युवक परिषद नोहर के अध्यक्ष चन्द्रेश सिपानी आदि उपस्थित रहे।

नशा मुक्तयुवा–विकसित भारत' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन

चिकमंगलूर। अणुव्रत समिति द्वारा नशा मुक्तयुवा – विकसित भारत' विषय पर एक प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम साध्वी पुण्ययशा जी के सानिध्य में हुआ। साध्वी श्री ने कहा युवाओं को आत्मसंयम, नैतिकता और सकारात्मक जीवन मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया, नशा व्यक्ति, परिवार और समाज—तीनों के लिए घातक है। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी की बहन भाग्य लक्ष्मी दीदी भी उपस्थित थी।उन्होंने भी जनमेदनी को नशा मुक्त जीवन के बारे में प्रेरणा दी। इस अवसर पर उपस्थित युवाओं ने नशा मुक्त जीवन जीने का सामूहिक संकल्प लिया। कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का लाइव प्रसारण रहा, जिसे सभी ने उत्साहपूर्वक देखा और उनके विचारों से प्रेरणा प्राप्त की। इस कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की अध्यक्षा मंजू जी भंसाली, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महेंद्र डोषी, युवक परिषद के अध्यक्ष हितेश गादिया, महिला मंडल की अध्यक्षा संतोष बाई, टीपीएफ के अध्यक्ष अभिषेक जी आच्छा की उपस्थिति रही।

MBDD CAR-WA का आगमन समारोह

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् (ABTYP) के राष्ट्रव्यापी अभियान Mega Blood Donation Drive (MBDD) के अंतर्गत 'RAKTDAN KARTVYAM – 2026' के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश से निकाली जा रही विशेष MBDD Car-Wa का तेरापंथ युवक परिषद नागपुर में आगमन हुआ। रायपुर, छत्तीसगढ़ से लाडनूं, राजस्थान तक की इस विशेष यात्रा में MBDD एवं RAKTDAN KARTVYAM – 2026 के संदेश से सुसज्जित चार-सीटर कार विभिन्न परिषदों से होकर गुजर रही है। यह Car-Wa केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि रक्तदान के प्रति जागरूकता, कॉरपोरेट सहभागिता और राष्ट्रसेवा के संकल्प को जोड़ने वाला एक गतिशील जनजागरण अभियान है। MBDD Car-Wa के नागपुर आगमन पर तेरापंथ युवक परिषद्, नागपुर द्वारा MBDD car-wa कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रक्तदान जागरूकता रैली/ कॉरपोरेट संपर्क/ रक्तदान शिविर/ पोस्टर अभियान/ जनसंपर्क अभियान/ अन्य गतिविधि का आयोजन भी किया गया। स्थानीय कॉरपोरेट्स, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, सामाजिक संस्थाओं एवं युवाओं को अभियान से जोड़ने हेतु विशेष जनसंपर्क किया गया। उपस्थित जनसमुदाय को स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व एवं 17 से 23 सितम्बर 2026 तक आयोजित होने वाले RAKTDAN KARTVYAM अभियान में सहभागिता के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में निम्न गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। केंद्रीय मंत्री नितीन गडकरी के निवास स्थान से MBDD car-wa को जैन धव्ज (झंडा) दिखाकर गाड़ी को नागपुर से आगे के सफर के लिए रवाना किया एंव शुभकामनायें प्रेषित की। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष प्रियंक छाजेड ने कहा कि 'MBDD Car-Wa हमारे लिए केवल एक वाहन नहीं, बल्कि सेवा, जागरूकता और राष्ट्रव्यापी सहभागिता का चलता-फिरता संदेश है।

हमारी परिषद् RAKTDAN KARTVYAM – 2026 को सफल बनाने हेतु अधिकाधिक संस्थाओं एवं रक्तदाताओं को जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है।'

अनुशासित स्वतंत्रता ही सच्ची स्वतंत्रता है

80वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

सिकंदराबाद।

डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी ठाणा-2 के सान्निध्य में '80वें स्वतंत्रता दिवस' का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा सिकंदराबाद द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमारजी ने कहा— हर मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है। आज के युग में उसकी मांग और अधिक बढ़ गई है, किंतु स्वतंत्रता की सच्ची कुंजी संयम के द्वारा प्राप्त होती है। उसके बिना वह वरदान नहीं, अभिशाप साबित होता है। स्वतंत्रता का अर्थ अनुशासनहीनता समझना भूल है। जिस समाज और राष्ट्र के सदस्य मर्यादित और अनुशासित होते हैं, स्वतंत्रता की लक्ष्मी का वहाँ स्थायी निवास होता है। जहाँ कर्तव्यविमुखता और मर्यादाहीनता बढ़ती है, वहाँ सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है और आगे जाकर परतंत्रता का प्रभाव बढ़ता है।अनुशासनयुक्त स्वतंत्रता हो। मुनिश्री ने आगे कहा— सामाजिक जीवन में संयम, विशेषकर बहुत जरूरी है। ज्यों-ज्यों संयम और अनुशासन की प्रतिष्ठा होगी, मानव के चरण स्वतंत्रता की सही दिशा की ओर बढ़ेंगे। स्वतंत्रता का वह रूप एक व्यक्ति के लिए ही नहीं, सारे विश्व के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा। मुनिश्री काव्य कुमारजी ने कहा आज का यह दिन केवल ध्वज लहर का, राष्ट्रगान गाने का, सिर्फ यह बात याद करने का की 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ था अपितु उन बलिदानी वीरों को याद करने का दिन है ।

अहिंसक और नैतिक मूल्यों से ही आजादी अर्थपूर्ण बनती है

अणुव्रत और राष्ट्रनिर्माण विषय पर स्वर्णिम भारत काव्योत्सव का आयोजन

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'अणुव्रत एवं राष्ट्र निर्माण' विषय पर स्वर्णिम भारत काव्योत्सव का आयोजन ट्रिप्लिकेन स्थित तेरापंथ भवन में हुआ। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, ट्रिप्लिकेन की सहभागिता में यह काव्योत्सव हुआ। सान्निध्य प्रदाता अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ. पुलकितकुमार ने अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी के कथन 'असली आजादी पाओ' के संदर्भ से कहा कि अहिंसक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा से आजादी अर्थपूर्ण बन जाती है। अणुव्रत स्वतंत्रता से स्वच्छंद घुमना नहीं, अपितु संयम से जीवन जीना सिखाता हैं। अणुव्रत को अपनाकर हम स्वर्णिम भारत को आगे बढ़ाने में सहभागी बन सकते हैं। कवि नचिकेता मुनि आदित्यकुमार ने अपनी काव्य प्रस्तुति के साथ कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में कवि और कविता का क्रांतिकारी योगदान रहा था। समिति अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने स्वागत भाषण में जीवन में अणुव्रतों के पालन करने और करवाने की प्रेरणा दी। उपाध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग ने काव्यात्मक संयोजन करते हुए कहा, 'वतन के चमन में अमन के सुमन खिलाओ।' मार्गदर्शक गौतमचंद सेठिया ने कहा कि वे चेन्नई में पले-बढ़े, किंतु आचार्य महाप्रज्ञ का हिंदी साहित्य पढ़ने से उनकी हिंदी इतनी अच्छी हो गई कि उत्तर भारतीय हिंदी भाषी भी चकित हो जाते हैं। मंत्री कुशल बांठिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष स्वरूपचन्द दाँती, सहमंत्री प्रदीप चोरड़िया, अणुव्रत-सेवी संपतराज चोरड़िया आदि उपस्थित थे।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

❖ बड़ों के प्रति सम्मान का भाव रखना विनय है। समुचित रूप में सबके प्रति विनय का भाव रखना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

भक्तामर स्तोत्र आधि-व्याधि से मुक्त कर समाधि देने वाला है

जसोल।

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी कुंदनप्रभा जी के पावन सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद व तेरापंथ किशोर मंडल जसोल के तत्वावधान में भक्तामर स्त्रोत्र का अनुष्ठान रखा गया। साध्वी विद्युतप्रभा जी ने कहा भक्तामर स्त्रोत्र एक ऐसा स्त्रोत्र है जो विश्व के सभी जैनियों कंठाभरण बना है, उन्होंने भक्तामर के उद्‌ग्रस्त का परिचय बहुत ही रोमांचकारी व हृदयग्राही रूप से बताया। इससे पूर्व साध्वी कुंदनप्रभा जी ने कहा- भारतीय परंपरा में अपने ईष्ट की पूजा आराधना, उपासना की परिपाटी रही है। कंही स्तुति के रूप में, कंही जाप के रूप में, कंही स्त्रोत्र के रूप में की है। भक्तामर स्त्रोत्र एक ऐसा स्त्रोत्र है जो आधिव्याधि और उपाधि से निजात दिलाकर समाधि को देने वाला है।उन्होंने सहज, सरल व रोचक उदाहरणों से सबको रोमांचित कर दिया। साध्वी किरणयशा जी व साध्वी चारित्रप्रभा जी द्वारा दसों - दिशाओं का कवज बनाकर मंत्र, ऋद्धि मंत्र सहित भक्तामर का संगान कराया गया। तेयुप जसोल अध्यक्ष भरत बोकड़िया, मंत्री तरुण भंसाली व कोषाध्यक्ष मनीष संकलेचा का विशेष सहयोग मिला।

भक्तामर स्त्रोत्र अनुष्ठान का आयोजन

पृष्ठ 1 का शेष

भौतिकता से बढ़ेंगी...

इससे भूला हुआ ज्ञान पुनः याद आ जाता है और स्मृतिगत ज्ञान और अधिक पुष्ट व सुदृढ़ बनता है।

३. शीतकालीन ५०० गाथा चितारने का संकल्प : आचार्यश्री ने प्रेरणा दी कि मंडली रूप में बैठकर चितारना और भी उपयोगी होता है। प्रवचन के अंत में पूज्य प्रवर ने साधु-साध्वियों, समणियों तथा मुमुक्षुओं को शीतकाल के चार महीनों (मार्गशीर्ष से फाल्गुन) में प्रतिदिन ५०० गाथाएँ चितारने का पावन संकल्प ग्रहण कराया।

दो मुमुक्षुओं की दीक्षा की मंगल घोषणा से गूँजा पांडाल :

१. दीक्षा की पावन तिथिः मंगल प्रवचन के उपरांत मुमुक्षु जहान बेताला एवं मुमुक्षु दिव्या ने आचार्यश्री के चरणों में संयम पथ पर बढ़ने हेतु दीक्षा की प्रार्थना की।

२. १८ जनवरी २०२७ का ऐतिहासिक दिन : पूज्य आचार्यश्री ने दोनों मुमुक्षुओं को पौष शुक्ला दशमी, वि.सं. २०८३ (१८ जनवरी २०२७) को जैन विश्व भारती प्रांगण, लाडनूं में मुनि/साध्वी दीक्षा प्रदान करने की पावन घोषणा की। इस घोषणा के होते ही संपूर्ण प्रवचन पांडाल जयघोष से गूँज उठा। मुमुक्षु जहान के पिता प्रवीण बेताला ने भी इस अवसर पर अपनी भावुक अभिव्यक्ति दी।

ज्ञानशाला दिवस : संस्कार निर्माण और डिजिटल युग में संतुलन :

१. ज्ञानार्थियों की प्रस्तुतियाँ व विचार : ज्ञानशाला दिवस के उपलक्ष्य में लाडनूं, राजलदेसर, छापर, बीदासर, छोटी खाटू व कालू ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम में योगक्षेम प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रमोद बैद एवं सुजानगढ़ ज्ञानशाला के संयोजक श्री संजय बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

२. मोबाइल और आध्यात्मिकता का संतुलन : आचार्यश्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया कि भाद्रपद के प्रथम रविवार को आयोजित होने वाली ज्ञानशाला बच्चों में संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम है। आज के डिजिटल युग में बच्चों में मोबाइल, तकनीक और सोशल मीडिया के साथ-साथ आध्यात्मिकता का संतुलन होना परम आवश्यक है। केवल भौतिकता से समाज में अनेक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं, जबकि ज्ञानशाला से बच्चों का नैतिक व आध्यात्मिक विकास होता है।

श्रुत की आराधना...

वाचना देने वाला तीर्थ धर्म (प्रवचन) का अवलंबन लेता है और गणधरों तथा आचार्यों की शास्त्रीय श्रुत-परंपरा को अविच्छिन्न बनाए रखने में योगदान देता है।

तेरापंथ की व्यवस्था, ४ योग व सेवा भावना :

१. एक आचार्य में सन्निहित पद : धर्मसंघ में अध्ययन करने वाले साधु-साध्वी योग्य और बहुश्रुत बनते हैं। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि यद्यपि तेरापंथ धर्मसंघ में उपाध्याय आदि अलग पदों की व्यवस्था नहीं है और सभी पद एक आचार्य में ही सन्निहित हैं, फिर भी ज्ञान-साधना का क्रम निरंतर गतिमान रहता है।

२. युवा साधु-साध्वियों को सेवा की प्रेरणा : आचार्यश्री ने पुनः चार योगों (स्वाध्याय, सेवा, तप, ध्यान-जप) की चर्चा करते हुए फरमाया कि जिनकी आयु कम है और क्षमता है, उन्हें औपचारिक चाकरी के अलावा आवश्यकता पड़ने पर स्वयं को अनौपचारिक सेवा कार्यों में नियोजित करना चाहिए।

साध्वी प्रमुखा श्री जी के विचार : साध्वी प्रमुखा जी ने कहा कि योगक्षेम वर्ष में अध्ययन-अध्यापन का उत्कृष्ट क्रम चल रहा है। साध्वियों में गहरा सेवा-भाव और निर्जरार्थता है, उन्होंने तपस्या के दौरान बिना कहे समर्पित भाव से सेवाएं दी हैं।

मोक्ष-समाधि का लक्ष्य और रक्षाबंधन का पावन संदेश :

१. समाधि व मोक्ष की प्राप्तिः वाचना करने वाला और श्रुत परंपरा को आगे बढ़ाने वाला साधक महा-निर्जरा अर्जित कर मोक्ष प्राप्त करता है अथवा अंत समय में समाधि-मरण को प्राप्त होता है।

२. रक्षाबंधन पर आत्म-रक्षा का संदेश : रक्षाबंधन पर्व के संदर्भ में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि यह भाई-बहन का त्यौहार है, लेकिन इसका मुख्य सार रक्षा है। हमें अपनी आत्मा को बुराइयों और पाप कर्मों के बंधन से बचाना चाहिए। आत्मा को पापों से बचाना ही सबसे बड़ी रक्षा है।

पृष्ठ 2 का शेष

मन सुमन रहे...

मन की साधना अच्छी व सुचारू रहे, यह अभिकांक्ष्य है।

अनुशासन पर्व (हाजरी) और सामूहिक लेखपत्र उच्चारणः

१. चारित्रात्माओं को प्रेरणा : आज चतुर्दशी के संदर्भ में पूज्य आचार्यश्री ने सभी चारित्रात्माओं को आचार-पालने व संयम संवर्धन हेतु विविध प्रेरणाएं प्रदान कीं।

२. लेखपत्र उच्चारणः पूज्य आचार्य श्री की अनुज्ञा से बाल साध्वी पद्म प्रभा जी व साध्वी चंदन प्रभा जी ने सामूहिक लेखपत्र का उच्चारण किया।

बोलती किताब

आधी दुनिया

सशक्त नारी ही सशक्त परिवार, समाज और राष्ट्र की आधारशिला है।

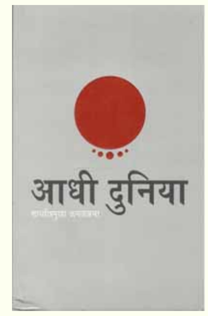

आधी दुनिया केवल महिलाओं पर लिखी गई पुस्तक नहीं, बल्कि नारी की शक्ति, संवेदना, कर्तृत्व और व्यक्तित्व का प्रेरणादायक दस्तावेज़ है। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने इस कृति में नारी के विविध रूपों का अत्यंत सहज और प्रभावशाली चित्रण किया है। पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि नारी केवल परिवार का संचालन ही नहीं करती, बल्कि समाज, संस्कृति और राष्ट्र के निर्माण में भी समान रूप से योगदान देती है। लेखिका ने नारी को दया, ममता और त्याग की प्रतिमूर्ति भर नहीं माना, बल्कि उसे आत्मविश्वासी, शिक्षित, जागरूक और निर्णय लेने में सक्षम व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। पुस्तक में शिक्षा, आत्मसम्मान, नेतृत्व, संस्कार, परिवार, सुरक्षा तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों पर गंभीर और प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

इस कृति में यह संदेश दिया गया है कि महिला सशक्तिकरण केवल अधिकार प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मविकास, नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सकारात्मक सोच के माध्यम से स्वयं को सक्षम बनाने की प्रक्रिया है। जब नारी अपनी शक्ति को पहचानती है, तब वह परिवार ही नहीं, पूरे समाज के विकास की प्रेरक शक्ति बन जाती है।

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में आधी दुनिया महिलाओं और पुरुषों—दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी ग्रंथ है। यह पुस्तक समानता, सम्मान, सहयोग और मानवीय मूल्यों की स्थापना का संदेश देती है तथा एक ऐसे समाज की कल्पना प्रस्तुत करती है, जहाँ नारी को उसके कर्तृत्व, ज्ञान और व्यक्तित्व के आधार पर सम्मान प्राप्त हो।

आज आवश्यकता केवल महिलाओं को अवसर देने की नहीं, बल्कि उनके प्रति सम्मान, विश्वास और समानता की भावना विकसित करने की है। आधी दुनिया इसी सोच को सशक्त स्वर प्रदान करती है और यह संदेश देती है कि जब नारी शिक्षित, संस्कारित और आत्मनिर्भर बनेगी, तभी परिवार, समाज और राष्ट्र का समग्र विकास संभव होगा।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

सेवा, सद्भावना और मुस्कानों से सजा स्वतंत्रता दिवस

मदुरै।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित 'उपनिषद-2' कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथ कन्या मंडल, मदुरै द्वारा साईं ट्रस्ट, मदुरै स्थित वृद्धाश्रम में वरिष्ठजनों के साथ गेम्स, संवाद एवं सद्भावना कार्यक्रम का भावपूर्ण आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में कन्या मंडल की केट्टी चोपड़ा, अविका चोपड़ा, पलक संकलेचा एवं तनु लोढ़ा तथा प्रभारी लता कोठारी ने सहभागिता निभाई। महिला मंडल की ओर से चंदा कोठारी एवं शांति कोठारी उपस्थित रहीं। यह आयोजन केवल सेवा कार्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वरिष्ठजनों को करीब से समझने, उनकी भावनाओं को जानने और उनके साथ खुशियां बांटने का एक सुंदर एवं प्रेरणादायक अवसर बना। वरिष्ठजनों की मुस्कान, आत्मीयता और आशीर्वाद ने 'उपनिषद-2' के इस आयोजन को सभी के लिए अविस्मरणीय बना दिया। उक्त जानकारी कन्या मंडल प्रभारी लता कोठारी, कन्या मंडल संयोजिका केट्टी चोपड़ा एवं सह-संयोजिका पलक संकलेचा ने संयुक्त रूप से दी।

जीवन की हर भोर सुहानी, नई रोशनी लाए।
सांझ सुरमई नित संयम के, नूतन चांद उगाए॥

: श्रद्धाप्रणत :

संम्पतमल, अशोककुमार, रणजीत, श्रेयांश
संदीप, चिराग, ऋषभ, शिवांग डागा
सरदारशहर-कोलकाता-मदुरै

गुरुवर महाश्रमण कृपा से, किया है शिखर पर आरोहण।
उपहार संघ को दिया प्रभु ने, जय हो, जय हो महाश्रमण ॥

: श्रद्धाप्रणत :

ARBELL
PVC INSULATED WIRES AND CABLES

'श्रद्धा की प्रतिमुर्ति' स्व. श्रीमती शांतादेवी
एवं स्व. रोशनलालजी की स्मृति में
उत्तमचंद, अशोककुमार, महेंद्रकुमार, चंद्रप्रकाश,
मून, चिन्मय बोहरा परिवार (आमेट-उधना)

कोटि कोटि अभिवंदन

महक उठा श्रद्धा का अंबर, गूंज उठा जयघोष नया।
शासन नंदनवन सा महका, उदित हुआ विश्वास नया।।

: श्रद्धाप्रणत :

'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' स्व. बादामबाई स्व. प्यारचंदजी टेबा की स्मृति में
शांतिलाल, नवरतनमल, कैलाश टेबा
एवं समस्त टेबा परिवार, नवसारी (बेमाली)

UDAY PALACE
NAVSARI

MEMBER OF
RADISSON
Individuals.

स्वस्तिक ग्रुप, नवसारी | उदय पैलेस, नवसारी

सरल भाव से मांगो प्रायश्चित्त, निर्मल बनेगा सम्यक्त्व और चित्त : आचार्यश्री महाश्रमण

'प्रायश्चित्त से क्या मिलेगा?' पर पूज्य प्रवर का आगमिक बोध; 'निशीथ' आगम के हवाले से बताई दोष विशुद्धि की विधि

लाडनूं।
24 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर में 'प्रायश्चित्त से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन अमृत देशना प्रदान की।

'निशीथ' आगम, मर्यादावली और प्रायश्चित्त का विधान :

१. प्रायश्चित्त संहिता का आगम : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि धार्मिक साधना के साथ प्रायश्चित्त की विद्या अभिन्न रूप से जुड़ी है। जिस प्रकार आचार का विधान है, उसी प्रकार उसके उल्लंघन पर प्रायश्चित्त का भी प्रावधान है। ३ वर्ष की साधु पर्याय पूर्ण होने पर 'निशीथ' आगम पढ़ाया जाता है, जो साधुओं के लिए प्रायश्चित्त संहिता की तरह है।

> गुरु के सामने ऋजुता और सरलता से दोष स्वीकार कर लेना ही आत्मा की विशुद्धि का पहला कदम है
> —आचार्यश्री महाश्रमण

२. दोषों की आलोयना : मर्यादावली में आचार के साथ-साथ अतिक्रमण होने पर प्रायश्चित्त की विधि दी गई है। बड़े दोषों का प्रायश्चित्त आचार्य या बड़े संतों से तथा छोटे दोषों की आलोयना अग्रणी संतों के समक्ष ली जाती है।

प्रायश्चित्त का अर्थ और निष्पादन के ३ चरण :

१. तप और चेतना का संयोग : 'प्राय' का अर्थ है 'तप' और 'चित्त' का अर्थ है 'जीव या चेतना'। तप और चेतना का यह योग ही आत्मा को पाप कर्मों से मुक्त कर निरतिचार (निर्दोष) बनाता है।

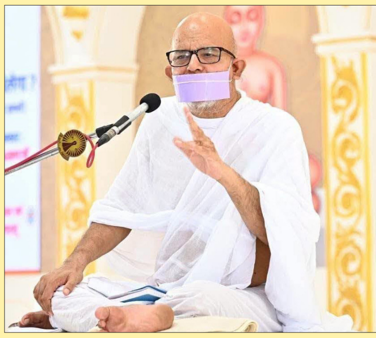

२. प्रायश्चित्त प्रक्रिया के ३ अनिवार्य चरण :

अ. ऋजुता (सरलता) : गुरु के समक्ष बिना किसी दुराव-छिपाव के अपनी त्रुटि को निष्कपट भाव से प्रकट करना।

ब. स्वीकारोक्ति : प्रायश्चित्तदाता गुरु द्वारा दिए गए तप या दंड को सहर्ष स्वीकार करना।

क. क्रियान्विति : बताए गए प्रायश्चित्त का पूर्ण निष्ठा से पालन करना।

मोक्ष मार्ग और मार्ग-फल की विशुद्धि:

१. आराधक बनने की कुंजी : शास्त्रानुसार जो सम्यक प्रकार से प्रायश्चित्त स्वीकार करता है, वह मोक्ष मार्ग (ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप) तथा उसके फल को विशुद्ध कर लेता है। यदि दोष की आलोचना समय पर न ली जाए, तो आगे का आध्यात्मिक पथ धुंधला हो जाता है।

२. गृहस्थों व साधकों के लिए पावन पाथेय : साधु हो या श्रावक, नियम या व्रत में दोष लगते ही समय पर प्रायश्चित्त मांगकर निर्वहन करना चाहिए। इससे कषायों की मंदता होती है, सम्यक्त्व निर्मल बनता है और साधक विराधक न बनकर मोक्ष का आराधक बन जाता है।

दोषों का 'फुल बॉडी स्कैन' : जब गुरु बने आत्मा के डॉक्टर...

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रायश्चित की प्रक्रिया को एक रोगी के उपचार के उदाहरण से समझाया है, जिसे तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया गया।

1. आलोचन (निवेदन) : जैसे रोगी अपनी बीमारी को डॉक्टर को सच-सच बताता है, वैसे ही साधक को अपने दोषों को गुरु के सामने सरलता (ऋजुता) से प्रकट करना चाहिए।

2. स्वीकार्यता : जैसे डॉक्टर द्वारा बताई गई जाँचों (एक्स-रे, एमआरआई आदि) और दवा को रोगी स्वीकार करता है, वैसे ही गुरु द्वारा निर्दिष्ट प्रायश्चित या तप को साधक को बिना संकोच स्वीकार करना चाहिए।

3. क्रियान्वयन : जैसे रोगी डॉक्टर द्वारा बताए गए कोर्स का पालन करता है, वैसे ही साधक को प्रायश्चित के रूप में मिले तप या स्वाध्याय को निष्ठापूर्वक पूरा करना चाहिए।

मुख्य अनुशीलन : जिस प्रकार औषध-सेवन से शरीर निरोगी होता है, उसी प्रकार निष्छल आलोचना, गुरु-निर्देश की स्वीकार्यता और तप के क्रियान्वयन से आत्मा पवित्र एवं निष्कलंक हो जाती है।

पूज्य प्रवर ने दी पावन प्रेरणा: 'विवाद कोर्ट-कचहरी में नहीं, आपस में बैठकर सुलझाएं'

अपनी भूल स्वीकारो, क्षमा से जीवन संवारो : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री की देशना; पर्युषण पर्व में सामायिक, जप और स्वाध्याय में समय बिताने का दिया संदेश

लाडनूं।
25 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को 'क्षमा से क्या मिलेगा?' विषय पर अमृत देशना प्रदान की।

पर्युषण-संवत्सरी का आह्वान और निंदा का उत्तर :

१. पर्युषण पर्व की साधना : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि १० श्रमण धर्मों में उत्तम क्षमा एक धर्म है। ८ सितम्बर से पर्युषण पर्व प्रारंभ हो रहा है और १५ सितम्बर को भगवती संवत्सरी का आगमन है। इन आठ दिनों में गृहस्थ सामायिक, स्वाध्याय, जप, मौन, ध्यान, अनुप्रेक्षा और प्रतिक्रमण में अधिक से अधिक समय बिताएं। संवत्सरी पर सभी से खमतखामणा कर लेना चाहिए।

२. निंदा का उत्तर कर्मों से : यदि कोई नुकसान करे, अपशब्द बोले या निंदा करे तो सहन करें। निंदा का उत्तर जुबान या लेखनी से देने के बजाय हमेशा अपने अच्छे कार्यों से देना चाहिए। हमारी दिशा और गति ठीक हो तो आज निंदा करने वाला व्यक्ति भी कल प्रशंसा करने वाला बन सकता है।

> निंदा का उत्तर जुबान या लेखनी से देने के बजाय हमेशा अपने अच्छे कार्यों से देना चाहिए
> –आचार्यश्री महाश्रमण

क्षमा के ४ फल, बड़ों का विनय और विवाद निवारण :

१. भूल स्वीकारना और सहनशीलता : कोई गलती या कटु व्यवहार हो जाए तो सरल भाव से भूल स्वीकार कर पश्चाताप करें और खमतखामणा करें। क्षमावान व्यक्ति के मन में शांति रहने से बोलने वाला व्यक्ति भी उसी प्रकार शांत हो जाता है, जैसे सूखे मिट्टी वाले मैदान पर गिरी आग अपने आप बुझ जाती है।

२. सक्षमता में शांति और बड़ों का विनय : सामर्थ्य होने पर भी शांत रहना बड़प्पन है। साधु जीवन में छोटे साधु रत्नाधिकों का विनय करें। इसी प्रकार लौकिक जीवन में भी गृहस्थों को माता-पिता व बड़ों के सामने उद्दंडता नहीं करनी चाहिए। परिवार में संपत्ति या बंटवारे का प्रसंग आने पर कोर्ट-कचहरी जाने के बजाय आपस में बैठकर समाधान कर लेना चाहिए।

३. क्षमा से ४ महान उपलब्धियां: आगम के अनुसार खमतखामणा से बैर समाप्त होता है और जीव १. प्रसन्नता (प्रह्लाद भाव), २. सर्व जीव मैत्री, ३. भाव-विशोधि और ४. निर्भयता (अभय) प्राप्त कर लेता है।

युवाचार्य पद का एक मास : हो गुरुवर! महर करी...

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार युवाचार्य श्री ने अपने हृदय के उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने पूज्य प्रवर को **'कल्पवृक्ष'**, **'चिंतामणि'** और **'पारस'** से भी उच्च स्थान देते हुए कहा कि गुरुदेव के पावन स्पर्श एवं अहैतुकी कृपा से एक साधारण शिष्य का जीवन भी निखरकर अलौकिक हो जाता है। गुरुदेव का वात्सल्य इन लौकिक प्रतीकों से परे है। वे बिना मांगे ही अपने शिष्यों को आत्मिक संपदा से समृद्ध कर देते हैं।

युवाचार्य श्री ने अपने भाव पंक्तियों में प्रस्तुत किए:

हो गुरुवर! महर करी,
मन पांच रतन दे मारी खोल भरी।
गुरुवर महर करी...
दीपक हूं प्रारंभ काल में, प्रभु भावना भाऊं रे,
कर तो जाऊं मैं विकास, सूरज बन जाऊं रे।
हो गुरुवर महर करी...

युवाचार्य दायित्व की स्वीकृति: 'सर्व सिद्ध त्रयोदशी' (आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी) के मंगल दिन पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदान किए गए दायित्व का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि गुरुदेव उनकी दिनचर्या, आहार-विहार एवं प्रत्येक निर्णय का स्वयं ध्यान रखते हैं, जिससे वे पूर्णतः निश्चिंत होकर साधना पथ पर अग्रसर हैं।

दीक्षा एवं प्रतिक्रमण के भावुक संस्मरण: जोधपुर में पहली बार प्रतिक्रमण का आदेश माँगने की घटना को याद करते हुए उन्होंने गुरुदेव की त्वरित स्वीकृति और दीक्षा के समय माता-पिता की भावना को सहज बनाने वाले गुरुदेव के संबल का भावुकता से उल्लेख किया।

गुरुदेव का वात्सल्य एवं संबल: एक संस्मरण साझा करते हुए उन्होंने बताया कि वाव में सेवाकाल के दौरान थकानवश झपकी आने पर भी गुरुदेव ने जगाने के बजाय स्नेहपूर्वक निर्देश दिया।

युवाचार्य श्री ने अंत में पुनः स्वीकार किया कि उनका संपूर्ण जीवन एवं साधना पूज्य गुरुदेव के अमूल्य मार्गदर्शन और असीम कृपा का ही प्रतिफल है।

पुज्य प्रवर ने 'अनुप्रेक्षा से क्या मिलेगा' विषय पर प्रदान किया पावन पाथेय

राजा, राणा, छत्रपति, हाथी के असवार... मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
31 अगस्त, 2026

जन-जन की आस्था के केंद्र, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सुधर्मा सभा में उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को स्वाध्याय के चौथे अंग 'अनुप्रेक्षा से क्या मिलेगा?' विषय पर अमृत देशना प्रदान की।

स्वाध्याय की श्रृंखला में अनुप्रेक्षा का स्थान व अचिंतन की गति:

१. स्वाध्याय के चरण : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि स्वाध्याय के पाँच अंगों में चौथा अंग 'अनुप्रेक्षा' है। सर्वप्रथम वाचना प्राप्त होती है, जहाँ ज्ञान देने वाला तत्त्व बोध प्रदान करता है। ज्ञान में जिज्ञासा होने पर प्रतिपृच्छना की जाती है, और प्राप्त ज्ञान का पुनरावर्तन करना परिवर्तना कहलाता है। इसके उपरांत चौथा अंग अनुप्रेक्षा आता है।

२. चिंतन से अचिंतन की ओर: अनुप्रेक्षा का अर्थ है— चिंतन, तत्त्व चिंतन और अर्थ चिंतन। चिंतन तो साधना की एक स्थूल स्थिति है, उससे भी आगे साधक को चिंतन से अचिंतन की ओर गति करनी चाहिए। चिंतन से अचिंतन की ओर, शब्द से अशब्द की ओर, और तर्क से अतर्क की ओर गति हो जाना साधना की उच्च स्थिति होती है। चिंतन में गहराई और एकाग्रता लाने के लिए अचिंतन की भी बड़ी उपयोगिता होती है।

> यह शरीर और बाह्य संयोग अनित्य हैं, केवल ज्ञान-दर्शन युक्त आत्मा ही शाश्वत है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

३. अनित्य अनुप्रेक्षा और वैराग्य: प्रेक्षाध्यान पद्धति में भी अनित्य अनुप्रेक्षा, अभय की अनुप्रेक्षा और सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा जैसे प्रयोग किए जाते हैं। अनित्यता का बोध कराने वाली अनेक गीतिकाएँ शास्त्र में वर्णित हैं। इन गीतिकाओं के संगान से जब मन में अनित्यता का भाव स्फुरित होता है, तो साधक के भीतर वैराग्य की पावन चेतना जागृत हो उठती है।

अनुप्रेक्षा से जीव को प्राप्त होने वाले ६ महान आगमिक लाभ :

शास्त्र में पूछे गए प्रश्न 'अनुप्रेक्षा से जीव क्या प्राप्त करता है?' का उत्तर देते हुए पूज्य प्रवर ने इसके ६ मुख्य लाभों का विस्तार से विवेचन किया।

१. कर्म बंधनों की शिथिलता : अनुप्रेक्षा के प्रभाव से जीव के आयुष्य कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों के गाढ़ बंधन शिथिल पड़ जाते हैं।

२. दीर्घकालीन स्थिति का क्षय : कर्मों की जो बहुत लंबी काल-स्थिति बंधी हुई होती है, अनुप्रेक्षा द्वारा वह स्थिति घट जाती है।

३. रस का मंद होना : कर्मों का जो फल या विपाक अत्यंत तीव्र रूप में आने वाला था, अनुप्रेक्षा के प्रभाव से वह मंद विपाक में परिवर्तित हो जाता है।

४. प्रदेशों का रूपान्तरण : कर्मों के बहु-प्रदेशों (अधिक कर्म परमाणु) का अल्प-प्रदेशों में रूपान्तरण हो जाता है।

५. असातवेदनीय कर्म से बचाव (करुणा की चेतना) : आयुष्य कर्म कभी बंधता है और कभी नहीं बंधता, किंतु अनुप्रेक्षा करने वाला जीव अनित्यता का चिंतन करता है कि यह शरीर, संबंध और बाहरी संयोग सब अनित्य हैं; केवल मेरी आत्मा शाश्वत है जो ज्ञान-दर्शन युक्त है। बाह्य भावों का वियोग निश्चित जानकर उसके भीतर करुणा व अनुकंपा की चेतना जाग जाती है। अनुकंपा से युक्त व्यक्ति किसी जीव को कष्ट नहीं देता, जिससे वह कई पापों से बच जाता है।

६. संसार-कान्तार का अतिक्रमण (मोक्ष प्राप्ति) : अनुप्रेक्षा करने वाला साधक इस चार गतियों वाले भयानक संसार रूपी अरण्य (जंगल) को शीघ्र ही पार कर जाता है और मोक्ष की परम गति को प्राप्त कर लेता है।

एक ऐसा घाट, जहाँ राजा और रंक दोनों का अहंकार चूर हो जाता है...

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जीवन की नश्वरता और अनित्यता का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है:

स्वर्ण भस्म के खाने वाले इसी घाट पर आए...
दाने बीन चबाने वाले इसी घाट पर आए।।
गगन ध्वजा फहराने वाले इसी घाट पर आए...
बिना कफन मर जाने वाले इसी घाट पर आए।।

1. समान अंतिम गंतव्य : चाहे स्वर्ण भस्म खाने वाले अमीर हों या सूखे दाने चबाने वाले निर्धन, गगनचुंबी ध्वजा फहराने वाले शक्तिशाली राजा हों या बिना कफन जाने वाले दरिद्र—मृत्यु के सामने सब समान हैं और सबका अंतिम गंतव्य एक ही 'घाट' है।

2. संयोग और वियोग का नियम : संसार की समस्त बाहरी वस्तुएं और स्थितियां 'संयोग लक्षण' वाली हैं। आज जो हमारे पास है,उसका वियोग होना अटल है। केवल आत्मा ही शाश्वत, अजर-अमर और ज्ञान-दर्शन युक्त है।

3. अहंकार का त्याग : सत्ता, पद, धन और प्रतिष्ठा अनित्य (नश्वर) हैं। इन क्षणभंगुर भौतिक चीजों पर अहंकार करना व्यर्थ है।

4. वैराग्य और धर्म की प्रेरणा : जीवन का यह सत्य व्यक्ति को अहंकार छोड़कर धार्मिकता, सरलता और वैराग्य की भावना अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

आगम के पन्नों में छिपा वो अनमोल रत्न!...

जयाचार्यजी बालावस्था से ही उत्तराध्ययन आगम का रात-रात भर गहन स्वाध्याय करते थे।

विचार-रत्न की प्राप्ति: स्वाध्याय के दौरान वे प्रसन्न होकर अपने युवाचार्य मघवा जी से कहते— **'मघ जी, आज तो उत्तराध्ययन में एक नया विचार-रत्न मिला है।'**

प्रज्ञा रुपी टॉर्च: आचार्यश्री महाश्रमण जी के अनुसार, जैसे अंधेरे कमरे में टॉर्च जलते ही छिपी कीमती चीज़ें दिखने लगती हैं, ठीक वैसे ही जयाचार्यजी की प्रज्ञा से आगम के गूढ़ अर्थ और विचार-रत्न प्रकट हो जाते थे।

ज्ञानशाला दिवस कार्यकम चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।